9381 9381

ड़ियों में करना पड़ेगा; जोंकों, मुफ्तखोरों और नपुंसकों
उत्पत्ति का रास्ता बन्द करना होगा, और हानिकारक
लिपत आचार सम्बन्धी नियमों को मिटा कर हिन्दू जाति
बलशाली बनाने के नये मार्ग निकालने होंगे। यही
हीं, बल्कि राष्ट्रीयता के नये धर्म से हिन्दू बच्चों को दीक्षित
रना पड़ेगा। सदाचार के प्रचलित रस्मो रिवाज ही केवल
मारा उज्ज्वल भविष्य बनाने में सहायक नहीं हो सकते,
में वर्तमान युग के अनुसार नये शास्त्र और स्मृतियां
नानी होंगी क्योंकि—

"The claim of the race
is the claim of religion."

अर्थात् जाति का स्वत्वाधिकार धर्म की आज्ञा है। मेरा
गठन का बिगुल भारत के तेईस करोड़ हिन्दुओं को साव-
ान करता है और उन्हें कहता है कि वे प्राचीन आर्यजाति
स्वत्वाधिकारों को मौजूदा बिरादरियों की क्षुद्र बातों के
लए बलिदान नहीं कर सकते। आज झूठे वर्णाश्रम धर्म
ी डींग हांकने का समय नहीं रहा, आज हिन्दू जाति के अंग
पंगों को एक दूसरे के साथ मिलाने और सुगठित करने का
मय है। आज धीमी चाल से चलने का समय नहीं, मेरा
गुल हिन्दू समाज में क्रांति की घोषणा करता है।

और सुनिये। मेरा बिगुल क्या कहता है? पूर्व और
श्चिमकी ओर अन्तर-राष्ट्रीय प्रश्न शीघ्रही गम्भीर स्वरूप धारण

पं० आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति स्मृति संग्रह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करनेवाले हैं। मुसलमान लोग उसी गम्भीर स्थिति का लाभ उठाने के लिये संगठित हो रहे हैं और उसी के लिये उन्हों ने हर बुरे भले उपाय से अपनी संख्या बढ़ाने का आयोजन बड़े ज़ोर शोर से प्रारम्भ किया है। उनकी यह धारणा है कि योरुप अथवा एशिया में गम्भीर अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति होने पर वे हिन्दुस्तान में, अफ़ग़ानिस्तान की सहायता से, मुस्लिम राज्य स्थापित कर सकेंगे। अफ़ग़ानिस्तान को उस सहायता के बदले में वे सरहदी इलाक़ा और सिन्ध देने का विचार करते हैं, क्योंकि अफ़ग़ानिस्तान को कराची बन्दरगाह की अत्यन्त आवश्यकता है। हम अपने पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान का सर्वदा कल्याण चाहते हैं और उसे सत् परामर्श देते हैं कि वह फारिस की खाड़ी में अपने लिये उपयुक्त बन्दरगाह ले ले। भारतवर्ष पेशावर से आसाम तक और हिमालय से रासकुमारी तक, एक अभिन्न और अविछिन्न देश रहेगा। ऐसे मुसलमान जो अफ़ग़ानिस्तान को झूठी आशायें दिलाकर सौदा कर रहे हैं वे शेख़चिल्ली हैं, और देशद्रोही हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुत शीघ्र—कुछ वर्षों के भीतर ही अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बड़ी गम्भीर होनेवाली है। योरुप और एशिया में ब्रिटिश साम्राज्य के शत्रु अधिक खड़े हो गये हैं और वे शायद अवसर मिलते ही उसे हानि पहुंचाने की यथासाध्य चेष्टा करेंगे। यदि ऐसा अवसर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* भारत माता की जय *

संगठन का बिगुल

प्रथम अध्याय

हिन्दू-संगठन का आदि कारण

आजकल के रेल, तार, विद्युत और आकाश-विमानों के ज़माने में कोई भी देश विदेशियों के हमलों से, सुरक्षित नहीं हो सकता, जब तक कि उस देश के लोगों के पास आधुनिक युद्ध-विद्या के साधन न हों; पर पुराने ज़माने में जब जातियां मज़बूत किलों तथा खाइयों द्वारा अपनी रक्षा किया करती थीं, तो देश के इर्द गिर्द समुद्र और बड़े बड़े पहाड़ों का होना बड़े सौभाग्य की बात मानी जाती थी। भारतवर्ष तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है और उसके एक तरफ बड़े बड़े दुर्गम पर्वत और जंगल हैं। प्रकृति ने इसकी स्थिति ऐसी सुरक्षित बनाई है कि थोड़े से परिश्रम से ही इसके निवासी अपने इस विशाल देश को सदा के लिये स्वाधीन रख सकते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसकी उत्तर पश्चिमी सीमा में ही एक ऐसा द्वार है जिधर से विदेशी इस देश पर हमला कर सकते हैं। इसी रास्ते से बहुत प्राचीन काल से भिन्न भिन्न जातियों ने इस देश में प्रवेश किया। यूनानी, पारसी, सिथियन्स, तातारी, यहूदी और तुर्क इस देश में इसी रास्ते से आये और धीरे धीरे हिन्दू सभ्यता का आश्रय लेकर इस देश के निवासी बन गये। बौद्ध काल में मध्य एशिया में बौद्ध धर्म की दुंदुभी बजती थी। बाद में ब्राह्मण धर्म ने इन जंगली जातियों को शुद्ध करके अपने में मिला लिया और वे लोग हिन्दू जाति के अंग बन गये।

ईसा के करीब ६०० वर्ष बाद जब हज़रत मुहम्मद साहब का जन्म अरब में हुआ और उन्होंने अपनी दलबंदी कर यहूदी और ईसाई धर्म को भित्ति पर अपना एक नया मज़हब चलाया तो अरब में मानों एक भयङ्कर ज्वालामुखी फट पड़ा। उसकी लपटें तथा उसके दहकते हुए लावा ने इर्द गिर्द के देशों तथा पुरानी सभ्यताओं को भस्म कर दिया। फारिस और मिश्र इसकी ज्वाला से मिट गये; स्पेन और आस्ट्रिया भी इसके ताप से न बचा; चीन और पोलेन्ड तक इसकी चिनगारियां पहुंचीं; पृथ्वी मानों कांप उठी। इस ज्वालामुखी के जलते हुए लावा की एक धारा भारत वर्ष की ओर बढ़ी और सिन्ध तथा पंजाब को भस्म करती हुई पतितपावनी भागीरथी के किनारे जाकर पहुंची। वहाँ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस्लाम के पापों का प्रायश्चित्त हुआ और अरब का ज्वालामुखी धीरे धीरे ठंडा पड़ने लगा। स्पेन और आस्ट्रिया से इस्लाम का बहिष्कार हुआ और यूरुप की सभ्य जातियों ने इसे एशिया का बीमार आदमी बनाकर काले समुद्र के किनारे इसकी मृत्युशय्या डाल दी।

सचमुच इस्लाम के १३०० वर्ष का इतिहास संसार में तबाही और बर्बादी लानेवाला हुआ है। भारतवर्ष में तो इसके आने से भयङ्कर उथल पुथल हुई। विचार-स्वातंत्र्य तथा धर्म में सहनशीलता माननेवाला हिन्दू धर्म इस्लाम के जंगली जोश को देखकर दंग रह गया। धर्म को प्राणों से भी अधिक प्यार करने वाले हिन्दू लोग मुहम्मदी मज़हब का मुकाबला करने के लिये उठ खड़े हुए और इस्लाम के नशे में चूर विदेशियों को उन्होंने ज़रा भी चैन न लेने दी। मुग़ल बादशाह अकबर ने हिन्दू जागृति से उत्पन्न होनेवाले ख़तरे को अनुभव किया और हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य की बुनियाद डाली। इस्लाम के जंगलीपन की बातों को मिटाकर उसने इस्लाम में सभ्यता का समावेश करना चाहा और मौलवी मुल्लाओं के प्रभाव को बिल्कुल घटा दिया। हिन्दुओं के दिल को दुखानेवाली सभी बातें दूर कर दी गईं और भारतवर्ष में हिन्दू-मुस्लिम राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव हुआ। जहांगीर और शाहजहां के शासन काल में अकबर की नीति जारी रही। हिन्दू और मुसलमानों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने मिलकर एक नये साहित्य को जन्म दिया। देश मानों स्वाभाविक चाल से चलने लगा।

पर दैव की लीला अपरम्पार है। इस्लामी सिद्धान्तों की प्रभुता द्वारा भारतीय राष्ट्रीयता ईश्वर को मंजूर नहीं थी, परमात्मा की इच्छा थी कि इस्लाम केवल हिन्दुओं के मायावाद को नाश करने का कारण बने और हिन्दू जाति अपने प्राचीन ऋषियों की सभ्यता के आधार पर भारतीय राष्ट्रीयता को निर्माण करे। यही कारण हुआ कि औरंगज़ेब के ज़माने में इस्लामी मज़हब अपने भयावने रूप में पुनः प्रगट हुआ। जो हिन्दू बादशाह अकबर के काल से लेकर शाहजहाँ के समय तक, मुसलमानों के साथ दूध-चीनी की तरह मिल गये थे वे ही मौलवी मुल्लाओं की धर्मान्धता से एक दूसरे के घोर शत्रु बन गये। आज-कल के मुसलमान हिन्दुओं के दिलों में बैठी हुई इस्लाम के प्रति घृणा को देखकर हिन्दुओं की तंगदिली की निन्दा करते हैं, पर उन्होंने इतिहास के पन्ने उलट कर, संसार को विस्मित करनेवाले, हिन्दुओं के इस व्यवहार का कारण तलाश नहीं किया। जिस समय काशी, मथुरा और अयोध्या के जगतप्रसिद्ध देवालयों को तोड़कर मसजिदें बनाई गईं उस दिन हिन्दू सन्तान ने इस्लाम का समूल बहिष्कार कर दिया। मुसलमानों में प्रायः दूसरों के दुखों के समझने का माद्दा ही नहीं होता, इसी लिये मुसलमानों ने आज तक अपने उन पापों के लिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पश्चाताप नहीं किया। मुसलमानों के अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू जनता युद्ध के लिये खड़ी हो गई और हिन्दू संगठन की पुनीत प्रगति का प्रादुर्भाव हुआ।

पाठक अब हम आपको ईसा की सत्रहवीं सदी के आख़री भाग में ले जाकर हिन्दू-संगठन के जन्मदाताओं के दर्शन कराते हैं।

दूसरा अध्याय

हिन्दू संगठन के जन्मदाता

ईसा की सत्रहवीं सदी के अन्तिम भाग में हिन्दू सभ्यता के लिये घोर संकट का समय उपस्थित हुआ था। जिस अरब के ज्वालामुखी ने मध्य एशिया के देशों की सभ्यताओं को मिटा दिया था और जो अब अपनी तबाही का काम समाप्त कर ठंडा पड़ चुका था, उसकी बची खुची चिंगारियाँ यकायक भारत में भभक उठीं और ऐसा प्रतीत होने लगा मानों भारतवर्ष भी फारिस की तरह अपना अस्तित्व खो बैठेगा।

भावी के खेल न्यारे हैं। जैसे मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ आदमी दम तोड़ते वक्त चैतन्यता दिखलाता है, ठीक यही दशा भारत में इस्लाम की हुई। औरंगज़ेब के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज़माने में इस्लाम ने फिर अपना विकराल रूप धारण किया और उसने हिन्दू सभ्यता तथा हिन्दू आदर्शों को छिन्न भिन्न करने के लिये जी जान से कोशिश की। औरंगज़ेब, मुसलमानी काल का, सबसे अधिक प्रतापी बादशाह हुआ है। उसने राज्य की सारी शक्तियाँ लगाकर सब प्रकार के सम्भव उपायों का अवलम्बन कर, हिन्दू जाति को मिटा देने की चेष्टा की। हिन्दुओं के लिये उनकी परीक्षा का यह सबसे कठिन समय उपस्थित हुआ था। हिन्दू समाज के डरपोक, लोभी, और कामी लोगों ने पहले ही हल्ले में इस्लाम क़बूल कर लिया; दुर्बल और अछूत हिन्दू भी लाखों की संख्या में अपने धर्म से च्युत हो गये; हज़ारों वीर राजपूतों ने बीच का मार्ग अवलम्बन किया और ईश्वर से प्रार्थना की कि अवसर मिलते ही वे अपने प्यारे हिन्दू धर्म में सम्मिलित हो जाएँगे।

हिन्दू समाज के कचरे को इस प्रकार प्रलोभनों और तलवार के ज़ोर से अपने मज़हब में मिलाकर मौलवी और मुल्ला फूले न समाये। उन्होंने समझा कि बस मदान मार लिया; मगर भावी ने हँसकर कहा, "मूर्ख मुल्ला-लोगो! हिन्दू समाज का यह कूड़ाकरकट तुममें मिलकर तुम्हारा ही सत्यानाश कर देगा।" वही हुआ। कमीने, भीरु, स्वार्थी, और धूर्त हिन्दुओं के मुसलमान हो जाने से भारतवर्ष में मुसलमानी साम्राज्य का सदा के लिये खातमा हो गया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्मपरायण, वीर और तेजस्वी हिन्दू अदम्य उत्साह से अपनी प्यारी जन्मभूमि की रक्षा के लिए उठ खड़े हुए और उन्होंने हिन्दू-संगठन की बुनियाद डाली। दक्षिण भारत के महाराष्ट्र प्रान्त में छत्रपति शिवाजी महाराज ने बिखरी हुई हिन्दू शक्तियों का संगठन किया और मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब का ऐसी लातें लगाईं कि हिन्दुस्तान की इस्लामी दुनियाँ काँप उठी। महाराष्ट्र प्रांत में मुसलमानों की संख्या बहुत ही कम होने के कारण हिन्दू-संगठन का काम आसान था और औरंगज़ेब के मरते ही मरहटों ने बहुत शीघ्र अपना बल बढ़ाया और इर्द गिर्द के मुसलमानी हाकिमों को पराजित कर उन्होंने विशाल हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की।

परन्तु हिन्दू-संगठन का असली और सच्चा काम पंजाब में हुआ। पंजाब भारत का सिंहद्वार होने के कारण सदा सब से अधिक खतरे में रहा है। जितने विदेशी सेनानायकों ने भारत पर आक्रमण किया, उन्होंने सब से पहिले पंजाब को ही अपने पांव के तले रौंदा। इसलिये पंजाबनिवासी हिन्दुओं की दशा मुसलमानी काल में बड़ी हीन थी। बाबर के समय में ही खत्रीवंश के सूर्य गुरु नानकदेव ने अपनी दिव्य दृष्टि से अपने प्यारे पंजाब की इस भीषण समस्या को अनुभव किया था, पर वे कर क्या सकते थे। हिन्दू समाज में संगठन नहीं था, सैकड़ों प्रकार के देवी देवताओं की पूजा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करनेवाले हिन्दू छोटे छोटे टुकड़ों में विभक्त थे ; ऐक्य का कोई सीमेन्ट हिन्दू समाज में न था। मिथ्या विश्वासों में पड़ी हुई हिन्दू जनता जात पांत के कंटकाकीर्ण मार्ग का अनुसरण कर रही थी। ऐसी हिन्दू समाज को, किस प्रकार, संगठित विदेशियों के मुकाबिले में, खड़ा किया जाए ? यही समस्या थी। सदियों से बिगड़ा हुआ समाज एक दिन में थोड़े ही सुधर सकता है, और वह भी क्या अपने ही जीवनकाल में ? धैर्य और संतोष से उस ईश्वरपरायण गुरु नानकदेव ने अपना काम आरम्भ किया। उनका लगाया हुआ बीज आठ पीढ़ियों के बाद एक सुन्दर वृक्ष बन गया और जब परम तपस्वी और अहिंसा के अवतार गुरु तेग़बहादुर जी ने देहली में जाकर धर्म के लिये अपना सिर दे दिया तो भारत वर्ष में हिन्दू-संगठन की प्रचन्ड ज्वाला प्रज्वलित हुई।

निस्सन्देह हिन्दू-संगठन के सच्चे जन्मदाता वीर शिरोमणि गुरु गोविन्दसिंह जी थे। देहली में अपने परम पूज्य पिता गुरु तेग़बहादुर जी के पवित्र बलिदान के बाद इन्होंने हिन्दुओं के संगठन का भगीरथ प्रयत्न किया। इनका संगठन देश काल के अनुकूल था, क्योंकि वे पश्चिमीय जातियों के गुण दोषों से भली प्रकार परिचित थे। उन्हें अपनी समाज की कमज़ोरियों का भी खूब पता था। कौन से दोषों के कारण हिन्दू जनता विदेशियों से पददलित हुई है, उनका स्पष्ट चित्र उनके सामने था। विदेशियों से नित्य सम्बन्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहने की वजह से अपने देश की गुलामी के मूल कारणों का पता उन्हें लग गया था, अतएव उस क्षत्रिय वीर ने अपना सर्वस्व होम कर जाति के उद्धार की प्रतिज्ञा की।

अच्छा, हिन्दू-संगठन के जन्मदाता दो पुरुष हुए—छत्रपति शिवाजी महाराज और वीर केशरी गुरु गोविन्द-सिंह जी। दोनों के संगठन में क्या अन्तर था? इस पर थोड़ा विचार कर लेना अनुचित न होगा। छत्रपति शिवाजी महाराज प्राचीन हिन्दू धर्म के ज़बर्दस्त अभिमानी थे। वे वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा के पुजारी थे, इसलिये उन्होंने उसी ढंग से हिन्दू समाज का संगठन किया। विदेशियों के साथ घनिष्ट सम्पर्क होने का अवसर महाराष्ट्र हिन्दू जनता को बहुत कम मिला था और न उन्हें अपने समाज के दोषों के देखने की ही आवश्यकता पड़ी थी। यही कारण हुआ कि महाराष्ट्रीय हिन्दू-संगठन ने हिन्दू समाज में कोई क्रान्ति उत्पन्न नहीं की और समाज के सभी दोषों को रखते हुए उसने अपना साम्राज्य स्थापित किया। यदि महाराष्ट्र प्रान्त में समयानुकूल हिन्दुओं के अन्दर सामाजिक क्रान्ति हो जाती और उस क्रान्ति के आधार पर महाराष्ट्र-साम्राज्य स्थापति होता तो हिन्दू जाति सदा के लिये स्वाधीन हो जाती और अंग्रेजी शासन हिन्दुस्तान में हर्गिज़ न पनपता। हिन्दू सभ्यता और हिन्दू आदर्शों के साथ साथ यदि कुशाग्रबद्धि महाराष्ट्रीय वर्तमान युग के प्रजातंत्रवाद और सामाजिक सभ्यता को अपना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लेते तो भारत की स्वाधीनता का प्रश्न सदा के लिये हल हो जाता। पर ऐसा न हुआ। हिन्दू समाज की भीतरी कमज़ोरियों ने महाराष्ट्र साम्राज्य को कमज़ोर कर दिया और छत्रपति शिवाजी महाराज के पुरुषार्थ से निर्माण किया हुआ राष्ट्रभवन सौ वर्ष के भीतर ही जर्जरित होकर गिर पड़ा।

अब हम गुरु गोविन्दसिंह जी द्वारा किए गये हिन्दू-संगठन पर एक दृष्टि डालते हैं।

तीसरा अध्याय

संगठन की पुनीत प्रगति

नवें गुरु तेग़बहादुर जी की देहली में बलिदान होने की घटना भारतवर्ष के इतिहास में बड़ी महत्वपूर्ण है। एक परम तपस्वी ईश्वर-भक्त महात्मा अपनी इच्छा से सारे देश के दुःखों को अपने सिर पर लेकर पीड़ित हिन्दू जनता का उद्धार करने के लिये मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब के पास देहली जाता है। वहाँ हंसते हंसते परमात्मा का नाम कीर्तन करते हुए वह अपना सिर कटवादेता है। अपने शत्रुओं के प्रति उसके चित्त में कुछ भी द्वेष नहीं। भारतवर्ष की सभ्यता और उसके आदर्शों का ज्वलन्त उदाहरण गुरु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तेग़बहादुर जी ने अपने काल के मुसलमानों को दिखलाया। अत्यन्त पवित्र वस्तु के बलिदान से देश के घोर संकट की निवृति होती है और उसमें से एक उच्च सिद्धान्त निकलता है —

" Let us die so that the others may live."

अर्थात् हम बलिदान हो जायें ताकि भावी सन्तान सुख-पूर्वक जिये। हिन्दू धर्म सेवा और बलिदान का धर्म है। गुरु तेग़बहादुर जी ने हिन्दू सभ्यता के आदर्श को पूरा कर दिखलाया।

वह बलिदान एक चमत्कार था। दसवें गुरु गोविन्दसिंह जी अपने पिता के मिशन को पूरा करने के लिये उठ खड़े हुए। जिन कारणों से हिन्दू प्रजा मुसलमानों से भय-भीत होती थी उनको उन्होंने मिटा दिया। खैबर घाटी से आनेवाले मुसलमानों की लम्बी लम्बी दाढ़ियाँ और लम्बे क़द हिन्दुओं को डराते थे। गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपने सिक्खों से कहा कि वे भी लम्बी दाढ़ियाँ और सिर के केश रक्खें ताकि साढ़े पांच फीट का आदमी छः फीट से अधिक लम्बा दिखलाई देने लगे। मुसलमान लोग हिन्दुओं को सताने के लिए गाय मारते थे, सिक्खों ने सुअर को झटके से मारना और उसका मांस खाना शुरू किया। मुसलमानों में छूत छात नहीं है और न वे जात पांत ही मानते हैं। गुरु गोविन्दसिंह जी ने छूत छात और जात

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पांत को उड़ा दिया और हिन्दू समाज को साम्यवाद के सिद्धान्तों से दीक्षित किया। क्षात्रधर्म का प्रचार हिन्दू जनता में कर उन्होंने मौतका सामना करनेवाले बहादुर अकाली-दल की बुनियाद डाली और हिन्दुओं को भ्रातृ-भाव के सूत्र में पिरो दिया। इसी लिए हम गुरु गोविन्द-सिंह जी को हिन्दू-संगठन का सच्चा जन्मदाता कहते हैं।

इस दूरदर्शी हिन्दू नेता ने खैबर घाटी से आनेवाले ख़तरे को भली प्रकार समझा था। उन्होंने सोचा कि जब तक खैबर का रास्ता बन्द नहीं होगा तब तक हिन्दु-स्तान सुरक्षित नहीं हो सकता। अकाली-दल खैबर घाटी से आनेवाले ख़तरे को रोकने के लिये बनाया गया, उत्तर पश्चिमीय सीमा पर सिक्खों की बस्तियाँ बसाई गईं, अपना सर्वस्व होमकर उस दूरदर्शी राजनीतिज्ञ ने अफ़ग़ा-निस्तान और भारतवर्ष के बीच सुदृढ़ लोहे की दीवार खड़ी कर दी। यदि अब अफ़ग़ानिस्तान खैबर की घाटी से भारतवर्ष पर आक्रमण करे तो पंजाब के निवासी, गुरु गोविन्दसिंह जी के प्यारे, चालीस लाख सिक्ख अपने प्राणों को हथेली पर रखकर विदेशियों के मुक़ाबिले में डट जाएंगे और एक भी विदेशी जीता लौटकर अपने घर वापिस न जा सकेगा। गुरु गोविन्दसिंह जी ने हिन्दुओं का अपूर्व संगठन किया और खैबर घाटी से आनेवाले ख़तरे को सदा के लिए मिटा दिया। ऐसे उपकारी, स्वार्थ-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्यागी, क्षात्रधर्म के अवतार, वीर-श्रेष्ठ गुरु गोविन्दसिंह जी के अहसान को हिन्दू संतान कभी भूल नहीं सकती। उस हिन्दू संगठन का परिणाम यह हुआ कि मुट्ठी भर सिक्खों ने पंजाब में अपना राज्य स्थापित कर लिया और मुसलमानों पर तलवार की ऐसी चोटें लगाईं कि अफ़ग़ानिस्तान के पठान थर थर कांप उठे। जो मुसलमान हिन्दुओं को चिड़ियां समझा करते थे, अब हिन्दुओं को शेर देख कर उनका दम खुश्क होने लगा। पांसा पलट गया; मुसलमानों को लेने के देने पड़ गये। स्वनामधन्य बंदा वैरागी ने गुरु गोविन्दसिंहजी की आज्ञानुसार पंजाब में दौरा किया और मुसलमानों को उनके अत्याचारों का ऐसा दंड दिया कि वे "तोबा! तोबा!" पुकार उठे।

हिन्दूसंगठन के इतिहास में बन्दा बहादुर की कथा बड़ी अद्भुत है। हिरनी का शिकार करनेवाला वीर राजपूत माता के पेट में से निकले हुए नन्हें नन्हें बच्चों को देखकर अहिंसाके व्रत का व्रती हो जाता है। वैष्णवधर्म का अवलम्बन कर, शरीर में भस्म रमा, वह तेजस्वी क्षत्री अपनी जन्म-भूमि को छोड़ दक्षिण की ओर चल देता है। वर्षों वह भगवान के ध्यान में निमग्न रहता है। जिस समय उसकी मातृभूमि विदेशियों के अत्याचारों से त्रस्त होकर हा हा-कार करती है तो वह वैरागी अपनी तुलसी की माला को एक तरफ रखकर, शरीर की भस्म दूरकर, तलवार हाथ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में लेता है। अपने देश के शत्रुओं के लिये वह काल का स्वरूप धारण कर, धनुष बाण हाथ में ले, जटाजूट बाँध जन्मभूमि की ओर चल देता है। अपने सब सुखों पर लात मारकर वह युग के धर्म का अवलम्बन करता है और रणभूमि में पहुंचकर आततायियों को उनके किये हुए पापों का उचित दंड देता है। हृदयशून्य पठान बन्दा बहादुर के अपूर्व साहस को देखकर विस्मित हो जाते हैं और उन्हें मालूम होने लगता है कि मानों स्वयं खुदावन्द करीम ही उनके गुनाहों की सज़ा देने के लिये आया है। हज़ारों मौलवी, मुल्ला, पीरज़ादे, नवाबज़ादे गाजर मूली की तरह काट दिये जाते हैं और सैकड़ों मसजिदें, जहां ख़ुदा के नाम पर निर-अपराधों की गर्दनें काटी जाती थीं, भूमि के साथ मिला दी जाती हैं। पंजाब के मालवा प्रान्त में बन्दा बहादुर के समय की यह उक्ति आम प्रसिद्ध है —

सुन ओ सिक्ख जवाना !
ढादे मसीतां करदे मैदाना।

गुरु गोविन्दसिंह जी के मिशन को पूरा कर बन्दा बहादुर अपने साथियों के साथ देहली में शहीद हुए। यह घटना बादशाह फरुखसियर के समय की है। बहादुर वैरागी का किया हुआ पुरुषार्थ फल लाया और पंजाब में क्षात्रधर्म की जड़ जमी। महाराजा रणजीतसिंह ने अपने अतुल पराक्रम से सारे पंजाब को स्वाधीन कर लिया और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनके मशहूर सेनानायक हरीसिंह नलुवे ने सीमाप्रान्त को विजय किया। पठानों में हरीसिंह जी का ऐसा आतंक छाया कि आज तक मातायें अफ़ग़ानिस्तान में बच्चों को नलुवे का नाम लेकर डराती हैं।

चौथा अध्याय

उन्नीसवीं सदी में हिन्दू-संगठन

हिन्दूधर्म और हिन्दू साहित्य में मायावाद का सिद्धान्त विषवत सिद्ध हुआ है। हिन्दू जाति के अत्यन्त आपत् काल में समय समय पर महा पुरुष जाति का दुःख दूर करने के लिये उत्पन्न होते रहे हैं और उन्होंने अपने पुरुषार्थ से जाति के दुखों को दूर किया है। पर जिस जनता में संसार को मिथ्या और गृहस्थ की जिम्मेवारियों को माया समझने का ख्याल बैठा हुआ हो उसे कोई सदा के लिये चैतन्य नहीं रख सकता। यही कारण है कि महापुरुष आये और चले गये परन्तु मूल बीमारी का इलाज बिलकुल नहीं हुआ। महापुरुषों के जाने के बाद फिर हिन्दू जनता मायावाद के गहरे गढ़े में गिरकर सो जाती है और उन के दुःख जैसे के तैसे बने रहते हैं। मायावाद एक व्याधि है;

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह निराशा की शराब है ; यह अकर्मण्यता का भूत है। जगत् को मिथ्या समझनेवाली जाति क्षात्र-धर्म धारण नहीं कर सकती। उसके दुखों का इलाज करने का सीधा सच्चा उपाय यही है कि झूठे वेदान्त और मायावाद के ढकोसले को समूल नष्ट किया जाय और कर्मयोग की शिक्षा जनसाधारण को दी जाय।

ईसा की उन्नीसवीं सदी के पहिले भाग में महाराष्ट्र साम्राज्य का अन्त हुआ। छूत छात, जात पाँत के बंधन और घर की फूट इसके मुख्य कारण थे। समुद्रपार कर एक विदेशी गोरी जाति ने भारतवर्ष में आकर अपना प्रभुत्व जमाया और हिन्दुओं की कमज़ोरी का सोलह आना फायदा उठाकर धीरे-धीरे देश पर अपना कब्ज़ा कर लिया। हिन्दू और मुसलमान जनता नवीन श्वेतांग हाकिमों को पाकर संतुष्ट हो गई। नीतिनिपुण ब्रिटिश जाति ने हिन्दू मुसलमान दोनों को वश में कर अपने राज्य को सुदृढ़ किया और इन्हीं की मदद से पंजाब के हिन्दुओं की स्वाधीनता-नष्ट कर उस सूबे पर भी अपना क़ब्ज़ा जमालिया। सन् १८५७ में, कुछ चालाक मुसलमान लीडरों ने, अंग्रेज़ों से असंतुष्ट देशी रियासतों को मिलाकर, हिन्दू और मुसलमान फौजी सिपाहियों में व्यर्थ की अफ़वाहें फैला, हिन्दुस्तान से अंग्रेज़ी राज्य को समाप्त करने की चेष्टा की। जनसाधारण उस युद्ध में बिलकुल सम्मिलित नहीं हुए। जिन शिकायतों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारण सन् १८५७ का झगड़ा शुरू हुआ था, झगड़ा शान्त होने के बाद अंग्रेज़ों ने उन शिकायतों को दूर करने की घोषणा की ; देश में अंग्रेज़ी शासन अपनी मस्ताना चाल से चलने लगा। मुसलमान जनता तक़दीर के गढ़े में गिरकर सो गई और हिन्दू मायावादी बनकर फ़िलासफ़ी छांटने लगे। ईसाई मिशनरी नवीन पाश्चात्य ढंग से देश की जनता में अपने धर्म का प्रचार करने लगे। कालेज और स्कूलों में अंग्रेज़ी भाषा की शिक्षा होने लगी। थोड़े ही वर्षों में ऐसा प्रतीत होने लगा मानों अंग्रेज़ों का राज्य आदि सृष्टि से चला आ रहा है। अंग्रेज़ी पढ़े लिखे लोग विदेशी गवर्नमेंट के साथ दूध चीनी की तरह मिल गये और अपने अनपढ़ देशवासियों की भाषा तथा भेष का तिरस्कार करने लगे। योरूप का साहित्य और उसके आदर्श पढ़े लिखों के दिलों में घर कर गये और सारे देश ने गुलामी का आवरण पहिन लिया। स्वत्वाभिमान और जाति-प्रेम लोगों के दिलों से जाता रहा और शिक्षित समुदाय अंग्रेज़ अधिकारियों की हर बात में नक़ल करने लगा। देश की तिजारत नष्ट हो गई और लोग विदेशी माल से अपने देवी देवताओं की पूजा करने लगे। देश में अजीब नामर्दी छा गई। ऐसे समय में हिन्दुओं को एक ज़बर्दस्त नेता की आवश्यकता थी जो अपने देश के प्राचीन गौरव की गाथा जनता को सुनाता और जन साधारण में स्वत्वाभिमान भरता। ईश्वर ने ऐसा नेता भेज दिया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती उन्नीसवीं सदी में हिन्दू संगठन के ज़बर्दस्त प्रवर्तक हुए। अपनी प्राचीन सभ्यता का अभिमान उन में कूट कूट कर भरा हुआ था। अपने देश में भ्रमण कर जब उन्होंने जन साधारण को मायावाद के गढ़े में गिरा हुआ देखा और शिक्षित समुदाय को अपनी ही भाषा और भेष से घृणा करते हुए पाया, तो उनका हृदय संतप्त हो उठा। उन्होंने देखा कि कालेज और स्कूलों में पढ़नेवाले विद्यार्थी अपने धर्म से परांमुख होते जारहे हैं और ईसाई मिशनरी घरों में घूम घूमकर लोगों को विदेशी आदर्शों की ओर खींच रहे हैं। ऐसे समय में उनका क्या कर्तव्य है ? यही विचार वे करने लगे। अन्त को अपना कर्तव्य निश्चित कर उस देशभक्त सन्यासी ने हिन्दू धर्म के सुधार का बीड़ा उठाया। स्थान स्थान पर घूमकर शास्त्रार्थ किये ; मौलवी और मुल्लाओं से टक्करें लीं ; ईसाई पादड़ियों को अपने धर्म का गौरव बतलाया और जन साधारण की भाषा में अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना की। स्वामी दयानन्द सरस्वती शास्त्र-युद्ध-कला के अद्भुत पण्डित थे। उनके ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" ने हिन्दुस्तान की मज़हबी दुनियां में बम के गोले का काम किया। सोये हुए हिन्दू चैतन्य हो गये ; ईसाई मिशनरी विस्मित हो उठे ; मौलवी लोग बग़लें झांकने लगे ; देशमें एक अतीव जागृति हुई ; पश्चिम की ओर बहनेवाली लहर फिर पूरब की ओर बहने लगी ; हिन्दी भाषा को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीयता का स्थान मिला ; संस्कृत साहित्य का पुनरुद्धार हुआ ; जन साधारण में देशभक्ति का संचार होने लगा और निराशा में डूबे हुए हिन्दू आशावादी बनकर अपने देश और धर्म की रक्षा के लिये शास्त्र-शस्त्र सम्भाल कर मैदान में निकले।

आर्यसमाज के पिछले चालीस वर्ष का इतिहास हिन्दू-सगठन के लिये भगीरथ प्रयत्न का इतिहास है। यद्यपि आर्य-समाज के काम करनेवालों से बहुत सी भूलें हुई हैं, तो भी आर्य समाज ने हिन्दू जाति की बड़ी जबर्दस्त सेवा की है और भारतवर्ष के प्राचीन गौरव का अभिमान जनता में भरने में तो इस संस्था का काम चिरस्मरणीय रहेगा। हिन्दुओं में अपने देश की ममता और उसके आदर्शों के प्रति श्रद्धा का भाव भरने में श्री स्वामी विवेकानन्द जी और श्री स्वामी रामतीर्थ जी ने भी बड़ा काम किया है। नई दुनियां में घूमने वाले इन दोनों परिव्राजकों ने हिन्दू जनता को नवीन स्फूर्ति दी और सेवा-धर्म के मंत्र से दीक्षित किया। लोग इनके उपदेशों से प्रभावित होकर अपने देश के आदर्शों का आदर करने लगे और यह भी समझने लगे कि भारतवर्ष के जीवन का एक पवित्र मिशन है और वह मिशन संसार में शान्ति फैलाना है।

हिन्दू जाति को उन्नीसवीं सदी के अन्त में हिन्दू-संगठन के लिये एक आदर्श मिल गया। बिना लक्ष्य के जाति मुर्दा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होती है। लक्ष पाकर हिन्दू नवयुवकों में नवशक्ति का संचार हुआ और हिन्दू-संगठन के व्यापी आन्दोलन के लिये सामग्री इकट्ठी होने लगी।

पांचवाँ अध्याय

स्वराज्य की लड़ाई

ईसा की बीसवीं सदी के शुरू में भारतवर्ष में नये युग का आरम्भ हुआ। स्वर्गीय दादाभाई नौरोजी के प्रताप से देश की राजनीतिक परिभाषा में स्वराज्य शब्द को स्थान मिला। अंग्रेज़ी इतिहास के प्रचार से शिक्षित समुदाय में स्वतंत्रता के विचारों का समावेश हो चुका था, अतएव बंगाल के नवयुवकों ने बहुत शीघ्र देश को स्वतंत्र करने की ठानी। देश का वातावरण बदल गया। अखिल भारतवर्षीय राष्ट्रीय महासभा में क़ौमपरस्त पार्टी का ज़ोर बढ़ा। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपने चालीस वर्ष के परिश्रम से जनता को राष्ट्र-धर्म की शिक्षा दी और अपने अतुल परिश्रम से राष्ट्रीय महासभा को एक राष्ट्रीय शक्ति बना दिया। सन १९१६ की लखनऊ काँग्रेस में पहिली बार हिन्दू मुसलमान एक प्लेटफार्म पर इकट्ठे हुए और दोनों ने मिलकर देश का ध्येय स्वराज्य निश्चित किया। हिन्दू नेताओं ने मुसलमानों के साथ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजनीतिक समझौता कर डाला और यह सोचा कि इस प्रकार समझौता कर लेने से स्वराज्य जल्दी मिल जायगा। मिसेज़ बीसेन्ट की अध्यक्षता में और लोकमान्य जी के सहयोग से स्वराज्य-प्राप्ति की नई प्रगति शुरू हुई और देश में खूब आन्दोलन आरम्भ हुआ।

योरुप का महायुद्ध इन दिनों चल रहा था। ब्रिटिश सरकार घोर संकट में फँसी हुई थी। भारत के राजनीतिज्ञों ने यह समझा कि संकट में फँसी हुई सरकार की सहायता करना सच्ची राज-भक्ति है और इसका फलस्वरूप अधिकारों की प्राप्ति होगी। सब जी-जान से गवर्नमेन्ट की सहायता करने में लग गये। सबने अपनी अपनी शक्ति अनुसार सरकार की मदद की। मौलवी मुल्लाओं, पंडित और पुरोहितों ने अपनी अपनी मसजिदों और मन्दिरों में नौकरशाही की विजय के लिए प्रार्थनायें कीं। ईश्वर ने संतुष्ट होकर वर दिया और ब्रिटिश जाति विजय-पताका उड़ाती हुई मैदान से निकली।

दैव की विचित्र गति है। मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ है। नौकरशाही की मदद करने का पुरस्कार हिन्दुओं को पंजाब का हत्याकांड मिला और मसलमानों को ख़िलाफ़त की झंझट। बेचारे ग़रीब मुसलमानों के अस्सी लाख रुपये उस झंझट में पट होगये। अब लगा हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य होने।

9381
आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति स्मृति संग्रह
CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लोकमान्य तिलक अपना कर्तव्य-पालन कर स्वर्ग सिधार गये और पुरुष-श्रेष्ठ महात्मा गाँधी जी ने देश का नेतृत्व अपने हाथ में लिया। भारतवर्ष के इतिहास में पहिलीबार जन साधारण को अपने मन का नेता मिला, और ऐसा नेता जो जनता की नब्ज़ पहिचाननेवाला हो। महात्मा गाँधी जी ने अनुभव किया कि देश में क्रान्ति का समय आगया है। उन्होंने स्वराज्य-प्राप्ति के लिये नौकरशाही से युद्ध करने की ठानी। अंग्रेज़ी शासन काल में यह पहिला अवसर था कि जब देश की सारी जनता ने, सभी सम्प्रदायों के लोगों ने, एक नेता के अधीन होकर एक मन से स्वराज्य-प्राप्ति के लिये यत्न किया। शान्तिमय असहयोग की ध्वनि भारतवर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक गूँज उठी। ख़िलाफत के दुःख के कारण मुसलमान महात्मा जी के साथ होगये और उसी के सहारे बड़े-बड़े कट्टर मौलवी मुल्ला महात्मा गाँधी जी के साथ घूम घूमकर मुसलमान जनता को नौकरशाही के विरुद्ध उभारने लगे। सन १९२१ का वर्ष भारतवर्ष के इतिहास में सोने के अक्षरों में लिखा जाएगा और उसकी कथा महात्मा गांधी जी की दिग्विजय की कथा होगी। धन्य हैं वे लोग जिन्होंने वह वर्ष देखा, और अपनी शक्ति भर स्वार्थ त्याग कर देश के लिये उस समय कुछ काम किया। आधुनिक अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित, वैज्ञानिक साधन से सुसंगठित, अंग्रेज़ जाति, शान्तिमय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असहयोग के विलक्षण चमत्कार को देखकर काँप उठी। महात्मा गांधी जी का नाम सारे सभ्य संसार में प्रख्यात हो गया।

शान्तिमय असहयोग की यह लड़ाई भारतवर्ष के इतिहास में बड़ा ऊँचा दर्जा पायेगी। हमें इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं कि यदि महात्मा गांधी जी अहमदाबाद की काँग्रेस के बाद अपना पैर बढ़ाये चले जाते और बारडोली में आकर न झिझकते तो भारतवर्ष का राजनीतिक इतिहास आज दूसरा ही होजाता। हम बारडोली की ग़लती को महात्मा गांधी जी के जीवन की सब से बड़ी ग़लती मानते हैं। देश में इतनी प्रचन्ड अग्नि प्रज्वलित कर, हिन्दू मुसलमानों को दीवानापन के दर्जे तक पहुंचा, नौकर-शाही को युद्ध की घोषणा दे, फिर पीछे हट जाना, यह ऐसा अपराध है कि जिसे इतिहासकार कभी भी क्षमा नहीं करेंगे। स्वराज्य की इस लड़ाई में हिंसा और अहिंसा की बारीकियों में फँसकर सेनापति का शस्त्र डाल देना ऐसी दर्दनाक घटना है कि जिसे स्मरण करते ही हाथ मलते रह जाना पड़ता है।

लोग हमसे पूछेंगे कि क्या बारडोली की लड़ाई चला देने से भारतवर्ष को स्वराज्य मिल जाता? इस प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। हमने यह कभी नहीं माना कि भारतवर्ष को एक वर्ष में स्वराज्य मिल सकता था, या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बारडोली की लड़ाई जारी करने से भारतवर्ष को स्वराज्य मिल जाता, पर हमारा कथन केवल यह है कि जिन ढंगों से हिन्दू मुस्लिम जनता को स्वराज्य के लिये जोश दिलाया गया था, जिन मिथ्या विश्वासों के सहारे जनता में क्रान्ति की आग फूंकी गई थी, जिन मौलवी मुल्लाओं की सहायता से मुसलमानों को मज़हबी दीवाना बना दिया गया था—उस सब उद्योग का परिणाम केवल क्रान्ति हो सकता था, और उस क्रान्ति से हिन्दू मुसलमानों के साझे ज़ख़म हो सकते थे, और वे साझे घाव हिन्दू मुस्लिम ऐक्य की सीमेंट बन जाते, उस हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य की नीव पर राष्ट्र धर्म का उत्थान हो सकता था और तब देश में स्वराज्यप्राप्ति के लिये युद्ध का बिगुल बजता। शान्तिमय असहयोग द्वारा पैदा की हुई शक्ति का इसके सिवाय दूसरा कोई भी उपयोग हो नहीं सकता था क्योंकि हिन्दू मुसलमानों का वह ऐक्य सच्चा नहीं था और न हिन्दू जनता में स्वराज्य प्राप्ति के लिये सच्चा संगठन ही हुआ था। यदि महात्मा गांधी जी राजनीतिक क्षेत्र में लोकमान्य तिलक जी की तरह स्वाभाविक चाल से चलते और मौलवी मुल्लाओं को राजनीतिक क्षेत्र में न लाते तो देश को स्वराज्य प्राप्ति का सीधा सरल मार्ग मिलता और जो नई समस्यायें हिन्दू और मुसलमानों के बीच में अब खड़ी हो गई हैं वे कदापि न होतीं।

ख़ैर, जो हुआ सो हुआ। महात्मा गांधी वर्तमान काल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में संसार के सब से बड़े महापुरुष हैं। उन्होंने हमें यह सिखला दिया है कि यदि राजनीतिक क्षेत्र में सच्चे, सच्चरित्र, स्वार्थत्यागी और विरक्त नेता खड़े हो जांय तो भारतवर्ष की जनता स्वराज्य-प्राप्ति की असम्भव कामना को सिद्ध करके दिखला सकती है। स्वराज्य की इस लड़ाई से हमें यह शिक्षा मिलती है कि देश में सामग्री की कमी नहीं, केवल देश की आत्मा को समझनेवाले निर्भीक नेता चाहियें।

छठा अध्याय

स्वराज्य की समस्या

पंजाब के हत्याकाण्ड को लोग भूल गये; ख़िलाफत का प्रश्न मिट गया; बारडोली की लड़ाई का स्वप्न पुराना होगया; महात्मा गांधी जी जेल से लौट आये, आइये अब हम बैठकर गम्भीरता से स्वराज्य की समस्या पर विचार करें और पिछले शान्तिमय असहयोग की लड़ाई में की गई भूलों की पड़ताल करें। अब अपना पिछला बहीखाता मिलाने की ज़रूरत है ताकि भविष्य में दुबारा ग़लतियाँ न हों।

अब यह बात स्पष्ट है कि सन् १९२१ में हिन्दू मुसलमानों का ऐक्य केवल नशे का ऐक्य था। हिन्दू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नौकरशाही से पंजाब-हत्याकाण्ड के कारण अत्यन्त रुष्ट थे, और मुसलमान खिलाफत के कारण मौलवी मुल्लाओं के बहकाने से भारत सरकार के बख़िलाफ़ बना दिये गये थे। ऐसे ऐक्य से कभी किसी देश में स्वराज्य की लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती, हाँ केवल थोड़े समय की क्रान्ति की जा सकती है। स्वराज्य की लड़ाई मानवी अधिकारों की रक्षा की लड़ाई है; यह राष्ट्र के स्वाभाविक जीवन बनाने का संकल्प है; यह देश की सभ्यता और उसके आदर्शों की रक्षा का युद्ध है, ऐसा युद्ध स्वाधीनता के लिये ठोस संगठन के बिना नहीं किया जा सकता। मुसलमानों में स्वतंत्रता के लिये प्रेम पैदा ही नहीं किया गया और न वे भारतवर्ष को अपनी मातृभूमि ही समझते हैं। वे अब तक अरब की भाषा में नमाज़ पढ़ते और कलमा बोलते हैं। उनके लीडर उनको सदा अन्तोलिया, स्मरना, मक्का, मदीना और कुस्तुनतुनियां की बातें सुनाते रहते हैं। मुसलमानों के सभी त्योहार विदेशी रंग से रंगे हुए हैं और उन्होंने अब तक हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय त्योहारों को मनाना नहीं सीखा, ऐसी दशा में स्वराज्य के लिए हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का ख्याल मृगतृष्णा-वत् है। साझी घृणा के आधार पर स्वराज्य की लड़ाई लड़ने की कोशिश कभी सफल नहीं हो सकती और न अंग्रेज़ी सरकार के बख़िलाफ झूठी बातें उड़ाने से हमारा कोई अर्थ सिद्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हो सकता है। हम इन सब बातों को अधिक स्पष्ट करते हैं।

ईसा की सत्रहवीं और अट्ठारहवीं सदी के अन्त तक संसार की राजनीतिक दशा एक प्रकार की जुआ थी। बादशाहों के मरने पर राज्य क्रान्तियां हो जाया करती थीं; राज्य घरानों के आपस के बिवाह बड़े बड़े युद्ध करा देते थे; साहसी और पराक्रमी पुरुष सेना को वश में कर राज्य के मालिक बन बैठते थे, ऐसा समय अब दूर चला गया। जिस समय फ़्रांस में भीषण राज्यक्रान्ति हुई तो संसार में एक नये धर्म का प्रादुर्भाव हुआ और वह है राष्ट्रधर्म। यूरुप में शासन इस धर्म के अनुसार होता है अर्थात् प्रजा बहुत दर्जे तक राज्य की मालिक बन गई है। यदि आज हम अपने देश की स्वाधीनता के लिये यत्न करना चाहते हैं तो हमें यह याद रखना चाहिये कि हमारे देश पर ब्रिटिश राष्ट्र शासन कर रहा है। यह मुट्ठी भर जो अंग्रेज़ भारतवर्ष में दिखाई देते हैं वे केवल ब्रिटिश राष्ट्र की मशीन के अंग हैं। आज इंगलिस्तान के बादशाहों के मरने से या वहां के किसी बड़े सेनापति की हत्या से देश में विप्लव नहीं हो सकता, क्योंकि राजनीति ने संगठन का रूप धारण कर लिया है। यदि हम किसी प्रकार भारत में शासन करनेवाले मुट्ठी भर अंग्रेज़ों को दूर करदें तो भी यह देश स्वाधीन नहीं हो सकता, क्योंकि ब्रिटिश राष्ट्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इससे अधिक और आदमियों को शासन करने के लिये यहां भेज सकता है, अतएव हमें आधुनिक राजनीतिक समस्याओं को भली प्रकार समझ लेना चाहिए, शेख़चिल्ली को तरह बातें फ़र्ज़ कर लेने से काम नहीं चलेगा, अपने देश के तीस करोड़ लोगों की प्रारब्ध के साथ हम फ़र्ज़ी बातों के सहारे जुआ नहीं खेल सकते। राजनीति ठोस चीज़ है। यह इल्हाम या फिलासफी नहीं कि जिसका अर्थ रबर की तरह खींचा जा सके। योरुप में राष्ट्रीयता के अनुसार संगठन है। उस संगठन का मुक़ाबिला संगठन से ही किया जा सकेगा। क्या मुसलमान और हिन्दू मिलकर राष्ट्र संगठन कर सकते हैं? थोड़ा इस पर भी सुनिये।

पिछले शान्तिमय असहयोग के युद्ध में हमने मौलवी मुल्लाओं को अपने साथ ले लिया था, यह हमारी बड़ी भारी भूल थी, क्योंकि इस्लामी मज़हब के ये परिडत, आज़ादी किस चिड़िया का नाम है, नहीं जानते। इनके ख्याल के मुताबिक़ यदि कोई मुसलमान इस्लाम को छोड़ कर दूसरा मज़हब अख्तयार कर ले तो वह क़तल के योग्य हो जाता है। भूपाल की मुसलमानी रियासत में इसी सिद्धान्त के अनुसार अपना मज़हब छोड़नेवाले मुसलमान को तीन वर्ष की कड़ी क़ैद का हुक्म है, चूंकि मुसलमानी रियासतें ब्रिटिश शासन के अधीन होने के कारण मुर्तिद (जो इस्लाम मज़हब से इनकारी हो) को फाँसी पर नहीं लटका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सकतीं, इसलिए उन्होंने क़ैद की सज़ा रक्खी है, लेकिन अफ़ग़ानिस्तान में, जहां मुसलमानों का स्वतंत्र राज्य है, मुर्तिद को बीच शहर में सब जनता के सामने पत्थरों से मार दिया जाता है। मुसलमान लोगों में आज़ादी का स्पर्श भी नहीं हुआ। अफ़ग़ानिस्तान में मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी के चेलों को थोड़े से मज़हबी मतभेद के कारण पत्थरों से मार दिया गया और हिन्दुस्तान के बड़े बड़े मौलवी मुल्लाओं ने अमीर काबुल को इस पैशाचिक कर्म के लिये बधाई के तार भेजे! भला ऐसे लोगों के साथ मिल कर आज़ादी की लड़ाई लड़ी जा सकती है?

और सुनिए। स्वराज्य की समस्या पर विचार करते समय हमें सब बातें साफ साफ देख लेनी चाहिए। पहिली बात तो यह है कि भारतवर्ष में जो इस्लाम का स्वरूप है वह बड़ा संकुचित और दक़ियानूसी है। उसमें आज़ादी हासिल करने के कोई सामान नहीं हैं। उसका स्वरूप बन्ध्या स्त्री जैसा है। उसमें से महापुरुष पैदा नहीं हो सकते; किसी प्रकार की उन्नति उससे हो नहीं सकती। इस्लाम हिन्दुस्तान में आज़ादी की लड़ाई तभी लड़ सकता है जब इस्लाम अपने मज़हबी दीवानापन को छोड़कर, अपनी संकुचित बातों पर हड़ताल लगा बुद्धिवाद के स्वरूप को ग्रहण कर ले, क्योंकि इस्लाम मज़हब में मुसलमान के सिवाय दूसरे किसी के लिये स्थान नहीं है और इस्लाम के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फैलाने में घृणित से घृणित उपायों का अवलम्बन करना मुसलमानों में बुरा नहीं समझा जाता। अतएव हिन्दुस्तान में इस्लामी आज़ादी के अर्थ ईसाई, पारसी, सिक्ख और हिन्दुओं को मिटा देना है। मुसलमानों में स्त्रियां केवल खेती समझी जाती हैं, जो केवल बीज डालने के लिये हैं। औरतों की इज़्ज़त का भाव इस्लाम में नहीं है। धार्मिक सहनशीलता के बिना किसी समाज में शान्ति नहीं हो सकती और मुसलमानों में धार्मिक सहनशीलता आ नहीं सकती जब तक कि उनमें मज़हबी क्रान्ति न की जाय और कुरान की तालीम के स्थान पर उन्हें बुद्धिवाद (Rationalism) और राष्ट्रवाद (Nationalism) की शिक्षा न दी जाय। काम कठिन है पर इसे करना ही पड़ेगा; मुसलमानी मज़हब का सुधार हुये बिना हिन्दुस्तान को शान्ति नहीं मिल सकती। मुसलमानी मज़हब की भित्ति स्वार्थ पर अवलम्बित है। जो मुसलमान है उसके लिये सब कुछ है और जो मुसलमान नहीं है उसके लिये दोज़ख है, वह काफ़िर है, दंड देने लायक़ है, उसे किसी न किसी उपाय से—ज़ोर, धोखे, लोभ,—सभी उपायों से मुसलमान बनाना चाहिए। यह सिद्धान्त जिस मज़हब का है उसके माननेवालों के साथ मिलकर स्वराज्य की लड़ाई लड़ना बांझ औरत से संतान की आशा करना है। मुसलमानों के साथ मिलकर केवल वैध आन्दोलन से थोड़े

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बहुत अधिकार नौकरशाही से लिये जा सकते हैं, किन्तु स्वाधीनता के लिये युद्ध का मार्ग दूसरा ही होगा।

वह मार्ग कैसे बन सकता है? क्या हिन्दू मुसलमान मिलकर स्वराज्य की लड़ाई लड़ सकते हैं? कौन सी बातें। धारण करने से एक मुसलमान सच्चा क़ौमपरस्त हो सकता है? इन अत्यन्त आवश्यक प्रश्नों के उत्तर में हम राष्ट्र-धर्म के पवित्र सिद्धान्तों के अनुसार क़ौमपरस्ती की कुछ मुख्य बातें क्रमशः नीचे लिखते हैं ताकि देशभक्त मुसलमान बन्धु उन पर गम्भीरता से विचार करें और उन को पता लग जाय कि स्वराज्य की समस्या हल करने में देश के प्रति उनका क्या कर्तव्य है —

(१) पहिली बात का ज़िक्र हम ऊपर कर चुके हैं। इसलाम में उदारता और सहनशीलता आनी चाहिए; मुसलमानों में बुद्धिवाद का प्रचार होना चाहिए ताकि ग़रीब मुसलमान मौलवी और मुल्लाओं की गुलामी से छूट जांय और दूसरे मज़हबवालों के साथ प्रेमपूर्वक रहना सीखें।

(२) दूसरी बात है भाषा की। मुसलमान लोग हिन्दुस्तान में रह कर हिन्दी भाषा सीखें और संस्कृत साहित्य से प्रेम करें ताकि वे इस मुल्क की सभ्यता के हिस्सेदार हों।

(३) देशभक्ति ईंटों और पत्थरों से नहीं की जाती बल्कि देश के साहित्य, उसकी सभ्यता और उसके आदर्शों से की जाती है। मुसलमानों को चाहिए कि वे अरबी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और फारसी नाम न रक्खें बल्कि हिन्दुस्तानी नाम रक्खें; शखसादी और फिरदौसी की कविता पढ़ने के बजाय तुलसीदास और सूरदास के ग्रन्थ पढ़ें। इसमें कोई उनका इस्लाम नहीं बिगड़ता। इस्लाम तो सिर्फ खुदा को एक मानने और मुहम्मद साहब को पैग़म्बर स्वीकार करने में है। मुसलमान इस अपने मज़हबी असूल को हिन्दुस्तानी बनकर मानें न कि अरबी और फारसी बनकर।

(४) चौथी बात है लिपि की। मुसलमानों को हिन्दुस्तान की राष्ट्र लिपि, देवनागरी को, मानना चाहिए। वे इसी लिपि में अपनी मज़हबी बातें लिखें और पढ़ें। अरब की लिपि को हिन्दुस्तान की लिपि बनाने की कोशिश केवल देशद्रोह है। क़ौमपरस्ती यह सिखलाती है कि जिस मुल्क में जो रहता है वह उसी मुल्क के क़ौमी अक्षरों को अपनावे। इससे इस्लाम मज़हब—मानने या न मानने में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

(५) क़ौमी त्योहारों में मुसलमान लोग हिन्दुओं की तरह हिस्सा लें। अरबवालों के त्योहारों का हिन्दुस्तान में प्रचार करना क़ौमपरस्ती के सिद्धान्तों के बखिलाफ है।

(६) मुसलमानों को तुर्की अफ़ग़ानिस्तान, फारिस और मिश्र आदि का ख्याल छोड़कर हिन्दुस्तान से ही अपना प्रेम बढ़ाना चाहिए। हिन्दुस्तान का रुपया तुर्की, मिश्र तथा अरब आदि देशों में भेजना और अपने देश के लोगों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की मदद न कर दूसरे देशवालों की मदद करना भी देश द्रोह है। यह कहा भी है — " अव्वल ख़ेश बाद दरवेश। "

मुसलमान और हिन्दुओं में मज़हबी भेद के कारण फ़साद नहीं होता, यह झगड़ा राष्ट्रीय है। मुसलमान क़ौम-परस्ती की जड़ें काटते हैं इसलिए उनके साथ हिन्दुओं की एकता नहीं हो सकती। क्या ऐसे लोगों के साथ मिलकर स्वराज्य की लड़ाई लड़ी जा सकती है जो भारतवर्ष की भाषा, उसका साहित्य, उसके त्योहार, उसकी लिपि और उसकी सभ्यता का अनादर करते हों? कदापि नहीं। तो फिर देश की वर्तमान परिस्थिति में किस ढंग से काम होना चाहिए? हमारी तुच्छ सम्मति में गवर्नमेन्ट के साथ लड़ने वाले प्रश्नों का हल स्वराज्य पार्टी के हाथ में दे देना चाहिए और हमलोग जनता को राष्ट्रीयता के सिद्धान्तानुकूल संगठित करें। हमारा कल्याण इस समय इसी में है कि स्वराज्य पार्टी कौन्सिलों और एसेम्बली के अन्दर गवर्नमेन्ट के साथ खुले तौर पर लड़े और हम जनता को स्वराज्य के सच्चे अर्थ समझावें और उसकी प्राप्ति के लिए हिन्दुओं का संगठन करें।

अच्छा अब हम संगठन का बिगुल बजाते हैं। होशियार हो जाइए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सातवाँ अध्याय

स्वराज और हिन्दू संगठन

सन् १७७६ ईस्वी में नई दुनियां अमरीका की तेरह बस्तियों ने इंगलिस्तान के विरुद्ध स्वतंत्रता के युद्ध की घोषणा की। उस समय वहां के बसनेवालों की संख्या केवल तीस लाख थी। उन्होंने एक तन, एक मन, और एक प्राण होकर अपना संगठन किया। स्वतंत्रता क्या वस्तु है, उसका मूल्य कितना बड़ा है, इसे वे भली प्रकार जानते थे। निश्चित आदर्श, साहित्य, और सभ्यता रखने वाले इन मुट्ठीभर अमरीकनों ने भली प्रकार संगठित होकर बलशाली इंगलिस्तान के साथ टक्कर लेने की ठानी। ईश्वर भी अधिकारी को वर देते हैं। छ वर्ष तक जी जान से लड़ने के बाद अमरीकनों ने इंगलिस्तान को पछाड़ दिया और अपनी स्वाधीनता प्राप्त की। वही अमरीकन-संगठन "यूनाइटेड स्टेटस आफ अमरीका" के महाराष्ट्र की नींव बना। लाखों रूसी, जर्मन, फ्रान्सीसी, आयरिश, और इटालिन अमरीका में जाकर बसे। वे अपनी भाषा, अपना आदर्श, और अपना साहित्य अपने अपने देश में छोड़ गये और अमरीका में जाकर अमरीकन-संगठन के अनुगामी बन गये। अमरीकन भाषा, अमरीकन साहित्य और अमरीकन आदर्शों को उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और वे अमरीकन बनकर रहने लगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भला बिना नीव के किसी राष्ट्र की इमारत खड़ी हो सकती है? हम स्वराज्य तो चाहते हैं लेकिन हमने यह नहीं सोचा कि जब तक इस देश में इस देश की सभ्यता, इसके आदर्श, और इसके साहित्य के अनुसार स्वाधीनता प्राप्त करनेवाला ज़बर्दस्त दल संगठित न होगा तब तक स्वाधीनता की लड़ाई कदापि नहीं लड़ी जा सकती। भिन्न भिन्न आदर्श, सभ्यता और साहित्य रखनेवाले लोगों की एक जाति नहीं बना करती। अतएव यह परमावश्यक है कि हम स्वराज्य की लड़ाई लड़ने से पहिले अपने देश में एक ऐसा संगठित दल बना लें कि जिसमें दूसरे संप्रदायों के लोगों को अपनी ओर आकर्षण करने की शक्ति हो, जिसमें मस्तिष्क हो, जिसमें देश की सभ्यता का अभिमान हो और जो भारतवर्ष के गौरव के लिये मरना अपना अहो-भाग्य समझता हो। इस प्रकार के संगठन के बिना ईसाई मुसलमान और पारसी एक सूत्र में बंधकर देश के राष्ट्र का अंग नहीं बन सकते।

दूसरा उदाहरण देखिये। जर्मनी में पहिले कई रियासतें थीं जो आपस में एक दूसरे के साथ लड़ा करती थीं। उनकी आपस की लड़ाई के कारण विदेशी सदा जर्मनों को नुक़सान पहुँचाया करते थे। इस बात को बुद्धिमान बिस्मार्क ने अनुभव किया और प्रशिया, जो सब से बड़ी रियासत थी, का संगठन कर उसने बाकी रियासतों को उसके साथ बांधा,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्योंकि वलवान और उदार चित्त व्यक्ति के साथ सब की एकता हो सकती है। हिन्दुस्तान हिन्दुओं का देश है। इसकी सभ्यता बड़ी प्राचीन है। इस देश ने बड़े बड़े महापुरुष पैदा किए और आज भी इस गिरी हुई अवस्था में संसार का सब से श्रेष्ठ महापुरुष महात्मा गांधी इसी देश की प्राचीन सभ्यता का फल स्वरूप है, इसलिये यह बात स्पष्ट है कि जिन हिन्दुओं का यह देश है, जिनकी रगों में अपने प्राचीन बुजुर्गों का खून है, जिनके ऋषि मुनियों के रक्त से इस देश की चप्पा चप्पा जमीन सींची हुई है, जहाँ उनकी मोक्षदायिनी भागीरथी बहती हैं, जहां उनके परम पुनीत तीर्थस्थान हैं, जिनकी संख्या आज भी देश में सर्वप्रधान बाईस करोड़ है, जिनके पास मस्तिष्क है, जिनके हाथों में देश का व्यापार है, जिनमें वीर लड़नेवाले लोग मौजूद हैं और जो आज भी स्वाधीनता के लिये सब से अधिक बलिदान करने पर तुले हुए हैं, वे ही हिन्दू स्वराज्य के सच्चे दावेदार हैं, उन्हीं के सिर पर स्वराज्य की लड़ाई की जिम्मेदारी है; उन्हीं के संगठन पर स्वराज्यप्राप्ति अवलम्बित है; उन्हीं के बलवान होने से देश बलवान होगा और वे ही अपना संगठन कर चुम्बक पत्थर बनकर, मुसलमान, ईसाई, और पारसियों को अपनी तरफ़ खींच सकेंगे।

हिन्दू संगठन स्वराज्य की बुनियाद है। यह हिन्दू मुसलमानों के ऐक्य का स्तम्भ है। विना हिन्दू संगठन के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुसलमान, एशिया की मुसलमानी रियासतों से दोस्ती करना नहीं छोड़ सकते। हिन्दुओं के संगठन के न होने से ही मुसलमान देशद्रोही बने हुए हैं। मुसलमान और ईसाइयों के लिये मुख्य प्रश्न आत्मरक्षा का है। बिखरे हुए हिन्दू उनकी रक्षा नहीं कर सकते। इसलिये मुसलमान, तुर्की और अफ़ग़ानिस्तान की ओर देखते रहते हैं और ईसाई ऐंगलोइंडियन बनकर इंगलिस्तान से नाता जोड़ते हैं। संसार में कमज़ोर को कोई नहीं पूछता और बलवान का प्रभाव सब पर पड़ता है। इसलिये स्वराज्य का प्रश्न मुख्यतया हिन्दुओं का प्रश्न है। प्रत्येक हिन्दू नर नारी को इस सम्बन्ध में अपना दायित्व भली प्रकार समझ लेना चाहिये। मुसलमानों के साथ दोस्ती करने के लिये उनकी खुशामद करते फिरना केवल हीजड़ापन है; शेरों के बच्चे गीदड़ों की माद में पलकर अपने आपको गीदड़ समझ बैठे हैं। मुसलमानों का ख़याल हमें इस समय बिलकुल छोड़ देना चाहिए और अपने प्यारे देश की स्वाधीनता के लिए हिन्दुओं का बलशाली संगठन करना चाहिये। हिन्दुओं की कमज़ोरी तीस करोड़ लोगों को गुलाम बनाये हुए है। नौकरशाही इस कमजोरी का सोलह आना फ़ायदा उठाती है; स्वार्थी, बे-असूले मुसलमान लीडर हिन्दू मुसलमानों को आपस में लड़ाते रहते हैं। हिन्दुओं की यह कमज़ोरी क्या है? हिन्दुओं के पास धन है, बुद्धि है,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदमी हैं; केवल कमी संगठन की है और वह संगठन बिना सामाजिक क्रान्ति के हो नहीं सकता। इस बात को हम अधिक स्पष्ट करते हैं।

हम पहिले कह चुके हैं कि योरुप में राष्ट्र-धर्म का प्रादुर्भाव हुआ है और उसके अनुसार समाज में सब सदस्यों के बराबर अधिकार हो रहे हैं। जो समाज उदार जीवन रखता है, जिसके सदस्य एक दूसरे के साथ बिना रोक टोक खुले तौर पर मिलजुल सकते हैं, जिनमें आपस में ऊंचनीच के सामाजिक बन्धन नहीं हैं वही समाज सुसंगठित कही जाती है। योरुप में समाज का संगठन इसी ढँग पर हुआ है। पहिले वहां भी ऊंच नीच के भाव थे, निरंकुशता का राज्य था, ज़िमींदारों और पादरियों की तूती बोलती थी, यूरुप के देशों ने उन बन्धनों को ढीला कर राष्ट्र-धर्म का सहारा लिया है, इसी से उनके बल की वृद्धि हुई है। संगठन के अर्थ यह हैं कि मशीन का हर एक कल पुरज़ा पूरी शक्ति से काम दे और समाज के लिये उपयोगी बने। हिन्दू-समाज में शक्ति बहुत है लेकिन उसका कुछ भी उपयोग हम नहीं ले सकते; सब ताक़त व्यर्थ नष्ट हो रही है। ब्राह्मणों में सैकड़ों प्रकार के ब्राह्मण, क्षत्रियों में सैकड़ों प्रकार के क्षत्री, वैश्यों में सैकड़ों प्रकार के वैश्य आपस में एक दूसरे के प्रति ऊंच नीच का भाव रखकर समाज को निर्बल बना रहे हैं और ऐसी दीवारें खड़ी कर ली हैं कि जिनके कारण हिन्दू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संगठन अत्यन्त कठिन हो गया है। संसार में गुलामी का इतिहास छोटे छोटे फिरक़ों और बिरादरियों की आपस की ऊंच नीच तथा फूट का इतिहास है। जिस जाति में जितने अधिक ऐसे बन्धन हैं, जिसमें जितनी अधिक दीवारें हैं, वही जाति सब से अधिक गुलामी के पंजे में जकड़ी रहती है, और वह बड़ी से बड़ी संख्या रखने पर भी, ऊंच नीच के भावों से रहित, कम बन्धन रखनेवाली छोटी जाति की गुलाम बन सकती है। आज इस वर्तमान युग में संघ ही प्रधान है, यही शक्ति का पुंज है, अतएव स्वराज्यप्राप्ति की इच्छा रखनेवाले हिन्दुओं को यह जान लेना चाहिए कि वे मौजूदा जात पांत के बन्धनों को रखकर, छुआ छूत की ज़ंजीरों में बँधे हुए, स्वराज्य हासिल नहीं कर सकते। हिन्दू समाज में प्रचन्ड क्रान्ति किये बिना हिन्दू संगठन नहीं हो सकता। वह क्रान्ति कैसे हो? क्रान्ति की फौज में कौन भर्त्ती हो सकता है? क्रान्ति के सैनिक का स्वरूप क्या है? अब हम आगे इन प्रश्नों पर विचार करेंगे।

आठवाँ अध्याय

क्रान्ति

मेरा नाम क्रान्ति है। मैं पुरानी जर्जर, सड़ी गली और दक़ियानूसी बातों को जलाकर भस्म कर देती हूं, और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवजीवन का संचार करती हूं। मैं अविरत यौवन का मूल कारण हूँ, और बुढ़ापे का नाश करती हूं। जहां मैं हूं वहीं ज़िन्दगी है; जहां मैं नहीं हूँ वहीं मौत है। समाज के अत्याचारों से पीड़ित दुखी लोगों के लिये मैं आशा का पुंज हूँ; मैं उनके अभ्युत्थान का सुखद स्वप्न हूँ। बुड्ढे मेरे डर से थर थर कांपते हैं और जवान मेरा सहर्ष स्वागत करते हैं, जहां मेरी सवारी जाती है वहां का कूड़ा-करकट सब साफ़ होजाता है और दैवी प्रकाश की ज्योति जगमगाने लगती है। मैं समाज की ज़ंजीरों को तोड़कर फैंक देती हूँ और सताई हुई आत्माओं को सान्त्वना प्रदान करती हूँ। मैं दलितों की ज़ंजीरों को तोड़कर उन्हें उनके अधिकार दिलानेवाली हूँ, और उन्हें अमृतसुधा पान कराती हूं।

मेरा नाम चन्डीभवानी है। मैं वर्तमान को मिटाकर भव्य भाग्यशाली भविष्य की रचना करती हूँ। यही जीवन का अनादि सिद्धान्त है और मैं उस अनादि नियम का पालन करती हूँ ताकि समाज में ताज़गी और नवीन स्फूर्ति आवे। मैं बसन्ती देवी हूँ। आंधी और तूफ़ानों द्वारा पुरानी चीज़ों को जड़ से हिलाकर मैं नये युग के रंग बिरंगे फूलों से संसार रूपी उद्यान को सुशोभित करती हूं।

मेरा नाम पापनाशिनी दुर्गा है। मैं समाज की सभी कुरीतियों को मिटानेवाली हूँ, क्योंकि वे स्वार्थी और पापी लोगों की चलाई हुई हैं। इन कुरीतियों का मूल पाप है,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और इनके फल भी पापों की वृद्धि करनेवाले हैं। इन कुरीतियों से समाज में घोर अत्याचार होता है, और बड़े बड़े अनर्थ इनके द्वारा हो रहे हैं।

सावधान हो जाओ। तुम्हारे पापों का घड़ा भर गया है। मैं पापियों को दंड देनेवाली विकराल क्रान्ति हूं। पापों की फसल काटने का समय आगया; ऊंच नीच के भावों को मिटा देने का समय आगया; अस्पृश्यता के नाश करने का समय आगया, जात पांत के तोड़ने का समय आगया; मेरा क्रान्ति का बिगुल है; मेरा संगठन का शंख है। मैं सब प्रकार के पाखण्डों का नाश करनेवाली हूं; सब प्रकार के मिथ्या विश्वासों को मिटा देनेवाली हूँ।

मैं गुरुडम की घोर शत्रु हूँ। पाखण्डी मौलवी मुल्लाओं और धूर्त पंडितों और पुरोहितों के लिये तो मैं भीषण काल हूं। मैं इल्हाम के प्रभुत्व को छिन्न भिन्न कर बुद्धिवाद का साम्राज्य स्थापित करती हूँ। मैं एक के बहुतों पर शासन करने के अधिकार को समूल नष्ट कर दूंगी; मैं निकम्मे, पेटू और मज़हब के ठेकेदारों की हकूमत को मिट्टी में मिला दूंगी; मैं पासविक शक्ति के घमंड को चूर चूर कर, सदाचार और सच्चरित्रता का राज्य स्थापित करती हूं, और प्रकृति को आत्मा का दास बनाती हूं। बड़ी बड़ी तोंदवाले, घमंडी और मुफ्तख़ोरे "बड़े आदमियों" के ज़ुल्मों का मैं अन्त कर दूंगी और मिहनती, ईमानदार कर्मकारों को बड़ा बना-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऊंगी ; शास्त्र का नाम लेकर लूटनेवाले ब्राह्मणों के प्रभाव को मिटा देना मेरा काम है। प्रत्येक स्त्री और पुरुष को मैं स्वाधीन बनाती हूं। सब कोई अपने लिये स्वयं सोचना सीखे और अपने पांव के बल खड़ा होने की आदत डाले। मैं स्वावलम्बन की शिक्षा देती हूं और प्रत्येक व्यक्ति को अपना आप स्वामी बनाती हूं, क्योंकि स्वावलम्बन ही स्वाधीनता है।

मैं स्वतंत्रता की देवी हूँ। सब प्रकार की गुलामी की बेड़ियों को मैं काटनेवाली हूँ। मैं सब को स्वाधीन बनाती हूं, क्योंकि स्वाधीनता ही पवित्रता है और स्वाधीनता से बढ़कर कोई श्रेष्ठतम पदार्थ नहीं। मैं जात पांत के बन्धनों को तोड़कर समाज को स्वाधीनता का अमृत पान कराऊंगी ; छोटे छोटे भेदों को मिटाकर एक दूसरे को आपस में मिलाऊंगी ; सदियों से सड़े हुए रुधिर को दूर कर समाज की नाड़ियों में शुद्ध रक्त का संचार करूंगी और सबको मिलाकर एक राष्ट्र का संगठन करूंगी।

मैं कर्मयोग की प्रवर्त्तिका हूं। जन्म के ढकोसले का सत्यानाश करती हूं ; गुण और कर्म से समाज को चलाती हूं, योग्य को सिंहासन पर बैठाती हूं ; और आलसी अयोग्य को नीचे गिरा देती हूं। मैं कर्मों का फल देनेवाली प्रारब्ध हूं। पुरुषार्थी और उद्योगी मनुष्य मुझसे आशीर्वाद पाते हैं ; अकर्मण्य और हाथ पर हाथ धर कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बैठनेवाले मेरे चांटे खाते हैं। मैं जन्म के आधार पर स्थापित वर्णाश्रम धर्म का नाश कर दूंगी और इसके स्थान पर कर्मयोग की कसौटी द्वारा वर्णाश्रम धर्म की स्थापना करूंगी। मैं पापों के बहानेवाली श्री गंगाजी की भयंकर बाढ़ हूं। जो पापी पुजारी पुरोहित और पंडित मेरे मार्ग में खड़ा होगा, उसे मैं गंगासागर में ले जाकर सदा के लिये लोप कर दूंगी।

मेरा नाम सामाजिक क्रान्ति है। मैं सैकड़ों वर्षों के रिवाजों को हटाने आई हूं; मैं जन साधारण में लकीर के फ़क़ीर रहने की आदत को मिटाने आई हूं; मैं मुट्ठी भर आदमियों के बहुतों पर शासन करने के अधिकारको हटाने आई हूं; मैं ईश्वर के प्रतिनिधि बननेवाले पंडों का रुतबा घटाने आई हूं; मैं जन साधारण में धर्म का सच्चा सरल मार्ग बताने आई हूं। समाज में सब के साथ न्याय और किसी की खास रिआयत न हो, यह मेरी घोषणा है। मैं साम्यवाद की प्रचंड प्रचारिका हूं। मेरी समता, स्वतंत्रता और भ्रातृभाव का झंडा है। मैं उस व्यवस्था का नाश कर दूंगी जिसके अनुसार करोड़ों आदमी मुट्ठी भर आदमियों के दास बने हुए हैं और वे मुट्ठी भर आदमी धन के गुलाम बनकर समाज में व्यभिचार फैलाते हैं। मैं समाज को ऐसी सब बुराइयों से साफ कर देना चाहती हूं जो एकता की बाधक हैं,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और सत्य एवं न्याय का राज्य क़ायम नहीं होने देतीं। मैं विधवाओं के आँसुओं को पोंछने आई हूं और उनको हर्ष-सम्वाद सुनाने आई हूं। अबलाओं को सतानेवाले आततायी अब ख़बर्दार हो जायं; मेरा डंडा बड़ा भयंकर है। मैं अनाथ दुखियों की रक्षा करूंगी और दुष्टों को कठोर दंड दूंगी।

अत्याचार से पीड़ित लोगो उठो! अछूत बच्चो उठो! विधवाओ चैतन्य हो जाओ! मेरे आनन्द-संदेश को सुनो। मैं अब पुरानी सामाजिक मशीन को तोड़ फोड़ कर नया संगठन करूंगी और सब के लिये उन्नति का द्वार खोलूंगी। जो मेरी सेना में भर्ती होकर मेरे सिपाही बनेंगे, उन्हें स्वर्गीय सुख की प्राप्ति होगी। इस लिये हर्ष-नाद करते हुए सब प्रकार की शंकाओं को छोड़ कर मेरे अनुगामी बनो। मेरे नज़दीक कोई बड़ा छोटा नहीं. मैं सबको बराबर का दर्जा देती हूं। जो मेरे साथ चलकर, मेरी फौज के सिपाही बनकर मनुष्य समाज की उन्नति और उसके अभ्युत्थान में मेरी मदद करेंगे वे ही अपने जीवन को सार्थक कर स्वर्गीय आनन्द की प्राप्ति करेंगे, और जो मेरा विरोध कर मेरे रास्ते में रोड़े अटकायेंगे उन्हें मैं निर्दयता से कुचल डालूँगी, क्योंकि मैं पापों का संहार करनेवाली, दुष्टों का दलन करनेवाली, पुरानी जर्जरित पद्धतियों को मिटा देनेवाली क्रान्ति हूं। मैं जीवन,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्फूर्ति, और उन्नति का स्रोत हूं। मैं पहिले प्रलय मचाकर पीछे नई सृष्टि की रचना करती हूं।

नवाँ अध्याय

क्रांति की भर्त्ती

हिन्दू समाज में संगठन की परमावश्यकता है। हिन्दू-संगठन के बिना स्वराज्य भी नहीं मिल सकता। उस संगठन के लिये समाज में ज़बर्दस्त क्रांति होनी चाहिए, क्योंकि सड़े गले रिवाजों को रखकर, झूठी और मक्कारी से भरी हुई कुप्रथाओं की रक्षा करते हुए, अस्वाभाविक वर्णाश्रम के सहारे, और सामाजिक विरोधों का भय रखकर हम कभी भी अपनी बीमारी का इलाज नहीं कर सकते। बाईस करोड़, भिन्न भिन्न सम्प्रदायों से घिरे हुये, सैकड़ों प्रकार के उपवर्णों से बटे हुए हिन्दू समाज का हम संगठन, बिना किसी लहर को पैदा किये, बिना किसी आन्दोलन को लाये, बिना किसी मतभेद के, बिना कोई विरोध खड़ा किये करना चाहते हैं! ऐसा ख़याल सिवाय पागलपन के और कुछ नहीं। हिन्दू समाज में घोर आन्दोलन, बड़ी हलचल के बिना किसी प्रकार के संगठन का ख्याल स्वप्नवत है। इसलिए हम समाज में क्रांति करना चाहते हैं। जो लोग यह समझते हैं कि इससे घरेलू युद्ध होगा, उनसे हम निवेदन करेंगे कि ऐसा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युद्ध करने योग्य है और उसीके अन्दर हिन्दू-संगठन का रहस्य छिपा हुआ है। समाज के निकम्मे, जर्जरित और बोदे अंगों को साथ लेकर जो जीना चाहते हैं उन्हें हम दूर से नमस्कार करते हैं और अपने इस दुखी देश की गुलामी को दूर करने के लिए सब से पहिले अपने समाज के मिथ्या विश्वासों और कुप्रथाओं की गुलामी को दूर करने का आन्दोलन उठाते हैं। हिन्दू समाज में क्रान्ति करने का समय आ गया है, और वह क्रान्ति शास्त्र के नाम पर नहीं, बल्कि देश की स्वाधीनता के नाम पर की जायगी। वह क्रान्ति बुद्धिवाद का साम्राज्य स्थापित करने के लिये की जायेगी, वह क्रांति साम्यवाद के आदर्शों के लिए की जायगी; वह क्रांति सम्प्रदायकता के भेदों को मिटाकर राष्ट्र-धर्म के प्रचारार्थ की जायेगी; इसलिये हम क्रांति का बिगुल बजाते हैं और इस फौज में भर्ती होनेवालों को दावत देते हैं।

क्रांति की फौज में कौन भर्ती हो सकता है? क्या इस में उम्र की शर्त है? क्या इसमें चौड़ी छाती की ज़रूरत है? क्या इसके लिए लम्बा क़द चाहिए? क्या इसमें जवान ही भर्ती हो सकते हैं? क्या क्रांति की फौज में स्त्रियों के लिये स्थान नहीं है? हम इन सब प्रश्नों के उत्तर में बड़ी बुलन्द आवाज़ से घोषणा करते हैं कि क्रांति की फौज में सब के लिए स्थान है; क्या बच्चा, क्या बुड्ढ़ा, क्या स्त्री, क्या पुरुष सभी इस फ़ौज के सैनिक हो सकते हैं। इसमें भर्ती होने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के लिए किसी कालेज या स्कूल की परीक्षा पास करने की आवश्यकता नहीं। क्रांति-देवी अपने सैनिकों से सच्चा हृदय मांगती है। शुद्ध हृदय वाले, निर्भय और विरोधों का मुक़ाबिला करनेवाले सैनिक चाहियें। जैसे लड़ाई की फौज में भर्ती होनेवाले सिपाहियों को उनकी योग्यता, रुचि और हालात के मुताबिक़ काम दिया जाता है इसी प्रकार हिन्दू समाज में क्रांति करनेवाले सैनिकों से भी काम लिया जायेगा। सब एक ही प्रकार का काम नहीं कर सकते। क्रांति करने वाले सैनिकों को तीन महामंत्र अपने हृदय-पट पर लिख लेने होंगे और जो काम वे करेंगे उसे उन तीन महामंत्रों को लक्ष्य में रखकर करेंगे। वे मंत्र ये हैं —

१—भारतवर्ष के गौरव, उसकी सभ्यता और उसके साहित्य की रक्षा करना प्रत्येक हिन्दू का परमधर्म है।

२—भारतवर्ष को स्वाधीन किए बिना उसकी सभ्यता, उसके साहित्य और उसके गौरव की रक्षा नहीं हो सकती। इसलिए भारतवर्ष को स्वाधीन करना प्रत्येक हिन्दू का परमधर्म है।

३—स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए हिन्दू-संगठन ही एक मात्र साधन है और उस संगठन के लिये हिन्दू समाज में क्रांति की परमावश्यकता है। अतएव प्रत्येक सच्चे हिन्दू का कर्तव्य है कि वह हिन्दू समाज में क्रांति करे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बस, इन तीन बातों को अपने लक्ष्य के सामने रखने वाला कोई भी हिन्दू क्रांति की फौज में भर्ती हो सकता है और हिन्दू-संगठन का सच्चा सेवक बन सकता है। उपरोक्त तीन महामंत्रों में से पिछले दो का आशय तो आसानी से समझ में आसकता है पर पहिले के विषय में स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, क्योंकि वही सर्वप्रधान उद्देश्य है। अतएव उसके सम्बन्ध में हमें अपने विचार स्पष्ट रूप से बतलाने चाहियें। अगले अध्याय में हम इसी की विवेचना करेंगे।

दसवाँ अध्याय

सैनिक का स्वीकृत मत

हिन्दू समाज में क्रान्ति करनेवाले हिन्दू-संगठन के सिपाही को अपने सांप्रदायिकता के सिद्धान्तों को गौण रखकर क्रान्ति के महामंत्रों को अपना स्वीकृत-मत (Creed) बनाना आवश्यक है। साम्प्रदायिकता यदि इस स्वीकृत-मत के विरोध में पड़े तो, उसे छोड़ देना सैनिक का परम कर्तव्य होगा, क्योंकि परस्पर विरोधात्मक साम्प्रदायिक सिद्धान्त रखते हुये—देश को हानि पहुँचानेवाले, संगठन के शत्रु सिद्धान्तों को रखते हुए—कोई भी सैनिक हिन्दू-संगठन की पुनीत प्रगति को सफल नहीं बना सकता, इसीलिए सबसे पहिला महामंत्र यह है कि भारतवर्ष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के गौरव, उसकी सभ्यता और उसके साहित्य की रक्षा का भाव हिन्दुस्तान के प्रत्येक निवासी के हृदय में सर्वोच्च स्थान पावे। हम भारतवर्ष की प्रतिमा को अपने हृदयमन्दिर में स्थान देकर उसकी पूजा करें और उसको अपना आराध्यदेव मानें। उसके हितमें अपना हित समझें और जिन कारणों से—साम्प्रदायिक सिद्धान्तों से—उसका अहित होता है, उसके गौरव की क्षति होती है, उन्हें उनका सर्वथा त्याग कर देना चाहिये। भारतवर्ष के गौरव की रक्षा से तात्पर्य क्या ?

जैसे एक व्यक्ति का स्वत्वाभिमान (Selfrespect) होता है, जैसे व्यक्ति में आत्मसम्मान उसके लिये बड़े गौरव की चीज़ है, इसी प्रकार देश या राष्ट्र का अपना आत्मसम्मान होता है। गुलाम जाति के लोगों में देश अथवा समाज को एक व्यक्ति के रूप में देखने की आदत नहीं होती, क्योंकि समष्टी के स्वार्थों की रक्षा का दायित्व उनके सिर पर नहीं होता; वे केवल अपने अपने स्वार्थ के लिये जिया करते हैं; उनमें अपने गौरव की रक्षा का भाव नष्ट होजाता है और दूसरों को लातें, गालियां वे सिर झुकाकर सहन कर लेते हैं; अतएव गुलाम लोगों के लिये देश के गौरव की रक्षा की भावना बिलकुल नई चीज़ होती है। भारतवर्ष के गौरव की रक्षा के अर्थ यह हैं कि हम अपने इस प्यारे देश को संसार में आदरणीय स्थान दिलावें। जब विदेशी इस देश का नाम उच्चारण करें तो उच्चारण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के साथ ही इसकी महत्ता और इसके आदर के भावों से उनका मस्तक झुक जाय। यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमारे पूर्वजों ने अपने देश को संसार में गौरव दिलाने की सब सामग्री एकत्रित कर रक्खी है और हम केवल अपने संगठन से अपने देश का मस्तक ऊंचा कर सकते हैं। यह भी हमारे लिये बड़े पुण्य की बात है कि प्रकृतिने हमारे देश को इस कौशल से बनाया है कि इसमें हमारे लिये सब प्रकार के सुखों का समावेश कर दिया है। ऐसे देश को पाकर यदि हम उसके गौरव की रक्षा की भावना को न समझें तो इसका कारण केवल हमारी सदियों की दासता का मैल है। भारतवर्ष के गौरव से सैनिक के हृदय में तत्काल यह भाव उदय होना चाहिये कि उसका प्राचीन सभ्यता का देश, जिसने संसार को सभ्यता सिखलाई है, फिर नये सिरे से वैसा ही ऊंचा स्थान संसार की सभ्य जातियों में पावे और वह अपनी सारी शक्तियों को लगाकर उसको उस ऊंचे सिंहासन पर बैठाने का यत्न करेगा। मेरे देश को बदनाम करनेवाला, उसकी इज़्ज़त को घटानेवाला, उसको पददलित करनेवाला, मेरा शत्रु है और मैं जी जान होमकर इस प्रकार के शत्रुओं से अपने देश की रक्षा करूंगा। इस प्रकार के भाव और ऐसा पवित्र उत्साह संगठन के सैनिक में पैदा होना चाहिये कि वह उठते बैठते, चलते-फिरते, यही कहे,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जब तक मेरा देश सम्मान के उच्च शिखर पर नहीं पहुंचेगा, जब तक यह संसार की स्वतंत्र जातियों में गौरवान्वित नहीं होगा, तब तक मेरा जीवन सार्थक नहीं हो सकता।"

दूसरी बात सभ्यता की रक्षा की है। हिन्दू-संगठन के सैनिक को यह समझ लेना चाहिये कि उसकी सभ्यता मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र, भगवान बुद्ध, विरक्त महावीर और वीर शिरोमणि गुरू गोविन्दसिंह के बतलाये हुए परम पवित्र सिद्धान्त त्याग (Renunciation) के आधार पर खड़ी है, और जो यह मानती है कि त्याग ही स्वतंत्रता है, और संयम ही स्वाधीनता है। जो अपने अनुगामी भक्त को यह उपदेश देती है —

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिणा मार्त्त नाशनम्॥

अर्थात् मुझे राज्य नहीं चाहिए, मुझे स्वर्ग दर्कार नहीं, मुझे दूसरे जन्म की ज़रूरत नहीं, मेरे अन्तःकरण की अभिलाषा यह है कि दुखी, सन्तप्त, और पीड़ित प्राणियों के कष्टों की निवृत्ति हो। हिन्दू सभ्यता, सेवा और बलिदान के धर्म को मानती है, केवल हिन्दुओं के लिये ही नहीं, बल्कि सबके लिये।

लेकिन वह सभ्यता दुष्टों को दंड देना भी सिखलाती है। वह यह कहती है, "जो तुम्हारे शान्तिमय ढंगों से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्याय की बात को नहीं माने उसे तुम, द्वेष छोड़कर, उचित दंड दो ताकि उसका सुधार हो जाय।" यह क्षात्रधर्म का संदेश हिन्दू सभ्यता है और वह अपने भक्तों से आशा करती है कि समाज की न्यायोचित मर्यादा को कायम रखने के लिए, समाज में शान्ति रखने के लिये, समाज के सब लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिये धर्मात्मा और न्यायपरायण सदस्यों का परम कर्तव्य है कि वे क्षात्र-धर्म का अभ्यास करें और समाज में आतंक पैदा करने वाले दुर्व्यसनी खलों की कुबासनाओं को रोकने का यथोचित प्रबन्ध करें। हिन्दू सभ्यता का विशेष संदेश यह है कि वह धन कमाने के विरुद्ध नहीं, पर धनको समाज में गौरव का स्थान नहीं देती; वह यह मानती है कि राष्ट्र की शक्ति प्रचुर धन से नहीं बढ़ती बल्कि सच्चरित्रता, सेवा धर्म के माननेवाले क्षत्रियों से बढ़ती है। धन कमाओ लेकिन उसे धर्म के काम में ख़र्च करो तभी समाज में सुख और शान्ति की वृद्धि होगी।

तीसरी बात साहित्य की रक्षा की है। किसी देश का साहित्य, उस राष्ट्र की सम्पत्ति होता है; साहित्य जाति का मस्तिष्क है; वह जाति की अमूल्य जायदाद है; वह जाति के प्रत्येक काल की सभ्यता का इतिहास है। साम्राज्य आते हैं चले जाते हैं, विजेता अपने नाशकारी काम कर मिट्टी में मिल जाते हैं; मुसलमानों की ज़बर्दस्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सलतनत ख़ाक में मिल गई और अंग्रेज़ भी इसी प्रकार यहां पर सदा नहीं रह सकते, पर देश की सभ्यता और साहित्य स्थायी वस्तुएं हैं। इन्हें हम अमानत के तौर पर पिछले बुज़ुर्गों से लेते हैं और उसमें वृद्धिकर अपनी सन्तान को दे जाते हैं। यह सिलसिला बराबर क़ायम रहता है। इतिहास में पुस्तकालयों और साहित्य को जलानेवाले मज़हबी दीवाने सबसे निकृष्ट और पतित कहे जाते हैं; वे ही म्लेच्छ और काफ़िर हैं, क्योंकि जली हुई किताबें करोड़ों रुपये के मोती देने पर भी फिर हाथ नहीं आ-सकतीं। भारतवर्ष की सभ्यता जैसी पुरानी है वैसे इसका साहित्य भी प्राचीन है। हिन्दुस्तान में रहनेवाले प्रत्येक निवासी का यह कर्तव्य है कि वैदिक काल से लेकर अब तक के साहित्य को अपने बुज़ुर्गों की जायदाद समझे; उसमें से श्रेष्ठ ग्रन्थों को पढ़े, अपनी सन्तान को पढ़ावे और उसकी इस प्रकार रक्षा करे कि जैसे ख़ज़ाने का सिपाही बन्दूक़ ताने हुए मुस्तैदी से खज़ाने की रक्षा करता है।

हिन्दू संगठन के उद्देश्य से समाज में क्रान्ति करनेवाले सैनिक को उस साहित्य में से ऐसे ग्रन्थों, वाक्यों और श्लोकों को निकालकर गंगा जी में बहा देना होगा जो हिन्दू-संगठन के विघातक हैं, जो भारतवर्ष का अनादर करानेवाले हैं जो हिन्दुओं को सदा के लिये गुलामी में रखने वाले हैं। सैकड़ों वर्षों से हिन्दू जाति का जीवन अस्वाभा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विक हो जाने के कारण, गुलामी में फँसा रहने के कारण बहुतसा कूड़ाकचरा पुस्तकों के आकार में हमारे साहित्य में मिल गया है, गेहूँ की फ़सल को हानि पहुँचाने वाले ऐसे घास फूस को दूर किए बिना हिन्दू-संगठन नहीं हो सकता । भारतवर्ष के गौरव, उसकी स्वाधीनता और उसके बच्चों के संगठन में बाधा देनेवाली सभी बातों, पुस्तकों, सम्प्रदायों, और सिद्धान्तों के त्याग करने का समय अब आगया है। संगठन के सिपाही को चैतन्य हो कर अपना कर्तव्य निश्चित कर लेना चाहिए।

क्रान्ति के महामंत्र को इतनी व्याख्या करने के बाद अब हम संगठन के साधनों का स्वरूप क्रमशः दिखलाते हैं।

ग्यारहवाँ अध्याय

सैनिक का स्वरूप

स्वाधीनता देवी के—क्रान्ति माता के—उपासक संगठन के सिपाही का स्वरूप क्या होना चाहिए? सबसे पहिली वस्तु जिसे आंख देखती है, वह है सैनिक का भेष । सैनिक का भेष ही उसके कर्तव्य का द्योतक है इसलिए संगठन के सिपाही को स्वदेशी वस्त्र पहिनने चाहियें। अपने देश का धन अपने देश में रहना उचित है, यह मोटी बात जो नहीं जानता वह भला क्रान्ति का उपासक कैसे हो सकता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है, उससे हिन्दू-संगठन का क्या काम हो सकता है। विदेशी वस्त्रों से सुसज्जित लोग यदि हिन्दू-संगठन का दावा करें तो उन्हें केवल पूरे पाखंडी समझना चाहिए। संगठन का सिपाही यदि शुद्ध खादी के वस्त्र पहिनता है तो उसका तो कहना ही क्या परन्तु जो देश के धन से स्थापित कल कारखानों के बने हुए कपड़ों का उपयोग करता है वह भी क्रान्ति की सेना में भर्ती हो सकता है। हम देश के कला-कौशल की उन्नति के पक्षपाती हैं, अतएव सैनिक को सबसे पहिले अपना भेष स्वदेशी बनाना आवश्यक है।

दूसरी बात है भाषा की। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतवर्षके भिन्न भिन्न प्रांतोंके लोग अपनी अपनी प्रांतीय भाषा द्वारा बहुत शीघ्र अपनी जनता में सामाजिक क्रान्ति के भावों को फैला सकते हैं, और उन्हें ऐसा करना ही होगा, पर भारत के तेईस करोड़ हिन्दुओं को सुसंगठित कर स्वराज्य की लड़ाई के लिए तैयार करने के उद्देश्य से जो लोग सामाजिक क्रान्ति करना चाहते हैं उन्हें राष्ट्र-भाषा हिन्दी सीखना आवश्यक होगा ताकि सब सैनिक मिलकर काम कर सकें इसलिए हिन्दी भाषा, संगठन के सिपाही की राष्ट्र-भाषा होगी और इसका प्रचार करनेवाला भी संगठन की सेवा करेगा। ईश्वर की कृपा से भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में हिन्दी का प्रचार होता चला जा रहा है और हम बिना कठिनाई के इस भाषा को सीख सकते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तीसरी बात है शारीरिक स्वतन्त्रता की। जो सैनिक—चाहे वह स्त्री हो या पुरुष—संगठन की सेवा करना चाहता है उसके लिये क्षात्र-धर्म मुख्य चीज़ है। क्षात्र-धर्म के व्रत से दीक्षित हुए बिना कोई सैनिक नहीं हो सकता, इसलिए क्रान्ति के सैनिकों को क़वायद के तौर पर नित्य प्रति व्यायाम करना आवश्यक है। क्रान्ति की फ़ौज में भर्ती होनेवाली प्रत्येक बहिन को अपने पास एक ऐसा चाक़ू रखना पड़ेगा जिसे वह अवसर पड़ने पर काम में ला सके। उस चाक़ू की बनावट खुखरी के ढंग की होनी चाहिये जिसे फ़ौरन उसके घर से निकालकर उपयोग में लाया जा सके, और उस बहिन को १५—२० मिनट रोज़ उस चाक़ू को चलाने का अभ्यास करना होगा, और वह सहज में ही लौकी, काशीफल और तरबूज़ आदि फलों में भोंकने के अभ्यास से हो सकता है। हिन्दू औरतें प्रायः बदमाशों का सामना पड़ने पर रोने, हाथ जोड़ने और ईश्वर की दुहाई देने लग जाती हैं। यह उनकी बड़ी भारी भूल है। जो नरपिशाच ऐसे घृणित कुकर्मों के करने पर उद्यत हो जाते हैं उनमें दयामया और ईश्वर की भावना का लेशमात्र भी नहीं रह जाता, वे तो साक्षात शैतान होते हैं, ऐसे शैतानों का सामना करने के लिए वीरता और साहस की आवश्यकता है। अच्छा तेज़ चाक़ू हाथ में लेकर जिस समय कोई देवी ऐसे अधम पर हमला करेगी तो उस पापी के छक्के छूट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जायेंगे। ऐसे दुष्ट लोग केवल गुन्डे होते हैं, उनमें बहादुरी बिलकुल नहीं होती, थोड़े से मुक़ावले में उनके हाथ पांव फूल जाते हैं, अतएव संगठन में भर्ती होनेवाली देवियों का यह परम धर्म है कि वे सतीत्वरक्षा के लिये शस्त्र धारण करें। वे इसी रूप में संगठन की बड़ी सहायता कर सकती हैं और अपने पुरुषों का उत्साह बढ़ा सकती हैं।

पुरुषों को क्षात्र-धर्म की पूरी दीक्षा लेनी चाहिए और प्रत्येक उपयुक्त उपाय से अपनी शारीरिक स्वतन्त्रता बढ़ानी चाहिए। दस बरस के लड़के से लेकर सत्तर वर्ष के बूढ़े तक संगठन की फौज में भर्ती हो सकते हैं और वे क्षात्र-धर्म का प्रचार कर हिन्दू समाज को शक्तिशाली बना सकते हैं। हिन्दू समाज को क्षात्र धर्म से दीक्षित करना है, उसका बनियांपन निकालकर उसे वीर स्वत्वाभिमानी बनाना है। तेईस करोड़ की संख्या में कम से कम पांच करोड़, जान को हथेली पर रखनेवाले हिन्दू सैनिकों की आज हमें ज़रूरत है। वे सैनिक किधर कूच करेंगे? उनका धावा किस पर होगा? वे कौन कौन सी लड़ाइयां लड़ेंगे? अब हम क्रान्ति के कर्मक्षेत्र में अपने सैनिकों को ले जाकर युद्ध का विगुल बजाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बारहवाँ अध्याय

छुआ छूत का भूत

क्रान्ति के सैनिकों का सब से पहिला धावा छुआ छूत के भूत की गढ़ी पर होगा। शौच (पवित्रता) के उच्च सिद्धान्त को सामने रखकर हिन्दू समाज के व्यवस्थापकों ने आचार-धर्म की मर्यादा समाज में स्थापित की थी ताकि लोग प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेना सीखें और हृदय की शुद्धि सदगुणों के द्वारा करें। वे cleanliness is God-liness, इस सुन्दर सिद्धान्त को मानते थे। आचार की शुद्धि परमात्मा के पास पहुँचाती है, इस नियम के अनुसार वे चलते थे। मुसलमानों के भयंकर अनाचार के समय हिन्दू समाज के आचार धर्म ने छुआ छूत का रूप धारण कर लिया। उस छुआ छूत का प्रभाव जनता पर इतना अधिक पड़ा कि वे उसे ही हिन्दू धर्म का स्वरूप मानने लगे और सामाजिक उत्थान के धार्मिक सिद्धान्तों को उन्होंने बिल्कुल भुला दिया। हिन्दू समाज में पूर्ण निरंकुशता पाकर छुआ छूत के भूत ने बड़ा निर्दयता से समाज का शासन आरम्भ किया। लाखों रोती विलखती आत्माओं को थोड़े से अपराध पर इसने विधर्मियों के हाथ सौंप दिया। राज्य की सत्ता विधर्मियों के हाथ में होने से छुआ छूत के भूत के शासन की कड़ाई और भी बढ़ती गई। विधर्मियों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने सैकड़ों प्रकार के प्रलोभनों द्वारा हिन्दू बच्चों को हथिया लिया। परिणाम यह हुआ कि सुन्दर सरल सिद्धान्तों द्वारा सुसंगठित हिन्दू समाज धीरे धीरे अपने ही कड़े बन्धनों द्वारा कमज़ोर और टुकड़े टुकड़े हो गया; उसमें सैकड़ों प्रकार के उपवर्ण खड़े हो गये; हज़ारों क़िस्म के भेद भावों ने हिन्दू समाज को ग्रस लिया; अस्पृश्यता की विषम व्याधि से समाज पीड़ित हो उठा, इस प्रकार छुआ छूत का भूत हिन्दू समाज का भयंकर द्रोही सिद्ध हुआ।

इतिहास हिन्दुओं की गुलामी का मुख्य कारण आपस की फूट बतलाता है। भला उस समाज में फूट क्यों न घर करले जिसमें छुआ छूत के अस्वाभाविक भेद हों। जो समाज वर्णों, उपवर्णों, जातियों, और उप-जातियों में इस प्रकार बटा हुआ हो कि एक दूसरे के हाथ का पानी भी न पी सके, ऐसे समाज के लोगों में साधारण से साधारण कारण पर फूट का हो जाना स्वाभाविक है; जो समाज जितना बटा हुआ है, जितने अधिक उसमें एक दूसरे को अलग करने के सामान हैं, ऐसे समाज का संगठन साक्षात ब्रह्मा भी नहीं कर सकता, इसलिए सब से पहिला धावा क्रान्ति की सेना का छुआ छूत के क़िले पर है। साफ़ सुथरा खाना किसी हिन्दू के घर का बना हुआ क्यों न हो उसे सहर्ष स्वीकार करना धर्म है। अन्न जल का तिरस्कार करनेवाला समाज ईश्वर के निकट अपराधी है। हिन्दू समाज में छुआ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छूत के कारण से ही आपस का स्वाभाविक जीवन, आपस की स्वाभाविक सहानुभूति नहीं है। सात करोड़ हिन्दू बच्चे अछूत क़रार दिये गये; उनको उच्चवर्णाभिमानी छूते तक नहीं; उनके हाथ का पानी तक नहीं पीते; उनको मन्दिरों में दर्शन करने जाने नहीं देते; उनको समाज में बराबर के अधिकार नहीं देते; ऐसा अनर्थ, ऐसा अत्याचार इस छुआ छूत के भूत ने समाज में कर रक्खा है। ऐसे निरंकुश समाजद्रोही भूत की हत्या करना प्रत्येक हिन्दू सैनिक का मुख्य कर्तव्य है; इसलिए आओ छुआ छूत की गढ़ी पर धावा करें और संगठन के जय जयकार से दिशाओं को प्रतिध्वनित कर दें।

अच्छा, अब धावे का आरम्भ कैसे हो? प्रत्येक ग्राम और नगर में क्रान्ति के हिन्दू सैनिकों को अपनी मंडलियां बनानी चाहियें। मंडली में हर वर्ण या पेशे का पुरुष शामिल हो और वे सप्ताह में एक बार मिलकर सहभोज करें। मंडली का प्रत्येक सदस्य चन्दा दे जिससे सहभोज का ख़र्च चल सके। यह मंडली एक प्रकार की "हिन्दू-सोशल-क्लब" की तरह हो, इसके मेम्बर हमारे बतलाये हुए स्वीकृत धर्म को स्वीकार करें और आम जनता में छुआ छूत को दूर करनेवाली बातों का प्रचार करें। विद्यार्थी अपने स्कूल कालेजों में ऐसी मंडलियां बनावें; दुकानदार अपनी क्लबें स्थापित करें और ब्राह्मण से लेकर भंगी तक सबको अपनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मंडली में शामिल कर हिन्दू-संगठन की बुनियाद डालें। सफाई के जो नियम हैं, उनकी व्याख्या अपने अनपढ़ लोगों को सुनावें ताकि जनता साफ़सुथरा रहना सीखे। साबुन का उपयोग बढ़ाने की चेष्टा खूब होनी चाहिए और इसे भेंट के तौर पर एक दूसरे को देना चाहिए।

क्रान्ति करनेवाली मंडली के सदस्यों का एक काम यह भी है कि अपने साप्ताहिक अधिवेशनों में मज़दूरी की महत्ता (Dignity of labour) का अमली प्रचार करें, क्योंकि इसके द्वारा छूआ छूत दूर करने में बड़ी मदद मिलेगी और देश में कलाकौशल की उन्नति के सामान पैदा होंगे। कोई धन्धा किसी को छोटा नहीं बनाता और ईमान्दारी की मज़दूरी करनेवाला कोई भी पुरुष आदर्णीय है उसके हाथ का अन्न जल ग्रहण करना हमारा सामाजिक कर्तव्य है। इस प्रकार जिस रूप से, जिस उपाय से छुआ छूत के भूत की हत्या हो सके, करनी चाहिए। छोटे छोटे लड़के भी इस काम को कर सकते हैं। मातायें और बहनें अपनी मंडलियां पुरुषों से पृथक बनाकर स्त्रियों में क्रान्ति का प्रचार शीघ्र कर सकती हैं। सब को क्रान्ति की धुन लग जानी चाहिये।

कितना विस्तृत कर्मक्षेत्र हमारे सामने है। इस क्षेत्र में प्रवेश करने के लिये किसी शास्त्र, किसी इल्हाम की मदद की आवश्यकता नहीं। साधारण बुद्धि रखनेवाला पुरुष भी छुआ छूत की बीमारी से उत्पन्न हुए परिणामों को हिन्दू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समाज में स्पष्ट रूप से देख सकता है । इससे घूमने फिरने, व्यापार आदि करने की सुविधायें नहीं रहतीं । छुआ छूत रखने वाला पुरुष अपने समय और शक्ति का यथार्थ उपयोग नहीं कर सकता ; उसमें व्यवहारिक बुद्धि नहीं आ सकती ; वह कूपमन्डूक बना रहता है ; उसमें झूठा अभिमान भर जाता है ; और मकारी तो उसके चरित्र का अंग बन जाती है । छूआ छूत का स्वरूप इतना अस्वाभाविक है कि उसे सहन करने वाले समाज की बुद्धि पर आश्चर्य होता है । ब्राह्मण ब्राह्मण के हाथ का नहीं खाता ; क्षत्रियों में भी इसी प्रकार छूआ छूत है, इनकी देखादेखी कर्मकार लोगों ने भी आपस में एक दूसरे के बख़िलाफ़ छूआ छूत के नियम गढ़ लिए और समाज को टुकड़े टुकड़े करडाला। हिन्दूसमाजको यदि सचमुच स्वराज्य की लड़ाई लड़ना है तो सफ़ाई, पवित्रता के प्राकृतिक नियम के आचार-धर्म का स्तम्भ बनाना चाहिये ताकि समाज के सभी लोग आपस में खुले तौर से मिलजुल सकें और लोगों में समष्टि-धर्म को समझने की बुद्धि आवे। प्रत्येक सैनिक चैतन्य होकर अपने कर्तव्य पर लग जाय और अस्पृश्यता के भूत की शीघ्र दाह-क्रिया कर हिन्दू-समाज के माथे पर लगे हुए इस कलंक के टीके को धो डालें ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तेरहवाँ अध्याय

जात पांत का क़िला

फ्राँस की राज्यक्रांति के इतिहास में बैस्टिल (Bastille) का नाम अमर हो गया है। उसी क़िले में राज्य के अत्याचारों से पीड़ित क़ैदी सड़ा करते थे। जिस समय फ्रांस की प्रजा शताब्दियों से किए गये अत्याचारों का बदला लेने के लिये खड़ी हुई तो उसने सब से पहिले उस क़िले की ईंट से ईंट बजा दी।

हिन्दू समाज में वैसा ही बैस्टिल "जात पांत का क़िला" मौजूद है, जिसमें लाखों क़ैदी समाज के अत्याचारों से पीड़ित, हाहाकार करते हुए मर गये और आज भी करोड़ों दुख की आहें भरभर कर अपनी ज़िन्दगी के दिन काट रहे हैं। यह जात पांत का क़िला बैस्टिल से भी ज़्यादा सुदृढ़ है। हिन्दू नवयुवक आज गवर्नमेन्ट का मुक़ाबिला करने के लिये ख़ुशी से जेल में जा सकता है पर अपनी जात बिरादरी के अत्याचारा का सामना करते समय वह कायर बन जाता है; समाज के निरंकुश नियमों के सामने उसकी कुछ भी पेश नहीं जाती। मां बाप अपनी लाडली लड़कियों को बेचते हुए ज़रा नहीं शर्माते; लड़केवाले लड़कों को बेचते हुए ज़रा भी ईश्वर का भय मन में नहीं लाते। जात पांत के नियमों में बंधे हुए हिन्दू अपनी छोटी छोटी लड़कियों का विवाह कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देते हैं, और जब वे विधवा हो जाती हैं तो सारे घर को श्मशान-गृह बनाकर बैठ जाते हैं। उनमें इतना भी आत्मिकबल नहीं है कि वे अपनी बिधवा कन्या का पुनर्विवाह कर अपने घर को सुखी करसकें। जात पांत का भूत उनको भयभीत कर देता है। ब्राह्मणोंमें सैकड़ों प्रकार के ब्राह्मण, क्षत्रियों में सैकड़ों प्रकार के क्षत्री, वैश्यों में सैकड़ों प्रकार के वैश्य बन गये हैं और बेचारे शूद्रों की तो बात ही क्या — इस प्रकार हिन्दू समाज इस राक्षसी जात पांत के वंशजों में बट गया है। हर एक छोटी से छोटी बिरादरी ने अपने अलग नियम बना लिये हैं और अपनी अपनी खिचड़ी पका रहे हैं। छोटे दायरे में बिवाह शादी के लिये योग्य लड़के लड़कियों का मिलना नामुमकिन था, परिणाम में लड़के लड़कियां बिकने लगे और हिन्दू समाज स्वार्थी बनियां-समाज बन गया। लोग क़र्ज़ निकालकर बिरादरियों की गुलामी करने लगे और धनवान, अनपढ़ और ज़िद्दी लोग कुलीनता के ठेकेदार बन गये। ब्राह्मणों में भी ऊंचे और नीचे दर्जे की सीढ़ियां बन गईं और एक ऊंची सीढ़ी–बीस बिस्वे—का ब्राह्मण,नीची सीढ़ी—पांच बिस्वे – के ब्राह्मण का तिरस्कार करने लगा। हिन्दू समाज अजीब गोरखधन्धे में उलझ गया। एक की दूसरे के साथ सहानुभूति न रही। एक वर्ण की बिरादरी के मुर्दे को दूसरी बिरादरी के लोगों ने उठाना पाप समझा ; समाज से बन्धुत्व का सीमेन्ट उड़ गया और वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा खोखली और बोदी होगई।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दू समाज में यदि नवीन चैतन्य शक्ति का संचार करना चाहते हो तो जात पांत के अत्याचारी क़िले की ईंट से ईंट बजा दो ; बिरादरियों को दीवारों को गिराकर विस्तृत मैदान में आओ ताकि शुद्ध पवन समाज के फेफड़ों में प्रवेश करे। आज हिन्दू समाज का रुधिर तंग दायरों में विवाह करने से गंदा हो गया है; आज हिन्दू समाज छोटी छोटी बिरादरियों को गुलामी से कायर होगया है। गीता के दूसरे अध्याय का करोड़ों कापियां बांटने से हिन्दू समाज बहादुर नहीं बन सकता। यदि हिन्दुओं को निर्भय, वीर और मौत का मुक़ाबिला करनेवाले बनाना चाहते हो तो जात पांत के क़िले को तहस-नहस करदो और सब हिन्दुओं के लिये हिन्दू-राष्ट्र की बुनियाद डालो।

यह क्रांति किस प्रकार हो सकती है ? क्रांति के सैनिको, भारत का भविष्य तुम्हारे हाथ में है। भारत की देवियो, देश के जीवन और मरण के प्रश्न का हल् तुम्हारी मुट्ठी में है ; वीरता से आगे बढ़ो और "भारतमाता की जय" कहकर हिन्दू समाज के इस अत्याचारी दुर्ग पर हमला करो। प्रण करो कि तुम अपना विवाह जाति के बन्धनों को तोड़कर करोगे, अपने आराध्यदेव को साक्षी कर प्रतिज्ञा करो कि तुम बिरादरी की कुछ परवाह न कर अपनी शादी करोगे। कम से कम भारत के सब ब्राह्मण एक सूत्र में बंध जाएँ, सब क्षत्री अपनी छोटी छोटी बिरादरियों को तोड़कर एक हो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जायं, इसी प्रकार वैश्य और कर्मकार भी बिरादरी की दीवारों को तोड़कर एकता का अमृतरस पान करलें ताकि उपवर्णों के हज़ारों भेद मिटकर केवल चार मुख्य भेद रह जायं; इतना होने पर सामाजिक क्रांति का कार्य बहुत आसान हो जायगा। भारत के तरुणों की परीक्षा का समय आ गया है, देश की स्वाधीनता के सूर्य की लालिमा दिखाई देने लगी है।

हम हिन्दू हैं और हिन्दू-सभ्यता की रक्षा की ज़िम्मेदारी हमारे सिरों पर है। आज हम स्वाधीनता की शत्रु सब दीवारों को गिराकर अपने आपको स्वतन्त्र करने के लिए खड़े हुए हैं। लड़के और लड़कियों को बेचनेवाला हिन्दू समाज कभी स्वतन्त्र नहीं हो सकता और न ऐसे हिन्दू-समाज के नेता हिन्दू सभ्यता के प्रतिनिधि बन सकते हैं। समाज में सैकड़ों प्रकार की जात विरादरियों की दीवारों को तोड़कर हम सदियों के कूड़े-कचरे को निकाल बाहर करेंगे और अपनी प्यारी हिन्दू जाति को नीरोग और बलिष्ठ बनावेंगे। हमारा भगवा झंडा है और क्रान्ति हमारी देवी है। ग्राम ग्राम, नगर नगर में युवकों और युवतियों की मण्डलियां बनाकर हम जात पांत के तोड़नेका ब्रत लेंगे और खोखले वर्णाश्रम-धर्म के ठेकेदारों को अपने पीछे चलायेंगे। हिन्दू संगठन का यही सीधा सच्चा मार्ग है; देशकी स्वाधीनता की यही कुंजी है, राष्ट्र-धर्म का यही मिशन है। हम जात पांत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को तोड़ कर भारत में तेईस करोड़ हिन्दुओं की एक हिन्दू जाति स्थापित करेंगे और मुसलमान, ईसाई और पारसी सभी भारतियों को हिन्दूपन का आदर करना सिखलायेंगे, तभी "हिन्दुस्थान" यह नाम सार्थक होगा। ईश्वर की यही इच्छा है।

चौदहवाँ अध्याय

क्षात्र-धर्म

समाज का सारा संगठन और उसके प्रत्येक पुरज़े का ठीक तरह से काम देना क्षात्र–धर्म की चैतन्य शक्ति तथा उसकी विवेकबुद्धि पर निर्भर है। मानवी इतिहास का पाठ करने से यह बात भली प्रकार स्पष्ट हो जाती है कि क्षात्र-धर्मको विवेक के साथ जागृत रखनेवाली जाति सदा स्वतन्त्र और स्वाधीन रही है। आर्यलोग इस सत्य सिद्धान्त की महत्ता को खूब समझते थे इसलिए वे अपनी सन्तान को शस्त्र और शास्त्र दोनों विद्याओं में निपुण किया करते थे। अपने उसी क्षात्र-धर्म के प्रताप से उन्होंने अपना चक्रवर्ती राज्य संसार में फैलाया और मानवी सभ्यता के अमूल्य रत्नों की जायदाद अपनी सन्तान के लिए छोड़ गये।

क्षात्र-धर्म व्यक्ति और समष्टी के अधिकारों की रक्षा का धर्म है; यह समाज के बनाये हुए न्यायोचित क़ानूनों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुसार जनता को चलाने की व्यवस्था है; यह दुष्ट दुर्व्यसनी, और मदान्ध नागरिकों को उनके बुरे मार्ग से हटा कर मर्यादा में रखने का विधान है; यह देश और राष्ट्र के गौरव, उसकी सभ्यता, और उसके साहित्य की रक्षा करने वाला ब्रह्मास्त्र है। इसमें ज़ुल्म का कोई स्थान नहीं, यह हिंसा को आरम्भ नहीं करता, बल्कि उसका प्रतिकार कर हिंसा-वृत्ति का नाश करता है; यह हृदय में द्वेष न रख सत्य और न्याय के अनुसार दंड देनेवाला धर्मराज है। यह अहिंसा के लक्ष्य को सामने रखकर समाज में गड़बड़ मचाने वाले, समाज की शान्ति भंग करनेवाले लोगों को उचित दण्ड देकर उनका सुधार करता है। यदि समाज शरीर है तो क्षात्र-धर्म उसके प्राण; यदि समाज घड़ी है तो क्षात्र धर्म उसका चक्र (स्प्रिंग), बिना क्षात्र-धर्म के समाज की गति अस्वाभाविक हो जाती है; उसमें नाना प्रकार की बुराइयां उपस्थित हो जाती हैं; श्रेष्ठ गुणों का विकाश बन्द हो जाता है और नीच वृत्तियां वृद्धि पा जाती हैं। अतएव समाज को नीरोग रखने के लिए, उसे बलशाली बनाने के हेतु, उसका जीवन स्वाभाविक बनाने के लिये यह परमावश्यक है कि क्षात्र-धर्म का प्रचार समाज के सब सदस्यों में किया जाय। क्षात्र-धर्म वर्ण-भेद और पेशा-भेद नहीं मानता; प्रत्येक पेशे, प्रत्येक स्थिति, और प्रत्येक अवस्था के नागरिकों का, क्षात्र-धर्म की शिक्षा पाना, एक मुख्य कर्तव्य है; यह समाज का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साझा धर्म है और इसी के आधार पर समाज की सारी शक्ति निर्भर है। इसी के सहारे देश का व्यापार बढ़ सकता है, इसी के आधार पर धर्म की मर्यादा क़ायम रह सकती है, इसी के बल पर ज्ञान ध्यान, पूजा पाठ हो सकता है। जिस जाति में क्षात्र-धर्म का लोप हो जाता है वह जाति दूसरों का पानी भरने और लकड़ियां चीरने लायक़ रह जाती है—उसके बच्चे स्थान स्थान पर ठोकरें खाते हैं और उन्हें सब जगह अपमानित होना पड़ता है।

नवीन वेदान्त की गहरी नींद में सोनेवाली हिन्दू-जाति आज चैतन्य हुई है। छत्रपति शिवाजी और पुरुषसिंह गुरु गोविन्दसिंह जी के हिन्दू-संगठन के पुनीत प्रयत्नों का इतिहास हिन्दू बच्चे पढ़ने लगे हैं; हिन्दुओं के संगठित हुए बिना स्वराज्य असम्भव है, इसकी सत्यता भी हिन्दू नेता अनुभव करने लगे हैं; लेकिन वह संगठन क्षात्र-धर्म के प्रचार के बिना नहीं हो सकता। हिन्दू आज पैसे के गुलाम यहूदी बन गये हैं; बनियांपन की बीमारी इनकी हड्डियों में घर कर गई है, पैसा जमा करने का भूत इनके सिरों पर सवार हो गया है; पैसे के लोभ में आकर काशी के दिग्गज पण्डित झूठी सच्ची व्यवस्था दे देते हैं; पैसे के लोभी साधु सन्यासी नये नये पाखण्डों का आविष्कार करते हैं; पैसे के गुलाम पण्डित पुरोहित घृणित से घृणित काम भी करने को तय्यार हैं; पैसे के मोह में पड़ी हुई हिन्दू-जाति का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उद्धार केवल क्षात्र-धर्म ही कर सकता है। क्षत्री निर्भय होकर जब मौत का सामना करता है तो उसे संसार की तुच्छता का सच्चा ज्ञान होता है ; दुकानों पर बैठनेवाले और भोजन भट्ट ज्ञानी भला गीता के मर्म को क्या समझ सकते हैं। आज हमें ज़बर्दस्त आन्दोलन कर देश में क्षात्र-धर्म का प्रचार करना पड़ेगा। अपने घरों से गड़ा हुआ धन निकालकर हिन्दू नवयुवकों को खिलाना पड़ेगा ताकि वे बलशाली होकर देश के गौरव की रक्षा करें। मुहल्ले मुहल्ले में व्यायामशालायें खोलकर राष्ट्रीय त्योहारोंके अवसरों पर दंगल मचा, वीरों को पुरस्कार दे, हमें अपने समाज में अद्भुत जागृति पैदा करनी होगी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि विदेशी गवर्नमेंट होने के कारण हम अपनी इच्छानुसार पाश्चात्य ढंगों के अनुकूल कार्य नहीं कर सकते हैं पर जितना हम कर सकते हैं उतना भी तो हम नहीं करते ; ख़ाली गवर्नमेंट को दोष देना केवल अपने कर्तव्य की अवहेलना करना है। हमें निम्नलिखित उपायों द्वारा क्षात्र-धर्म का प्रचार ग्रामों, क़स्बों और नगरों में करना चाहिये—

१—नगर के प्रत्येक मुहल्ले में व्यायामशालायें हों और महीने में एक बार सारे नगर की टूर्नामेंट (दंगल) हो। उस दंगल में शहर के सब अखाड़ों के प्रतिनिधि सम्मिलित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हों और राष्ट्रीय त्योहारों के अवसर पर दंगल जीतनेवालों को पुरस्कार दिये जांय।

२—राष्ट्रीय त्योहारों पर ख़ास तौर से ज़िले भर के दंगल हों और जनता में उत्साह बढ़ाने के लिए स्थानीय रुचि के अनुसार खेलें खेली जांय।

३—शारीरिक व्यायाम के नये विदेशी ढंग, जैसे मुक्केबाज़ी, जिजितसू आदि का प्रचार भी जनता में किया जाय ताकि बलशाली सभ्य जातियों से हम पीछे न रहें।

४—फौजी क़वायद सीखे हुए अनुभवी सिपाहियों को शिक्षक रखकर इक्कीस वर्ष की उम्र से लेकर पचास बरस तक के प्रत्येक हिन्दू को क़वायद सीखने का अभ्यास करना चाहिए और वे लोग ऐसा व्रत लें कि वे हिन्दू स्त्रियों पर अत्याचार करनेवाले दुष्टों को यथोचित दण्ड देंगे।

५—प्रान्त भरके हिन्दुओं का दंगल विजय-दशमी के अवसर पर होना उचित है। उसमें प्रान्त के सब हिन्दू लीडर सम्मिलित होकर जनता को उत्साहित करें।

६—अखिल भारतवर्षीय राष्ट्रीय महासभा जहां पर हो वहाँ सारे देश के हिन्दू खिलाड़ियों का दंगल करना चाहिये और उसी अवसर पर क्षात्र-धर्म की महत्ता पर जनता को उपदेश होना चाहिए।

इस प्रकार जन साधारण में क्षात्र-धर्म का ज़बर्दस्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आन्दोलन चलाकर देश का बनियांपन श्री गंगा जी में बहा देना उचित है। अब समय आ गया है कि हम अपनी कायरता और नपुंसकता को दूर कर सीधे खड़े हों और अपनी रुचि के अनुसार हिन्दू-संगठन के काम को उठा लें। काम बहुत है, करनेवाले चाहियें। क्षात्र-धर्म के प्रचार के लिए हज़ारों प्रचारक दरकार हैं। अनपढ़ सिपाही हिन्दू बालकों को सिपाहियाना जौहर सिखा हिन्दू-संगठन की सेवा कर सकता है; लाठी चलानेवाला हिन्दू बच्चों को लाठी का कर्तव्य सिखला कर हिन्दू जाति का सेवक बन सकता है; कुश्ती लड़नेवाला जगह जगह अखाड़े खुलवा कर, शारीरिक कर्तव्य सिखलाकर भारत जननी का सच्चा पुत्र बन सकता है, आवश्यकता केवल यह है कि हम स्वार्थ त्याग कर अपना हुनर अपने लोगों को सिखलावें, साथ लेकर न मर जायं। स्वार्थ के कारण ही हिन्दुओं का सारा काम बिगड़ रहा है और उनके गुणी आदमी गुणों को साथ लेकर मर जाते हैं। जो कुछ आता है, जो विद्या जानते हो, जो गुण तुम्हारे पास है उसे दूसरे हिन्दुओं को सिखलाओ, गुणियों की तादाद बढ़ाओ, तभी तुम्हारे गुणों का ज्ञान सार्थक होगा। क्षत्रियों को उदार होना चाहिए; अखाड़ेवालों को आपस में एक दूसरों के साथ कभी द्वेष नहीं करना चाहिए; हार-जीत के समय बड़ी उदारता से एक दूसरे के साथ हाथ मिलाना चाहिए;

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीतनेवाला हारनेवाले का हर्गिज़ तिरस्कार न करे और हारनेवाला जीतनेवाले की बहादुरी की सदा इज़्ज़त करे। हम सब हिन्दू जाति के अंग हैं. उसके सेवक हैं; हमारा सारा बल वीर्य इसी जाति के अर्पण है और हम अपनी हिन्दू जाति को गौरवान्वित करने के लिए क्षात्र-धर्म की दीक्षा लेते हैं।

पन्द्रहवाँ अध्याय

मन्दिर और साधु सुधार

भगवान बुद्ध के समय जब भिक्षु-संघ का संगठन हुआ तो हिन्दू धर्म ने अपने इतिहास में पहिली वार मिशनरी रूप धारण किया। इससे पहिले हिन्दुओं में धर्म प्रचार की परिपाटी नहीं थी; वर्णाश्रम-धर्म के अनुसार ब्राह्मण और संन्यासी शिक्षा तथा प्रचार का काम करते थे। भगवान बुद्ध ने पहिली वार हिन्दू समाज को धर्म-प्रचार के लिए तय्यार किया और हिन्दू धर्म प्रचार की एक संगठित सुन्दर मशीन निर्माण की। बौद्ध-धर्म भिक्षु-धर्म है और प्रत्येक बौद्ध गृहस्थ को कुछ समय के लिए भिक्षु-धर्म ग्रहण करना आवश्यक है। जैसे योरूप की युद्धप्रिय जातियों में युद्ध-विद्या का सीखना प्रत्येक नागरिक के लिए अनिवार्य है, वैसे ही बौद्ध राष्ट्र में प्रत्येक नागरिक के लिए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भिक्षु-धर्म ग्रहण करना अनिवार्य था; जैसे आज युद्ध-कला सीखकर नागरिक फिर अपने धन्धे में लग जाता है इसी प्रकार भिक्षु-धर्म सीख कर बौद्ध नागरिक अपने अपने धन्धे को करने लगते थे, अर्थात् जंगी राष्ट्रों ने जो नियम अपने नागरिकों को युद्ध के लिए सदा तय्यार रखने के हेतु बनाये हैं वैसे ही नियम भगवान बुद्ध ने बौद्ध-समाज को धर्म-विजय के लिये तय्यार रखने के हेतु बनाये थे। जैसे जंगी राष्ट्र अपना सारा धन सैनिकों के सुख के लिये खर्च करता है वैसे ही बौद्ध समाज अपना सर्वस्व भिक्षुओं के लिये दे देता था। बौद्ध काल में बड़े बड़े विहारों का निर्माण हुआ, जिनमें हज़ारों भिक्षु निवास करते थे। जैसे ब्रिटिश सरकार की फौजी छावनियां आजकल जगह जगह पर हैं और उनको क़ायम रखने के लिये विपुल धन ख़र्च होता है इसी प्रकार बौद्ध विहार भारतवर्ष में फैले हुए थे जिनका ख़र्च चलाने के लिये राजा महाराजा और श्रीमन्त लोग जागीरें और गांव विहार के साथ दान रूप में लगा देते थे, और उन विहारों से भिक्षु लोग तय्यार होकर सारे संसार में बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे। बौद्ध काल के बलशाली राजाओं ने भगवान बुद्ध की मूर्तियां मन्दिरों में स्थापित कीं; त्यागी और चरित्रवान भिक्षुओं के स्वर्गारोहण होनेपर उनकी समाधियों की पूजा का प्रचार जनता में हुआ; प्रान्तों के बौद्ध संतों की समाधियों पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेले लगने लगे और इस प्रकार देश में हिन्दू समाज की सम्पत्ति मन्दिरों और परिव्राजकों के हाथों में चली गई।

जब स्वामी शंकराचार्य जी के आने पर ब्राह्मणों ने फिर ज़ोर पकड़ा और स्थान स्थान पर बौद्धों को परास्तकर ब्राह्मण-धर्म की स्थापना की तो उन्होंने अपने मत का प्रचार करने के लिये बौद्ध साधनों का प्रयोग किया। भगवान बुद्ध की मूर्ति के स्थान पर उन्होंने ब्रह्मा, विष्णु, और महेश आदि की मूर्तियां स्थापित कीं; बौद्ध संत, महात्माओं के नाम पर जहां मेले होते थे वहाँ ब्राह्मणों ने दूसरे देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित कीं; बौद्ध भिक्षु संघ के स्थानपर दशनामी-साधु-संघ का संगठन हुआ, इस प्रकार बौद्धों का अनुकरण कर हिन्दू समाज के नेताओं ने अपनी समाज की सारी शक्ति और सम्पत्ति को हिन्दू मन्दिरों और साधुओं के मठों की सेवा में लगा दिया। मन्दिरों और मठों में लक्ष्मी की इतनी वृद्धि हुई कि हिन्दुस्तान से बाहर दूर देशों की भुक्खड़ जातियों के मुंह में पानी भर आया और वे भारतवर्ष पर चढ़ दौड़ीं। ब्राह्मणों ने बौद्धों के प्रचार के ढंग और साधनों का तो अनुकरण किया पर जिस कर्मयोग की भित्ति पर भगवान बुद्ध ने अपने भिक्षुसंघ की बुनियाद डाली थी उसकी वे उपेक्षा कर गये। परिणाम यह हुआ कि वे मन्दिर और मठ धर्म-विजय करने के बजाय पाप-संचय करने लगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वही सिलसिला अब तक चला आता है। हिन्दू समाज की सम्पत्ति खिंच खिंच कर मन्दिरों, पुजारियों, पंडों, महन्तों और साधु संन्यासियों के पास जाती है और वहां से व्यभिचार, दुर्व्यसन और अकर्मण्यता के फल तय्यार होकर हिन्दू जनता में बंटते हैं और हिन्दू जनता दिन प्रति दिन दुर्बल, कायर और निराशावादी होती जाती है। भगवान बुद्ध का आदर्श बड़ा ऊंचा था और सम्राट अशोक ने उस आदर्श पर चलकर भारतवर्ष की कीर्ति को संसार में अमर कर दिया, पर हम लोगों ने बौद्ध-धर्म के साथ द्वेष रखने के कारण उस महान आदर्श के प्रचन्ड साधन "भिक्षु-संघ" का उपयोग करना नहीं सीखा। हमारे साधु हमारे लिये भार रूप हैं; वे समाज का धन बर्बादकर समाज में बुराइयां फैलाते हैं; मंदिरों और मठों में पापों के क्रीड़ालय स्थापित हैं और वे हिन्दू जाति को ग्रस रहे हैं।

अतएव संगठन के सैनिकों को बहुत शीघ्र मन्दिरों और साधुओं के सुधार की ओर लगना होगा। मंदिरों के बदमाश महन्तों को निकालकर उनके स्थान पर सच्चरित्र और योग्य पुरुषों को बैठाना होगा; मन्दिरों की सम्पत्ति शिक्षा-प्रचार में ख़र्च हो, ऐसा प्रबन्ध करना होगा। निकम्मे, अनपढ़, चरसी, गंजेड़ी और हट्टे कट्टे साधुओं और भिक्षुओं को भोजन और पैसा देना तुरंत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बन्द कर देना चाहिए। कपड़ा रंगलेने से कोई साधु नहीं बन जाता; भेष की पूजा का लचर ख्याल जनता के दिल से उठा देना चाहिए। आज कल इस गिरे हुए ज़माने में चोर, डाकू, गुन्डे मुसलमान सभी कपड़ा रंग कर, जटा बढ़ा, भस्म रमा लेते हैं और साधु बन बैठते हैं। क्रान्ति की मंडली के सैनिकों को घूम घूम कर लोगों से प्रतिज्ञा लेनी होगी कि वे खाली भगवा कपड़ा देखकर किसी भी साधु को भोजन वस्त्र न देंगे। आज चैतन्य होने का ज़माना है। काम बांट लेना चाहिये। मन्दिरों का सुधार करनेवाले सैनिकों की मंडली अलग तय्यार हो; पाखंडी साधुओं का खाना पीना बन्द करने वाली मंडली दूसरी हो, जिसको जिस काम की योग्यता हो उसे वह काम उठा लेना उचित है; दीर्घसूत्री बनना अच्छा नहीं, काम पर लग जाना चाहिए। यदि मन्दिरों का रुपया हिन्दू महा सभा के हाथ में हो, यदि उस धन से राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार हो तो कितनी जल्दी देश का उत्थान हो जाय। पंडों, महन्तों और मठाधीशों के हाथों में करोड़ों रुपये की आमदनी है, इतने प्रचुर धन से क्या नहीं हो सकता। इसलिये हिन्दू संगठन के प्रेमियों को अपने इस बड़े ख़ज़ाने पर क़ब्ज़ा करने की बहुत जल्द फिक्र करनी चाहिए। हिन्दू समाज में आज चारों तरफ से क्रान्ति करने की ज़रूरत है। सब गंदा,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सड़ा, बोदा हिस्सा काट कर फेंक देना चाहिए । जाति के बच्चों में कर्मयोग की शिक्षा फैलाने की अत्यन्त आवश्यकता है ।

कितना महान काम हमारे सामने है । क्रान्ति की फ़ौज में लाखों सैनिकों की भर्ती जब तक नहीं होगी तब तक हिन्दू-संगठन कैसे हो सकेगा ? काम करने का समय आगया है ; हिन्दू संगठन के लिये समय उपयुक्त है। उचित अवसर का लाभ लेने वाले, क्रान्ति का झंडा उठानेवाले दृढ़प्रतिज्ञ सैनिकों की आवश्यकता है ।

सोलहवाँ अध्याय

विधवा विवाह

भारतवर्ष की सभ्यता में सतीत्व धर्म का दर्जा बड़ा ऊंचा है। संस्कृत साहित्य में सैकड़ों इस प्रकार के दृष्टान्त आते हैं जहां पति और पत्नी के उत्कृष्ट प्रेम के उदाहरण दिखलाये गये हैं, खासकर स्त्रियों की पति के प्रति शुद्ध भक्ति के बड़े निर्मल नमूने हमारे यहां मिलते हैं । शास्त्रों के रचयिता महात्माओं ने विषयवासना को संयमित रखने के लिए स्त्रियों को स्थान स्थान पर पतिव्रत धर्मका उपदेश दिया है। महारानी सीता का नाम तो सतीत्व धर्म के लिये एक उच्चतम आदर्श है और हिन्दुओं में रामायण का, ऐसे ही श्रेष्ठ उपदेशोंके कारण, इतना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रचार है कि ऐसा किसी ग्रन्थ का किसी भी देश में नहीं होगा। यही कारण है कि एक पति के मर जाने पर किसी युवा स्त्री के दूसरे बिवाह की बात की थोड़ी भी चर्चा जब समाज में होती है तो सच्चे सनातनधर्मी हिन्दुओं के हृदयों को बड़ी ठेस लगती है और वे अत्यन्त दुखी होकर बिधवा बिवाह का विरोध करते हैं। हम ऐसे भावुक आदर्शवादी लोगों का आदर करते हैं और उनके हृदय की व्यथा को अनुभव कर सकते हैं, पर उनसे हमारा सप्रेम निवेदन है कि वे अपने समाज की वर्तमान अवस्था को आंखें खोलकर देखें और देश-काल के अनुसार हिन्दू समाज की जटिल समस्या—बिधवा बिवाह के प्रश्न—पर विचार करें।

यह बात सर्वमान्य है कि यदि हिन्दू समाज में लड़कों का बिवाह जवानी में किया जाय, और वे बिवाह बिरादरियों के छोटे छोटे दायरों को तोड़कर हों तो बिधवा बिवाह का प्रश्न आप ही आप हल होजाय, लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता, जब तक हिन्दू जनता में दस दस, बारह बारह वर्ष के लड़कों के बिवाह का रिवाज मौजूद है, जब तक छोटी छोटी बिरादरियों के अन्दर बिवाह करने की प्रथा जारी है तब तक क्या किया जाय ? जो लाखों बिधवायें कठोर यातनायें सहती हुई मुसीबत के दिन काट रही हैं उनकी क्या व्यवस्था हो ? अनपढ़, मूर्खा और भीरु हिन्दू विधवाओं पर आज विधर्मी लोग किस बेरहमी से हमला कर रहे हैं। उनको बचाने का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपाय क्या है ? हिन्दू समाज के सच्चे सेवकों की तरह हमें इन प्रश्नों पर विचार करना चाहिए ; हमें शेख़चिल्लियों की तरह बातें करना छोड़ व्यवहार-कुशल बनना चाहिए; समय की यथार्थ दशा का वीर बनकर सामना करना उचित है। जिन बातों का प्रबन्ध तत्काल करना आवश्यक है, जिनके किए बिना समाज का गौरव मिट्टी में मिल रहा है उन्हें फ़ौरन अपने हाथ में लेना चाहिए। ख़ाली आदर्शवाद के बहाने हम आज अपनी ज़िम्मेदारी से नहीं छूट सकते। जिन महात्माओं ने हिन्दू समाज के आदर्शों की स्थापना की थी वे अपने युग में अपना कर्तव्य पालन कर गये, यदि वे आज मौजूद होते तो वे भी वर्तमान युग के धर्म के अनुसार नये शास्त्र और स्मृतियां बनाते। सतीत्व-धर्म का आदर्श कभी नष्ट नहीं हो सकता; वह एक सत्य सिद्धान्त है, पर उसका पालन सामाजिक अत्याचार से नहीं कराया जा सकता ; वह आदर्श समाज का आदर्श सिद्धान्त है, जिस समाज के पुरुष निर्लज्ज होकर साठ वर्ष की अवस्था में दस वर्ष की कन्या से विवाह कर सकते हैं, जिस समाज में दुधमुंही बच्चियों का विवाह धर्म-ध्वजाधारी पंडित करा सकते हैं, वह हिन्दू समाज विधवा विवाह की बात आते ही हिन्दू आदर्शों की दुहाई दे, यह सिवाय मूर्खता के और कुछ नहीं। विधवा विवाह समाज की अस्वाभाविक प्रथाओं का स्वाभाविक परिणाम है, जिसे हमें स्वीकार करना ही होगा, और जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारी स्वीकृति की परवाह न कर अपना मार्ग स्वयं बना लेगा ।

देश की वर्तमान अवस्था में हम विधवाओं से सारी आयु भर के लिये ब्रह्मचर्य पालने की आशा करते हैं । ज़रा अपनी छाती पर हाथ रखकर, प्रभु को साक्षी कर बेचारी अनाथ बिधवाओं की दशा पर विचार करो। जो अन्याय हम उनके साथ करते हैं सचमुच उसे लेखनी लिख नहीं सकती। हम स्वयं अपने अनुभव से कामदेव के प्रचन्ड हमलों की शक्ति को जानते हैं और जब बेचारे ज्ञानी और अनुभवी उन थपेड़ों का मुक़ाबिला करने में असमर्थ हुए तो इन दीन अबलाओं की कौन बात कहे। आज हमें बिरादरियों के झूठे भय को त्याग कर बिधवा बिवाह को सामाजिक प्रथा बना देनी चाहिये। इसके विषय में भी हमें पूरी क्रान्ति करनी पड़ेगी।

प्यारी बिधवा बहिनो, उठो, चैतन्य हो जाओ और अपनी ज़बान खोलो। यह भारतवर्ष तुम्हारी भी जननी है। तुम्हें इसकी गोद में सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं। तुम भेड़ बकरी नहीं हो जो मनमाने अत्याचारों को सहन करो। तुम निर्भय और निर्द्वन्द्व होकर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए खड़ी हो जाओ। तुम्हें भी पुरुषों की तरह पूरे अधिकार प्राप्त हैं। तुम्हें तुम्हारी इच्छानुसार पुनर्बिवाह करने का अधिकार है। डरो मत, हिन्दू समाज में आज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लाखों आत्माएं हैं जो तुम्हारी सहायता करने को तय्यार हैं; बिधवा बिवाह सहायक सभायें खुल गई हैं। तुम विधर्मियों के जाल में मत फँसो, वे केवल तुम्हारा धन और तुम्हारा धर्म हरने की चेष्टा में हैं। हिन्दू धर्म के सामने उनका मज़हब दो कौड़ी काम का भी नहीं; उनका मज़हब केवल विषय भोग की मशीन है; स्त्रियां उनके मज़हब में केवल खेतियां हैं, जिन को वे भोग विलास की वस्तु समझते हैं। स्वराज्य के न होने से हिन्दू धर्म की मर्यादा नष्ट हो गई, इसी कारण कुप्रथायें फैल गई हैं, तुम भी समाज-सुधारकों के साथ मिलकर देश के उत्थान की चेष्टा करो। तुम्हारे ग्राम और नगर के निकट जहां जहां आर्यसमाजें, कांग्रेसें और हिन्दू सभायें हैं उनके कार्यकर्त्ताओं के पास एक पोस्टकार्ड भेज सहायता मांगो। वे तुम्हारी हर प्रकार मदद करेंगे। किसी अनजान, अपरिचित पुरुष अथवा कुट्टनी की बातों में आकर उसके साथ मत चल दो; अधम विधर्मियों ने आज तुम्हारा सर्वस्व नाश करने के लिये कमर कसी है। वे तीर्थों, स्टेशनों, रेलगाड़ियों और गली कूचों में नाना रूप भरकर तुम्हारा धर्म नाश करने के लिये डोल रहे हैं। उनसे बचने के लिये अपने पास एक छुरी रक्खो, जो अवसर पर तुम्हारे काम आवे।

क्रान्ति के सैनिको! संगठन के प्रेमियो! बिधवाओं की सहायता के लिये अपने हृदयों को उदार और विशाल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बनाओ। वर्तमान युग के धर्म के अनुसार विधवा विवाह एक बड़ा पुण्यकार्य है। अच्छे योग्य वर तलाश कर अपनी इन दुखी बहिनों को सुखी बनाओ। विधवा विवाह सभायें तथा विधवाश्रम स्थापित करो, जहां इन अबलाओं को आश्रय मिले और वे बिरादरियों के अत्याचारों से बचकर शांति से अपना जीवन बिता सकें तथा देश और समाज के लिये उपयोगी हो सकें। बड़े बड़े नगरों में बिधवासहायक सभाओं के केन्द्र बना कर इस समस्या को हल् कर देना चाहिये, यह काम तत्काल करने का है। जहां कोई विधर्मी किसी बिधवा बहिन को बहकाता हुआ दिखलाई दे, फ़ौरन निर्भय होकर उस दुष्ट के पीछे पड़ जाना चाहिए और उसे ऐसी शिक्षा दी जाय कि वह फिर दुबारा किसी अबला पर ज़ुल्म करने का साहस न कर सके। क्रान्ति के सैनिकों को सड़क, बाज़ार, स्टेशन और रेलगाड़ी में खूब चैतन्य होकर चलना उचित है। आज निशाचर घोर कुकर्म करने के लिए बाहर निकले हैं। हर पेशे के हिन्दू को आज हिन्दू संगठन में लग जाना चाहिए। और अपनी शक्ति के अनुसार संगठन के किसी अंग को सम्भाल लेना चाहिए; विधवा विवाह के प्रेमी इसी में अपना समय दें और अपनी शारीरिक शक्तियां विधवाओं की दशा सुधारने में लगा दें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सत्तरहवाँ अध्याय

हिन्दू संगठन का संदेश मुसलमानों को

प्यारे मुसलमान भाइयो ! जब से हिन्दू संगठन की हलचल शुरू हुई है तब से तुम्हारे लीडर तुम्हें संगठन के सम्बन्ध में बहुत ग़लत बातें बता रहे हैं। वे तुमको हिन्दुओं के बख़िलाफ भड़काने की हर तरह से कोशिश कर रहे हैं। आज तुम अपने एक सच्चे हितैषी की बातें ध्यान से सुनो। मुझे तुमसे कोई रुपया नहीं चाहिए और न मैं तुम्हारी लीडरी का ख्वाहिशमन्द हूं । मैं तुम्हें हिन्दू संगठन के सम्बन्ध में सच्ची सच्ची बातें बताना चाहता हूं , क्योंकि मैं देखता हूं कि तुम्हें बुरी तरह से धोखा दिया जा रहा है। मैं तुमको आनेवाली मुसीबत से बचाना चाहता हूं और तुममें खुद सोचने की आदत डालना चाहता हूँ ।

ज़रा ग़ौर से सोचो जब सन् १९१२ में तुर्की की लड़ाई बलक़ान से हुई तो तुम्हारे लीडरों ने तुर्की की मदद का बहाना बनाकर हज़ारों रुपये तुमसे लेकर बरबाद कर दिये। उसमें से कितना रुपया तुर्की गया और कितना लीडरों के पेट में, इसका कुछ भी हिसाब नहीं मिला। जब योरुप का बड़ा जंग शुरू हुआ तब तुर्कों ने इंगलैण्ड से लड़ाई छेड़ते वक्त तुम्हारी सलाह भी नहीं पूछी और जब बम्बई के मुसलमानों ने तुर्कों को जर्मनी के साथ शामिल न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होने की अर्ज़ की तो तुर्कों ने लानत से भरा हुआ जवाब भेजा। तुम्हारे लीडरों ने ख़िलाफ़त का बहाना बना कर तुमसे अस्सी लाख रुपये बटोर लिए। तुमने अपनी जोरू और बच्चों का पेट काट काट कर रुपया दिया। उस रुपये में से कितना तुर्की पहुंचा और कितना लीडरों की मौज बहार में खर्च हुआ, अगर इसका कच्चा चिट्ठा तुमको मालूम हो तो तुम कभी भूल कर भी इन लीडरों के पास खड़े न हो। आखिर खिलाफ़त के उस अस्सी लाख रुपये ख़र्च करने का नतीजा तुमको मिला क्या? तुर्की ने ख़िलाफ़त तोड़ डाली और ख़लीफ़ा को भी तुर्की से निकाल दिया!

तुम ज़रा अपनी नासमझी पर रहम खाओ। तुम्हारे जितने पोलिटिकल लीडर और मज़हबी पेशवा हैं उनमें से सिर्फ़ दो चार को छोड़कर बाक़ी सब ख़ुदग़र्ज़ी के पुतले हैं। वे तुम्हें हिन्दुओं के बख़िलाफ़ बहकाकर अपनी दुकानदारी चला रहे हैं, कोई न कोई नई बात खड़ी कर तुम्हें मज़हब का जोश दिलाकर ये लोग पैसा जमा करते हैं और यही इनका धन्धा है। मौलवी मुल्ला तुम्हें बहिश्त के सब्ज़ बाग़ दिखला दिखला कर तुमसे दंगे करवाते हैं और तुम अनजान बनकर इनके कहने में आ जाते हो। ये मौलवी ख़ुद तो बड़ी चालाकी से बच जाते हैं और तुम को मुक़द्दमे में फँसा जेल भिजवा देते हैं। हिन्दू मुसलमानों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में लड़ाई रहने से इनकी मुट्ठी खूब गर्म रहती है क्योंकि फिर ये तुम्हारे मुक़द्दमों का नाम लेकर दूसरों से पैसा ऐंठते हैं। यह सिर्फ पैसा कमाने का इनका पेशा है।

मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम्हारे लीडर तुम्हारा सत्यानाश करके अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। खुद तो तुम्हारे पैसे से लीडर बन मोटरों में घूमते हैं; तुम्हारे नाम से कौन्सिलों में जा गवर्नमेंट के प्यारे बनते हैं; तुमको हिन्दुओं से हमेशा अलग रख अपनी लीडरी क़ायम रखने की दिन रात कोशिश करते हैं। तुम अपना भला बुरा सोचने की आदत डालो; तुमको इसी मुल्क में हिन्दुओं के साथ रहना है; हिन्दुओं के साथ तुम्हारा चोली दामन का साथ है। भला एक हिन्दू की एक ग़रीब मुसलमान के साथ क्या लड़ाई है; दोनों को रोटी कपड़ा चाहिए; स्वराज्य मिलने पर दोनों का बराबर फ़ायदा है। तुम्हें और सब मुल्कों का ख़याल छोड़ सिर्फ हिन्दुस्तान से मुहब्बत करनी चाहिये। हिजरत करनेवाले जो हिन्दुस्तानी मुसलमान अफ़ग़ानिस्तान गये थे उनके साथ जो बुरा सलूक हुआ उससे सबक़ सीखो। अफ़ग़ानिस्तान वाले तुम्हें नालायक़ समझते हैं; तुर्क लोग तुमसे नफ़रत करते हैं; फ़ारिसवाले तुम्हें जंगली मानते हैं। हिन्दुस्तान से बाहर के मुसलमान तुम्हें बिलकुल नहीं चाहते, लेकिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुम ऐसे मूर्ख हो कि अपने मुल्कवालों से दुश्मनी कर बाहरवालों के गले पड़ते हो। तुम्हारे लीडर केवल पैसा कमाने के लिए तुम्हें बाहर की बातें सुनाते रहते हैं। वे जानते हैं कि जिस दिन तुम हिन्दुस्तान से मुहब्बत करने लगे, जिस दिन तुमने हिन्दुओं से लड़ना छोड़ दिया उसी दिन से उनकी लीडरी ख़तम हो जायगी और उनकी दूकानों पर ताले लग जायंगे। कभी भूल कर भी इनके कहने में आकर किसी बाहर के मुसलमानी फण्ड में पैसा मत दो और न मौलवी मुल्लाओं के कहने में आकर हिन्दुओं से झगड़ा करो।

फिर सुनो। हिन्दू-संगठन हिन्दुस्तान की अज़मत बढ़ाने के लिए किया जा रहा है; हिन्दू-संगठन हिन्दू समाज में फैली हुई बुराइयों को दूर करने के लिए किया जा रहा है; हिन्दू-संगठन स्वराज्य की लड़ाई लड़ने के लिए किया जा रहा है; हिन्दू संगठन तुम्हारा बिलकुल विरोधी नहीं: हाँ यह उन दुष्ट लोगों को जो हिन्दू बालकों बालिकाओं और औरतों को धोखे से भगा ले जाते हैं, ज़रूर भयभीत करनेवाला है: भले आदमियों के लिए हिन्दू-संगठन एक बड़ी भारी बरकत होगी और बदमाशों के लिए यह मौत का पैग़ाम होगा।

तुम पूछोगे कि मुसलमानों की शुद्धी क्यों की जाती है? इसका जवाब यह है कि यह शुद्धी सिर्फ तुममें हिन्दु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तान की मुहब्बत भरने के लिए है; यह शुद्धी तुम्हें मज़हबी गुलामी से आज़ाद करने के लिए है; यह शुद्धी तुम्हें मौलवी मुल्लाओं के जाल से छुड़ाने के लिए है; यह शुद्धी तुम्हें पक्के हिन्दुस्तानी बनाने के लिए है। हिन्दू-संगठन तुम्हें अरब के मज़हब से निकाल कर क़ौमपरस्ती के सच्चे मज़हब में ले जाना चाहता है। इसके लिए तुम्हें बुतपरस्त होने की ज़रूरत नहीं, तुम्हें किसी किताब को इल्हामी मानने की ज़रूरत नहीं, तुम्हें राम और कृष्ण को अवतार मानने की ज़रूरत नहीं, हिन्दू-संगठन यह चाहता है कि तुम हिन्दुस्तान को अपने प्राणों से प्यारा समझो और हिन्दुस्तान के पुराने आलिमों को अपना बुज़ुर्ग मानो; हिन्दू-संगठन यह चाहता है कि तुम हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता और उसके सुन्दर साहित्य की इज़्ज़त करो; हिन्दू-संगठन यह चाहता है कि तुम हिन्दुस्तान की आज़ादी के सच्चे सिपाही बनो और अपने मुल्क को दूसरी आज़ाद क़ौमों के मुक़ाबिले का बनाने की कोशिश करो। हिन्दू-संगठन तुम्हें कुरान या बाइबिल पढ़ने से मना नहीं करता, दुनियाँ के सभी मज़हबों में जो अच्छी बातें हैं उन्हें ज़रूर ले लो लेकिन हिन्दुस्तान का हक़ सब मज़हबों से ऊपर रक्खो। हिन्दू-संगठन मज़हबी आज़ादी का ज़बर्दस्त मानने वाला है। अगर तुमको कुरान का मज़हब अच्छा ही लगता है और तुम उसमें कोई बुराई नहीं देखते हो तो तुम्हें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसको मानने का पूरा इख्तियार है लेकिन उसको हिन्दुस्तानी जामा पहिना लो और उसके अमल में लानेवाले अच्छे असूलों को अपनी ज़िन्दगी में ढाल लो। इसका ख़याल ज़रूर रक्खो कि अगर कुरान का कोई असूल हिन्दुओं के साथ लड़ने को आमादा करता है या हिन्दुस्तान की भलाई के ख़िलाफ़ है तो उसे फौरन छोड़ दो। हिन्दू-संगठन यह चाहता है कि मुसलमान लोग, मज़हब को, हिन्दुस्तान की भलाई की कसौटी पर तोलना सीखें और मज़हबी दीवानापन छोड़ दें।

अठारहवाँ अध्याय

अछूतोद्धार

मानवी इतिहास का पाठ करने से यह बात भली प्रकार विदित होती है कि समाज की प्रारम्भावस्था से ही ऊँच नीच का भाव मनुष्यों में चला आता है। जब मनुष्य जंगली था, जब वह शारीरिक बल का उपासक था, जब उसे भलाई और बुराई का ज्ञान न था तो वह अपने से कमज़ोर लोगों को समाज में नीचे दर्जे पर रखता था। बलवान और संगठित लोग उच्च श्रेणी के मानेगये और उन्होंने अपना एक वर्ण क़ायम किया, जिसके हाथ में समाज की सारी शक्ति स्थिर रखने की व्यवस्था की गई। आपस की लड़ा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इयों में जो लोग बन्दी होते थे वे दास या शूद्र बनाये गये और उन्हीं से कुल मेहनत मज़दूरी और सेवा का काम लिया गया। लड़ाई लड़नेवाले क्षत्री समाज में बड़ा आदर पाते थे और युद्ध-विद्या के सिवाय दूसरा काम नहीं जानते थे। अपनी भुजाओं के बल से समाज में अपना प्रभुत्व रखना यही उनका कर्तव्य था। जब मज़हब का भाव उदय हुआ तो कुछ लोगों ने जन साधारण के मिथ्या विश्वासों को नया स्वरूप देकर ईश्वर और परलोक की रचना की ताकि इन अज्ञात बातों के द्वारा वे अधिक प्रभुता पा सकें। इस प्रकार क्षत्रियों ने इस लोक का राज्य सम्भाल लिया और ईश्वर के प्रतिनिधियों ने परलोक का—बाकी जनता केवल दास बन गई। जब व्यापार का समाज में प्रवेश हुआ और उसके ज़रिये से धन की प्राप्ति होने लगी, समाज कुछ अधिक सभ्य हुआ तो वैश्यों के लिए भी समाज में जगह निकाली गई और एक नये शब्द " द्विज " का आविष्कार हुआ। क्षत्री राज्य करनेवाले योद्धा, ब्राह्मण ईश्वर के प्रतिनिधि तथा परलोक के ठेकेदार और वैश्य शान्ति के समय व्यापार करनेवाली समुदाय—बस ये तीन वर्ण ऊँचे दर्जे के बनकर बैठ गये; मेहनत मज़दूरी और सेवा का सारा काम करनेवाले लोग शूद्र बने। इस प्रकार समाज में मज़दूरी के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वही शूद्र आज पतित कहलाते हैं। सदियों का अत्याचार इन्होंने सहन किया है और उस अत्याचार के बदले में इन्होंने हिन्दू-जाति को दुर्बल भी बना दिया है। मज़दूरी की महत्ता समाज में से लोप हो गई है और समाज का सारा चक्र जन्म के आधार पर चलता है। योरुप में भी इसी प्रकार सामाजिक भेदों का विकास हुआ था; वहां भी भूमिपति और पादरी, दोनों भद्र लोग माने जाते थे और उन्हीं के वंशज समाज में प्रभुता पाते थे। धीरे धीरे योरुप की जनता चैतन्य हुई और उसे अपने अधिकारों का ज्ञान हुआ। पहिले धार्मिक विप्लव हुआ क्योंकि इसके बिना कोई भी दूसरा सुधार संभव नहीं हो सकता। धार्मिक बन्धन ढीले होने पर लोगों को स्वतन्त्र सोचने की आदत हुई; वे अपनी दशा पर विचार करने लगे; आँख कान खोल कर चलने लगे और उच्च जातियों के साथ अपना मुक़ाबिला करने लगे; समाज में संघर्ष शुरू हुआ; व्यापार की वृद्धि हुई; कल कारख़ाने बनने लगे; मज़दूरों के संघ क़ायम हुए और समाज में साम्यवाद के युगका प्रादुर्भाव हुआ।

योरुप की उसी उन्नति के पुण्य प्रताप से भारतवर्ष में सामाजिक अशान्ति प्रारम्भ हुई। रेलों के द्वारा जन साधारण एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जाने लगे; उन्हें मुक़ाबिले का मौक़ा मिला; ईसाई मिशनरियों ने अपनी सभ्यता की अच्छी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बातें ईसाई-धर्म की बरकतें बताकर हिन्दू समाज के मज़दूर पेशा लोगों को निगलना शुरू किया। हिन्दू समाज के अत्याचारों से पीड़ित लाखों हिन्दू ईसाई होगये और हिन्दू समाज को छोड़कर एक अलग सम्प्रदाय बना बैठे। मुसलमानों ने पहिले से ही हिन्दू समाज को इस दुर्व्यवस्था का बहुत कुछ फ़ायदा उठा लिया था। दोनों विधर्मी ताक़तों के दबाव से हिन्दू समाज चैतन्य हो उठा और उसने अपनी भयंकर भूल पर विचार करना शुरू किया। प्रश्न यह उठा कि पतितों का उद्धार कैसे हो? पुराने ढर्रे के हिन्दू इन कर्मकारों के साथ खान पान और विवाह शादी नहीं करना चाहते; वे उनको अपने कुओं और देवालयों में भी ले जाने के विरोधी हैं; वे इन कर्मकारों के लिये अलग कुएं, मन्दिर, पाठशालायें बनवा देने को तय्यार हैं, पर क्या इससे काम चल जायगा?

आज हमें नये युग के धर्म को स्वीकार करना है और सदियों के पुराने हानिकारक रिवाजों को दूर करना है। सब से पहिले तो अछूतों को अपना उद्धार करने के लिये स्वयं खड़े होना चाहिये। हिन्दू नेताओं को ईसाई और मुसलमान होने का अल्टीमेटम देकर जो अछूत बन्धु अपना उद्धार करने का इरादा रखते हैं वे बड़ी भूल करते हैं। भला ऐसी धमकियों से कभी कोई सुधार हुआ करता है? यह तरीक़ा "समाज द्रोह" सिखलाता है और ऐसे समाजद्रोही लोग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कभी भी अपना उत्थान नहीं कर सकते। हमारे, ऐसे बहुत से बन्धु सौ डेढ़ सौ बरस से इस्लाम मज़हब में चले गये, पर उन्होंने आज तक कुछ भी उन्नति नहीं की, उल्टा अधिक भ्रष्ट और जंगली बन गए। मनुष्य का उत्थान सत्य और न्याय के लिये युद्ध करने से होता है, मज़हबी दीवानापन से नहीं। हमारे अछूत भाइयों का परम कर्तव्य यह है कि वे ज़बर्दस्त संघ बनाकर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए खड़े हों। वे सदाचार और पवित्रता के नियमों का पालन करें; अपनी पाठशालायें स्थापितकर अपनी सन्तान में विद्या का प्रचार करें। उच्च वर्णाभिमानी यदि उन पर अत्याचार करें तो वे संघबद्ध होकर उस अत्याचार का सामना करें। हम बहुधा गांओं में बसे हुए भंगियों और चमारों के साथ किये हुए अन्याय के समाचार सुनते रहते हैं; आज हम अपने उन दलित भाइयों को अपना प्रेम संदेश सुनाते हैं। जो अपनी मदद आप नहीं करता, उसकी सहायता ईश्वर भी नहीं करता। इसलिये हमारे अछूत भाइयों का यह परमधर्म है कि वे अन्याय और अत्याचार का विरोध करना सीखें। बीज जब तक स्वयम् मिट नहीं जाता तब तक वह दूसरे बीजों को पैदा नहीं कर सकता। प्राणों के मोह को त्याग कर जो लोग अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध खड़े होते हैं उन्हीं को अधिकारों की प्राप्ति होती है और उन्हीं का अभ्युत्थान होता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लोग हमसे कहेंगे कि क्या इस प्रकार हिन्दू समाज में घरेलू युद्ध नहीं होगा? हाँ होगा, पर इस की ज़िम्मेदारी अत्याचार और अन्याय करनेवालों के सिरों पर होगी। हिन्दू समाज के हितैषी उच्च वर्ण के लोगों को अब अपना कर्तव्य निश्चित करलेना चाहिए। नये युग के धर्म के अनुसार समाज में अछूतपन एक कलंक है, जिसे कोई भी भलाआदमी सहन नहीं कर सकता। समाज व्यक्तिगत स्वतंत्रता को मानता है। इसके अनुसार कोई भी मनुष्य किसी को दूसरे के साथ रोटी बेटी का व्यवहार करने के लिये मजबूर नहीं कर सकता; लेकिन समष्टी के भी धर्म होते हैं, जिनके प्रति समाज के सदस्यों का कुछ कर्तव्य होता है। जब हम साफ़ देख रहे हैं कि दूसरे धर्मवाले हमारे भाइयों को सामाजिक सहूलियतें देकर हमारी हानि पर तुले हुये हैं तो हमें देश काल समझ कर अपनी रक्षा करनी ही होगी। राजनीतिक अधिकार समाज के सब सदस्यों को एक जैसे मिलने ज़रूरी हैं। पब्लिक कुएं और मन्दिर, पब्लिक उद्यान और पाठशालायें, पब्लिक दफ़्तर और कौन्सिलें सब में एक भंगी के लड़के का ऐसा ही अधिकार है जैसा कि एक ब्राह्मण के बालक का; हम यदि अपने कर्मकार भाइयों को यह पब्लिक अधिकार देते हुए घबराते हैं तो हम केवल अपनी समाज के साथ द्रोह करते हैं। सैकड़ों वर्षों की कुरीतियों से जर्जरित हिन्दू समाज को आज संगठित करने का समय आगया है। छात्र-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म किसी एक समुदाय का धर्म नहीं बल्कि सबका साझा धर्म है; ईश्वर और परलोक के नाम पर हम अपनी दुकानदारी नहीं चला सकते, आज सेवा और बलिदान की कसौटी पर ब्राह्मण वर्ण तोला जाता है; आज मनुष्यों और स्त्रियों के लिए बराबर अधिकार का युग है। ऐसे युग में हिन्दुओं को अछूतपन का अन्त करना ही होगा और अपनी प्राचीन सभ्यता की रक्षा तथा अपने प्यारे देश की स्वाधीनता प्राप्ति के हेतु हिन्दू-संगठन के सुदृढ़ क़िले की रचना करनी ही होगी। वह संगठन सात करोड़ अछूतों को बराबर के अधिकार दिये बिना नहीं हो सकता।

क्रान्ति के सैनिको! ग्राम ग्राम और नगर नगर में साम्यवाद के संदेश को लेजाओ और अपने अछूत भाइयों को उठाओ। उन्हें शुद्धाचार की शिक्षा देकर भारतवर्ष की सभ्यता और उसके साहित्य की महिमा सुनाओ और उन्हें कहो कि हिन्दुस्तानके गौरव के लिये जीना ही सच्ची ज़िन्दगी है। उन पर जो ज़िमीदार अत्याचार करते हैं उनसे मिलकर दलितों के दुःखों की निवृत्ति के उपाय करो; अछूतों में आत्मविश्वास भरो और उच्च वर्ण के लोगोंको शान्ति और प्रेम से समझा बुझाकर अछूतों के उद्धार-कार्य में लग जाओ। सात करोड़ अछूत, जब अन्याय और अत्याचार का मुक़ाबिला करना सीख जायेंगे तब हिन्दू-संगठन की बड़ी सुन्दर मशीन तय्यार हो जायेगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उन्नीसवाँ अध्याय

शुद्धि

जब से शुद्धि की प्रगति में देश के प्रमुख हिन्दू नेता भाग लेने लगे हैं तबसे मुसलमान और ईसाइयों में बड़ी हलचल मची हुई है। राष्ट्रीयता के रँग में रंगे हुए कांग्रेस-प्रेमी भी शुद्धि की प्रगति के अनुकूल नहीं, वे कहते हैं कि इससे हिन्दू मुस्लिम एकता में बड़ी बाधा पड़ती है और कांग्रेस के कार्य्य को नुक़सान पहुँचता है। बड़े बड़े मुसलिम नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी को वर्त्तमान हिन्दू मुसलिम वैमनस्य का जन्मदाता कहते हैं, और बहुत से बेसमझ मुसलमान, माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीय जी के सिर पर हिन्दू मुसलिम वैमनस्य का सारा दोष थोपते हैं।

अब विचारना यह है कि शुद्धि है क्या चीज़। क्यों मेरे जैसा राष्ट्रधर्म का माननेवाला पुरुष आज शुद्धि को प्रगति का समर्थन करता है? अमरीका से लौटकर मैंने पिछले ग्यारह वर्ष निरंतर राष्ट्रधर्म का प्रचार किया और धार्मिक स्वतंत्रता की शिक्षा अपने देश के लोगों को दी। मेरी "मनुष्य के अधिकार" नामक पुस्तक इस बात की साक्षी है; प्रत्येक मुसलमान देशबन्धु उस किताब को पढ़कर देख सकता है। जब सन् १९२३ में मैं आंखों का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इलाज कराने के लिये बर्लिन (जर्मनी) गया और वहां उस दूर देश में बैठे हुए भारतीय मुसलमानों के औरंगज़ेबी ढंग को देखा तथा हिन्दुस्तान से हिन्दू मुसलमानों के लड़ने झगड़ने की खबरें सुनीं तो मैंने हिन्दू मुस्लिम एकता के गम्भीर प्रश्न पर विचार करना आरम्भ किया। क्या हिन्दू और मुसलमानों में एकता हो सकती है? जो हिन्दू ईसाइयों और पारसियों के साथ प्रेम पूर्वक रह सकते हैं वे मुसलमानों के साथ क्यों लड़ेंगे? कभी ईसाइयों और पारसियों ने हिन्दू मन्दिर नहीं तोड़े, कभी झुंड बनाकर उन्होंने हिन्दू घरों पर हमला नहीं किया, कभी वे हिन्दू मूर्तियां नहीं तोड़ते, और न कभी वे हिन्दू त्योहारों में ही बाधा डालते हैं; फिर मुसलमान ही ऐसा क्यों करते हैं? क्या नौकरशाही ईसाइयों और पारसियों को हिन्दुओं के विरुद्ध नहीं उभाड़ सकती? मुसलमानी मज़हब में ही क्या ऐसा बारूद भरा है जो ज़रा सी दियासलाई लगाने पर भबक उठता है और देश की स्वाधीनता के लिये भयावना बन जाता है? मैंने इन प्रश्नों पर खूब विचार करना शुरू किया। यदि इस्लाम में दूसरे धर्मवालों को हानि पहुंचाने वाला बारूद मौजूद है तो इस्लाम धार्मिक स्वतंत्रता का दुश्मन है। ऐसे असहनशील इस्लामी मज़हब के माननेवाले लोगों के साथ किसी धर्मवाले की एकता नहीं हो सकती और ऐसे ख़तरनाक मज़हब के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माननेवाले लोगों के साथ मिलकर आज़ादी की लड़ाई लड़ने का प्रयत्न केवल मूर्खता है । हिन्दू-मुस्लिम-एकता एक असंभव स्वप्न है । यदि हिन्दू मुसलमानों में एकता स्थापित करनी है, तो सबसे पहिले इस्लाम की उस ख़तरनाक बीमारी का इलाज करना प्रत्येक देशभक्त भारतीय का परम धर्म है ।

इस प्रकार के विचार लेकर मैं योरुप से लौटा । सन् १६२४ के सितम्बर मास में जब मुझे अफ़ग़ानिस्तान की रोमांचकारी घटना का पता लगा, जब मैंने यह पढ़ा कि मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी के एक चेले को काबुल नगर में अफ़ग़ान सरकार की आज्ञा से केवल धार्मिक मतभेद के कारण पत्थरों से मार दिया गया है, जब मैंने यह पढ़ा कि देवबन्द (ज़िला) सहारनपुर के इस्लामी मुल्लाओं ने काबुल की रोमांचकारी घटना की प्रशंसा की है और उसे इस्लामी मज़हब का बड़ा पाक असूल बतलाया है, और हिन्दुस्तान के दूसरे बड़े बड़े मौलवियों ने भी देवबन्द वालों का समर्थन किया है तो मेरे सारे भ्रम—सारे संशय—दूर होगये । मुझे निचिश्त तौर से पता लग गया कि भारतवर्ष में जो स्वरूप इस्लाम का मौलवी लोग बतलाते हैं वह भारतवर्ष की स्वाधीनता का विकट शत्रु है, वह हिन्दू मुस्लिम एकता का कट्टर विरोधी है, वह सभ्यता के लिये ज़हर क़ातिल है, वह देश को शान्ति के मार्ग में खौफ़नाक कांटा है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह कांटा कैसे निकले ? मैंने इस पर विचार करना शुरू किया। मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि हमें भी योरुप का रास्ता पकड़ना पड़ेगा। योरुप के विद्वानों ने मज़हबी दीवानापन का इलाज बुद्धिवाद (Rationalism) से किया है। मुसलमान जनता में बुद्धिवाद का प्रचार कर उन्हें मौलवी और मुल्लाओं की गुलामी से बचाना चाहिए। इस्लाम दूसरे मज़हबवालों को बिल्कुल आज़ादी नहीं देता, वह उन्हें काफ़िर बतलाता है ; मुसलमान कठोर मज़हबी गुलामी की ज़ंजीरों से जकड़े हुए हैं, उनमें देश की उन्नति करनेवाली नई बातों का प्रचार नहीं हो सकता जब तक कि उन्हें स्वतंत्र विचार करने का हक़ न मिले। मुसलमान, क़ुरान की किसी आयत के बख़िलाफ सोच नहीं सकता। कुरान की आयतों का जो तर्जुमा हदीसों में है, वह उन हदीसों का गुलाम है। हदीसों के लिखनेवाले कूपमण्डूक की तरह थे, उनको मरे सैकड़ों वर्ष हो गये; मौलवी और मुल्ला हदीसों के पंडित हैं वे उन्हीं पुरानी सड़ी गली हदीसों की बातों के मुताबिक़ हिन्दुस्तान के मुसलमानों को चलाना चाहते हैं, इसीलिये हिन्दू मुसलमानों का वैमनस्य तब तक नहीं मिट सकता जब तक कि मुसलमानों में ज़बर्दस्त मज़हबी क्रान्ति न की जाय।

वह क्रान्ति कैसे हो ? क्रान्ति लीपापोती नहीं करती है, क्रान्ति पत्तों को नहीं सींचती है, क्रान्ति आधा तीतर आधा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बटेर नहीं मानती, क्रान्ति बीमारी का पूरा इलाज करती है, क्रान्ति सात करोड़ मुसलमानों को शुद्ध करेगी और उन्हें राष्ट्र-धर्म के झंडे के नीचे लायेगी।

असल में शुद्धि का सम्बन्ध धार्मिक स्वतन्त्रता के साथ है। राष्ट्र-धर्म के अनुसार धार्मिक स्वतन्त्रता मनुष्य का ईश्वर-दत्त अधिकार है। राष्ट्र-धर्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को विचार-स्वातंत्र्य (Freedom of Thought) आत्मा की स्वतंत्रता (Freedom of Conscience) मिलनी ज़रूरी है। यह उसका ईश्वरदत्त अधिकार है।

राष्ट्र का कोई भी व्यक्ति इक्कीस वर्ष की उम्र के बाद अपनी इच्छानुकूल किसी भी सम्मति, धार्मिक सिद्धान्त अथवा सम्प्रदाय को स्वीकार कर सकता है; इक्कीस वर्ष की आयु की शर्त इसलिये की गई है कि धर्मान्ध लोग मज़हब की आड़ लेकर समाज में अशान्ति न फैला सकें और प्रत्येक व्यक्ति सोच विचार के बाद किसी दूसरे सम्प्रदाय में प्रवेश करे। इस शर्त की, उन्नत और सभ्य जातियों में कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि वहाँ अपनी अपनी भेड़ें बढ़ाने का प्रयत्न नहीं किया जाता, बल्कि राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अधिकारों को सम्मान की दृष्टि से देखता है और सदा ज्ञान की वृद्धि के साथ साथ मत परिवर्तन की चेष्टा करता है।

परन्तु भारतवर्ष का बाबा आदम न्यारा है। यहां राष्ट्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्म की शिक्षा जनसाधारण को दी नहीं गई, यहां हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे से अलग जुदा जुदा समाज में रहते हैं, यहां विदेशी गवर्नमेण्ट इन दो दलों को आपस में लड़ाने में ही अपना कल्याण समझती है, यहां के मुसलमान मज़हबी लीडर दोनों दलों को अलग रखने में ही अपनी लीडरी की रक्षा माने हुए हैं, यहां स्वार्थी पोलिटिकल लीडर कौंसिलों और म्यूनिसिपेलटियों में अपना स्वार्थ पूरा करने के लिये दोनों को अलग अलग रखना अपना कर्त्तव्य मानते हैं, ऐसे देश में धार्मिक स्वतन्त्रता जैसे पवित्र मानवी अधिकार का मूल्य जनता क्या जाने। हम अपने पाठकों के सामने शुद्धि की प्रगति का यथार्थ स्वरूप रखना चाहते हैं ताकि राष्ट्र-धर्म के प्रेमी शुद्धि के असली तत्व को समझ जायें और इस प्रगति के सहायक इसको राष्ट्रीय दृष्टि के अनुसार चलावें।

धार्मिक स्वतन्त्रता का सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र विचार रख सके और उसे अपना धार्मिक सिद्धान्त बदलने की आज़ादी हो। मुसलमानी धर्म के अनुसार कोई व्यक्ति एक बार इसलाम मज़हब में आकर फिर उसको छोड़ नहीं सकता, यदि वह उससे मुनकिर होजाय तो कुरान के क़ानून के मुताबिक़ उसको क़त्ल की सज़ा मिलनी चाहिये। भूपाल की मुसलमानी रियासत में इसलाम के इसी क़ानून का सहारा लेकर मुरतिद (इस्लाम से मुनकिर) को तीन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी जाती है। अफ़ग़ानिस्तान में इसी क़ानून के आधार पर मिर्ज़ा क़ादियानी के तीन चेलों को अफ़ग़ानी सरकार के हुक्म से पत्थरों से मार दिया गया और हिन्दुस्तान के मौलवी मुल्लाओं ने अफ़ग़ानी सरकार के इस क्रूर कृत्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इसलिये यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि इस्लाम धार्मिक स्वतन्त्रता का दुश्मन है और जो मज़हब धार्मिक स्वतन्त्रता का दुश्मन होता है उसके माननेवाले राष्ट्र-धर्म को समझ भी नहीं सकते। भारतवर्ष में राष्ट्र-धर्म के प्रचारकों को मुसलमानों के इस मज़हबी दीवानापन का इलाज करना नितान्त आवश्यक है और उसका एक रास्ता यह है कि जो हिन्दू अज्ञानवश मुसलमान हो गये हैं, जो इस्लाम को छोड़ना चाहते हैं, जिनमें इस्लाम का बहुत थोड़ा प्रवेश है, ऐसे हिन्दुओं को बहुत शीघ्र इस्लाम से निकालकर हिन्दू समाज में सम्मिलित कर लिया जाय। इस ढंग से जितनी संख्या मुसलमानों की देश में कम होगी उतना ही अधिक राष्ट्र-धर्म का क्षेत्र विस्तृत होगा, क्योंकि हिन्दुओं में मुसलमानों की अपेक्षा धार्मिक स्वतंत्रता बहुत अधिक है; हिन्दू राष्ट्र-धर्म को बहुत शीघ्र समझ सकते हैं। कई सदियों से हिन्दू समाज में से निकल निकल कर लोग ईसाई और मुसलमान हो रहे थे। सामाजिक बन्धनों के कारण हिन्दू समाज से निकलना आसान है परन्तु उसमें पुनः प्रवेश करना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नितान्त कठिन है। मुसलमान और ईसाईयों को, हिन्दुओं को अपने मज़हब में लाने की आदत पड़ी हुई थी इसलिये जब यह नई प्रगति—मुसलमानों और ईसाइयों को हिन्दू बनाना—का प्रारम्भ हुआ, और वह भी बड़े ज़ोर से, तो ईसाई और मुसलमानों में खलबली का मचना स्वाभाविक था। जो मज़हबी जोश ईसाई और मुसलमान हिन्दुओं को अपने मत में लाने के लिये उपयोग में ला रहे थे वही जोश हिन्दुओं ने भी दिखलाना शुरू किया। पश्चिम की ओर बहनेवाली धारा पूर्व की ओर बहने लगी; बस, इसी कारण मुसलमान नेता अपनी खेती उजड़ी देखकर हिन्दू नेताओं के पीछे हाथ धोकर पड़ गए और मौलवी मुल्ला लोग अत्यन्त घृणित और नीच उपायों से अबोध हिन्दू बच्चों और स्त्रियों को बहकाने लगे। देश में तबलीग़ और तनज़ीम का जाल बिछाया गया; खिलाफत कमेटियों और जमैतुलउल्मा के दिग्गज भी सारी शक्ति लगाकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की योजना में लगे। आज अंग्रेज़ी राज्य में, हज़रत ईसा की इस बीसवीं सदी में, भारतवर्ष के स्टेशनों, बाज़ारों, मेलों और तमाशों में मुसलमान गुण्डे अबोध हिन्दू लड़के और लड़कियों को दिन दहाड़े उठा ले जाते हैं। समाचारपत्रों में नित्य ऐसी दर्दनाक घटनाओं के समाचार छपते हैं। मुल्क में आज़ादी से घूमना फिरना भी भयपूर्ण होता जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रश्न यह होता है कि इस ख़तरे का इलाज क्या ? गवर्नमेन्ट तो अपनी है नहीं इसलिए हिन्दू समाज को इस संकट के समय अपनी रक्षा के लिए खड़े हो जाना चाहिए और सेवासमितियों का संगठन कर गुण्डों को सज़ा देनी चाहिए। मगर इसका बड़ा मज़बूत इलाज मुसलमानों की शुद्धि है। जब हम आसान से आसान तरीक़े से मुसलमानों को हज़म करने लग जायंगे तो इसलाम का खतरा सदा के लिए मिट जायगा। बुद्धिवाद द्वारा धर्मान्धता का कैसे नाश हो सकता है, इस पर हम अलग अध्याय में लिखेंगे, यहां केवल शुद्धि के विषय में हमारा निवेदन यह है कि मुसलमानों में धार्मिक स्वतंत्रता लाने और गुण्डों का धन्धा नष्ट करने के लिए शुद्धि एक बड़ा ज़बर्दस्त साधन है। जब साधारण तरीकों से हिन्दूसमाज अपने बिछुड़े हुए लोगों को वापस लेने लगेगा तो गुण्डों की रुपये से मदद करनेवाले साफ़ देख लेंगे कि उनका उद्योग सब निष्फल हुआ जाता है। जब तक शुद्धि का आसान तरीक़ा निकालकर हज़ारों मुसलिमों को हज़म नहीं किया जाता, जब तक झूठी छुआछूत और इसलामी भूत का डर है तभी तक यह तबलीग़ का शोर रहेगा। इसलिये शुद्धि के कार्य को बाँट लेना चाहिये और जुदा जुदा दलों के लोग इस काम को उठालें। शुद्धि के तीन स्वरूप हैं –

(१) जन्म के मुसलमानों का मज़हब परिवर्त्तन।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२) हिन्दू समाज से गये हुए अधकचरे मुसलमानों का पुनः हिन्दू समाज में प्रवेश।

(३) मुसलमान और ईसाइयों की राष्ट्रीय शुद्धि। अब हम इनकी व्याख्या करते हैं।

१—धार्मिक स्वतन्त्रता के सिद्धान्तानुसार किसी भी मुसलमान और ईसाई को अपना मज़हब छोड़कर हिन्दू धर्म में आने का हक़ है। यदि हिन्दू यह समझते हैं कि उनका धर्म सर्वश्रेष्ठ है. यदि वे मानते हैं कि आत्मा का मोक्ष शुभ कर्मों से होता है, पैग़म्बर और मसीहा पर ईमान लाने से नहीं, यदि उनका ख़याल है कि हिन्दू धर्म के बिना संसार में शान्ति नहीं हो सकती तो उन्हें जी जान होमकर ईसाई और मुसलमानों को अपने धर्म में लाने को चेष्टा करनी चाहिये और उन्हें अपनी समाज में मिलाकर ऐसा हज़म करना चाहिये कि डकार भी न लें। इसमें इनके दो फ़ायदे हैं, एक तो इनके अपने धर्म का प्रचार और राष्ट्र-धर्म फैलाने में सुगमता; जिस प्रकार ईसाई और मुसलमान मुद्दत से इस काम में लगे हुए हैं उसी प्रकार हिन्दुओं को भी पिछली कमी पूरी कर दुगुने जोश से इस काम में जुटना चाहिये, इससे हिन्दू समाज का बड़ा बल बढ़ेगा और इसका हाज़मा दुरुस्त हो जाने से हिन्दू समाज का शरीर नीरोग हो जायगा। क्रान्ति के प्रत्येक सैनिक को धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धान्त को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रक्षा के लिए मुसलमानों में मज़हब परिवर्तन करनेवाले लोगों की संख्या बढ़ाने का यत्न करना चाहिये ताकि इस्लाम की अराष्ट्रीय बातें शीघ्र निकल जायँ और मुसलमान देश के सेवक बन सकें ।

२—जो हिन्दू अधकचरे मुसलमान हैं और जिन्हें हिन्दू समाज ने निर्दयता से अपने से अलग रक्खा है ऐसे हिन्दुओं को बहुत शीघ्र अपने समाज में मिलाकर उन्हें भारतवर्ष के गौरव की गाथा सुनानी चाहिये और भारतमाता के सच्चे सेवक बनाकर उन्हें स्वतंत्रता के सिपाही बनाना उचित है इसके लिये किसी लम्बे चौड़े संस्कार की ज़रूरत नहीं ; आसान से असान तरीक़ा समाज में मिलाने का निकाल कर अधिक परिश्रम उनकी शिक्षा तथा आचार व्यवहार के सुधार का करना चाहिये ।

३—तीसरी बात बड़े महत्त्व की है और असल में राष्ट्रीय दृष्टि से शुद्धि का सच्चा स्वरूप इस तीसरी बात में है। मुसलमान और ईसाइयों के साथ हिन्दुओं का कोई मज़हबी झगड़ा नहीं, यह केवल सभ्यता और साहित्य की रक्षा का झगड़ा है । मुसलमान और ईसाई लोग अपनी अपनी मज़हबी किताबों के ऐतिहासिक भाग की बहुत कम परवाह करें और उसके स्थान पर भारतीय सभ्यता और भारतीय इतिहास की शिक्षा का प्रचार अपने समाजों में बढ़ावें। अपने अपने मज़हब के सदाचार के सिद्धान्तों को अपने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवन में धारण करें और अपने विदेशी मज़हबों को भारतीय जामा पहना दें। मुसलमान अरबी फ़ारसी के बजाय हिन्दी और संस्कृत को अपनावें और ईसाई रोमन लिपि को छोड़ नागरी लिपि के प्रेमी बनें। यदि उनका विश्वास अपने पैग़म्बर और मसीहा पर दृढ़ है तो उन्हें इस विश्वास को रखने की पूरी स्वतन्त्रता है पर वे अपना भेष, अपनी भाषा और अपने नामों को भारतीय रूप दें। मुसलमानों को अरबी फ़ारसी के नाम न रखकर हिन्दुस्तानी सभ्यता के नाम रखने चाहिये और इसी प्रकार ईसाइयों को अँगरेज़ी और यहूदी नाम न रखकर सुन्दर सरल हिन्दी नाम रखने उचित हैं। थोड़े में अपने मज़हबों का विदेशीपन निकालकर उसे स्वदेशी जामा पहनावें। हिन्दू भक्ति-मार्ग की महिमा समझते हैं इसलिये ईसाइयों के ईसा का प्रेम उन्हें कुछ दुःख नहीं देता और न मुसलमानों की मुहम्मद साहब के प्रति श्रद्धा हिन्दुओं को काट खायेगी। हिन्दुओं की इच्छा यह है कि प्रत्येक सम्भव उपाय से भारत का विदेशीपन दूर कर दिया जाय और जो विदेशी मज़हब भारत में जड़ पकड़ गये हैं उन्हें भारतवर्ष के जलवायु के अनुकूल बना लिया जाय। मुसलमान लोग विदेशियों की तरह भारत में न रहें बल्कि वे प्राचीन आर्य्यों की सभ्यता के भागीदार बनें। वे मूर्त्ति पूजा न करें, राम और कृष्ण को अवतार न मानें, वेदों को ईश्वरकृत स्वीकार न करें लेकिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीन ऋषि-मुनियों को अपना बुजुर्ग मानकर उनकी जीवनियां पढ़ें, हिन्दू त्योहारों में सम्मिलित हों, गोरक्षा के प्रेमी बनें, सस्कृत साहित्य का अभ्यास करें और अपने आप को पूरा भारतीय बनावें। राष्ट्रीय शुद्धि का यही मार्ग है, अर्थात् सब को धार्म्मिक स्वतंत्रता, पर सब में भारतीयपन की व्यापकता लाना इसी में राष्ट्र का कल्याण है।

पहला काम अर्थात् जन्म के मुसलमानों को हिन्दू समाज में लाना, यह काम आर्य्यसमाज का है। आर्य्यसमाज के प्रत्येक सभासद का यह धर्म है कि वह कम से कम जन्म के पाँच मुसलमानों को प्रत्येक वर्ष शुद्ध करके आर्य्यसमाज में सम्मिलित करे और इस प्रकार मुसलमानों में धार्मिक स्वतंत्रता का प्रचार बढ़ाने में राष्ट्र की सहायता करे। जब जन्म के मुसलमानों की शुद्धि एक मामूली बात हो जायगी तो कुरान के मुरतिद को क़त्ल करने के हुक्म का ज़हरीला प्रभाव नष्ट हो जायगा और मुसलमानों में उदारता आ जायगी। वे ज़मीर की आज़ादी का आदर करेंगे और उनका दृष्टिकोण न्यायसंगत तथा विस्तृत हो जायगा। अतएव भारतवर्ष के इस संकट के समय आर्यसमाज के लोगों को अपनी सारी शक्ति लगाकर राष्ट्र की सहायता करनी चाहिये और गढ़े में गिरे हुए दीन मुसलमानों की ओर अपनी सहायता का हाथ बढ़ाना चाहिये।

दूसरो प्रकार के मुसलमानों की शुद्धि करने में सनातन-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्मी हिन्दू पूरा योग दे सकते हैं और उन्हें अपने नाममात्र के बिछुड़ेहुए नौमुसलिमों को पुनः हिन्दू समाज में लाना चाहिये। कहने का तात्पर्य्य यह है कि मुसलमान होने का जो हौआ हिन्दू समाज में घुसा हुआ है उसका गला घोंटना हमारा कर्त्तव्य है। मौलवी मुल्ला और गुण्डे मुसलमान यह भली प्रकार समझ जायँ कि हिन्दुओं को मुसलमान बनाना व्यर्थ है क्योंकि हिन्दू लोग मुसलमान बनकर फिर झट से शुद्ध होकर पुनः हिन्दू समाज में मिलजाते हैं। तब्लीग़ का सारा ज़ोर शुद्धि की इस प्रगति से चौबीस घण्टे में नष्ट हो सकता है। भारतवर्ष के सारे हिन्दुओं में यह बात आम तौरपर फैल जानी चाहिये कि मुसलमान और ईसाई के हाथ का खा लेने से कोई हिन्दू सदा के लिए पतित नहीं हो जाता बल्कि केवल गायत्री मंत्र के जाप से वह पुनः अपनी समाज में प्रवेश कर सकता है अथवा गंगाजल के प्रयोग से। इस प्रकार का प्रचार करने से बहुत शीघ्र मुसलमानों में धार्मिक स्वतन्त्रता के भाव उदय होंगे और उनका सम्मान राष्ट्र-धर्म की ओर होने लगेगा।

तीसरी प्रकार की राष्ट्रीय शुद्धि कांग्रेस के लोग करें। उनका कर्तव्य है कि वे मुसलमान और ईसाइयों से उनके विदेशी मज़हबों का विदेशीपन यथासम्भव शीघ्र निकालने की चेष्टा करें ताकि भारत में राष्ट्र-धर्म को पनपने का मौक़ा मिले। विदेशी लिपि, विदेशी भाषा, विदेशी नाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और विदेशी साहित्य को हटाने की भावना मुसलमान और ईसाइयों में जागृत होनी चाहिये ताकि उनके हृदयों में भारतीयता के अंकुर स्थान पावें और वे राष्ट्र-धर्म का स्वरूप ग्रहण करें। कांग्रेस के नेताओं का यह परम कर्त्तव्य है कि वे बहुत शीघ्र ईसाइयों और मुसलमानों की राष्ट्रीय शुद्धि करें। यदि उन्होंने अपने इस गम्भीर कर्त्तव्य की अवहेलना की तो भविष्य में देश के लिए इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।

बीसवाँ अध्याय

हिन्दू संगठन और देशी रियासतें

हिन्दू समाज के इस घोर संकट के समय भारत वर्ष की हिन्दू रियासतों का क्या कर्त्तव्य है ? इस प्रश्न पर अब हम विचार करते हैं। हिन्दू संगठन की नीरोग प्रगति का प्रचार देशी रियासतों में ज़ोर शोर से होना चाहिये। काँग्रेस की नीति अब तक यह रही है कि देशी रियासतों के किसी काम में दख़ल न दिया जाय लेकिन हिन्दू संगठन ऐसा नहीं कर सकता। हिन्दू संगठन की प्रगति भारतवर्ष की सभ्यता, उसके गौरव, और उसके साहित्य की रक्षा के लिये है। यह हिन्दुओं में ऊँचे दर्जे का बलिदान करने की भावना भरने के लिये है। ताकि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दू आदर्शों की रक्षा हो। देशी रियासतों के हिन्दू-शासकों को चैतन्य होकर इस हिन्दू-प्रगति से उत्पन्न होनेवाले हितकर परिणामों का लोभ लेना चाहिए। उन्हें अपने प्राचीन बुजुर्गों के गौरव की गाथा स्मरण कर हिन्दू-संगठन की पुनीत प्रगति में पूरा योग देना उचित है। हिन्दू समाज की छुआछूत को मिटाकर, जाति पाँति की निकम्मी दीवारों को गिराकर, अछूतों को सामाजिक अधिकार देकर यदि हिन्दू शासक अपनी प्रजा को संगठित करें तो देश में एक चमत्कार हो जाय। भारतवर्ष की एक तिहाई आबादी देशी रियासतों में रहती है और उनमें अधिकांश संख्या हिन्दुओं की है। हिन्दू संगठन का वर्त्तमान प्रोग्राम पोलीटिकल नहीं, यह सामाजिक सुधार का प्रोग्राम है। बिखरी हुई हिन्दू-शक्तियों को संगठित करने में हिन्दू शासकों का अपना कल्याण है इसलिये हम विनीत भाव से देशी रियासतों के अधिकारियों से निवेदन करते हैं कि वे हमारी निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें।

(१) अपनी रियासतों में चुन चुन कर हिन्दू जाति के हितैषी अधिकारियों को नियुक्त करें। ख़ास तौर से तलाश कर हिन्दू सभ्यता के अभिमानी योग्य हिन्दुओं को रियासत के ओहदों पर नियत करें, ताकि वे हिन्दू हितों को सामने रखकर हिन्दू समाज के संगठित करने में सहायक हों। किसी अच्छे हिन्दू अधिकारी के मिलते हुए अयोग्य मुस-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लमान अथवा अन्य विधर्मी व्यक्ति को हरगिज़ रियासत के किसी ओहदे पर नियुक्त न करें। आज आंखें खोलकर चलने का समय है। हमें पिछले इतिहास से कुछ शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

(२) रियासत के गांव गांव और क़स्बे क़स्बे में हिन्दू सभाएँ स्थापित कर जनता में हिन्दू त्योहारों और उत्सवों को मनाने का विचार फैलाया जाय। क्षात्रधर्म की शिक्षा हिन्दू जन साधारण को दी जाय तथा सामाजिक जीवन लाने के लिए आपस में मिलकर बैठने, सहानुभूति करने की योजनाएँ बनाई जायँ।

(३) रियासत के अछूतों को हिन्दू धर्म का गौरव सिखलाकर उन्हें उचित सामाजिक अधिकार देने का प्रयत्न करना चाहिए। उनको तनख़्वाहें बढ़ाकर उन्हें साफ सुथरा रहने की शिक्षा दी जाय तथा पब्लिक कुओं और मन्दिरों में जाने का रिवाज चला देना उचित है ताकि हमारे अछूत बन्धु हिन्दू समाज के मज़बूत अंग बन जायँ और अवसर पड़ने पर हमारी पूरी सहायता करें।

(४) देशी रियासतों में मुसलमानों की शुद्धि का प्रचार ज़ोर शोर से होना चाहिये। आर्यसमाजियों को खासतौर से बुलाकर इस विषयमें उनकी पूरी सहायता करनी उचित है धर्म का परिवर्त्तन स्वेच्छा और विवेकपूर्वक होना चाहिये। मुसलमानों को हिन्दू धर्म में लाना बड़े पुण्य का काम है। रियासतों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अधिकारियों का अपने धर्म के गौरव तथा अपनी भावी सन्तान के हित का ख़याल कर इस काम में पूरा योग देना चाहिए ।

बस, इन चार बातों पर अमल करने से हिन्दू रियासतों में संगठन का काम भली प्रकार हो सकेगा । हमारे इस संगठन के बिगुल को रियासतों के कोने कोने में बजाना चाहिये और इसका प्रचार घर घर में कर देशी रियासतों की हिन्दू जनता को भली प्रकार से संगठित कर बलशाली बनाना उचित है।

इक्कीसवाँ अध्याय

हिन्दू संगठन का संदेश ईसाइयों को

मेरे प्यारे ईसाई भाइयो !

देश में इस समय हिन्दू-संगठन की प्रगति का प्रारम्भ हुआ है। आप में से शायद बहुत से भाई यह समझते होंगे कि यह प्रगति ईसाइयों के बरखिलाफ़ है। मैं आज आपकी सेवा में उपस्थित होकर हिन्दू-संगठन का पवित्र संदेश आपको सुनाता हूँ। हज़रत ईसा मसीह ने, धर्म के जिन तत्वों का बखान अपने उपदेशों में किया है, हिन्दू लोग उनके विरोधी नहीं । संसार के महापुरुषों में हज़रत ईसा मसीह का स्थान ऊंचा है और उनका चरित्र भी निर्मल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और शुद्ध है इसलिए हिन्दू लोगों ने ईसाई धर्म का प्रचार अपने देश में बेरोकटोक होने दिया और ईसाइयों के स्कूलों में हिन्दू बालक और बालिकायें बे-खटके पढ़ने लगीं। हिन्दू धर्म धार्मिक सहनशीलता का ज़बर्दस्त पक्ष-पाती है इसीलिये वह किसी मज़हब के साथ झगड़ा नहीं करता, जब तक कि दूसरे मज़हबवाले न्यायसंगत तरीक़ों से अपना काम करते हैं। भारतवर्ष में जिस गवर्नमेंट का राज्य है वह ईसाई धर्म को मानती है इसलिये स्वाभाविक ही जब विदेशी गवर्नमेंट के अत्याचार लोगों को असह्य हुए तो उनमें विदेशी गवर्नमेंट के मज़हब के प्रति भी घृणा का भाव उत्पन्न हुआ। यदि भारतवर्ष स्वतन्त्र होता तो स्वतन्त्र भारत के बच्चों को ईसाई धर्म के साथ अपने धर्म का मुक़ा-बला करने का अधिक अच्छा अवसर मिलता और ईसाइयों को भी हिन्दू धर्म की विशेषताएं जानने के सहज साधन मिल जाते। भारतवर्ष के जो लोग हिन्दू धर्म छोड़कर ईसाई बने हैं, उनमें से अधिकांश ने पहले यह समझा था कि शासकों का धर्म स्वीकार कर वे भी नौकरशाही के प्रिय-पात्र बन जायँगे, परन्तु श्वेतांग प्रभुओं के रंग के पक्षपात ने हिन्दुस्तानी ईसाइयों की आँखें खोल दीं और उन्हें पता लगा कि जब तक हिन्दुस्तान में स्वराज्य नहीं होता तब तक हिन्दुस्तानी ईसाई बेचारे कुछ भी उन्नति नहीं कर सकते। हिन्दुओं के सद्व्यवहार से ईसाई लोग सदा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सन्तुष्ट रहे हैं और वे जानते हैं कि स्वराज्य होने पर देश के बहुसंख्यक हिन्दू ही स्वराज्य की बागडोर संभालेंगे इसलिये पिछले असहयोग के दिनों में भारतीय ईसाइयों ने खुले हृदय से कांग्रेस का साथ दिया और कई ईसाई भाई जेल में भी गये।

लेकिन जब से हिन्दू-संगठन की प्रगति आरम्भ हुई है तब से ईसाई बन्धुओं के दिलों में कुछ शंकाएं उत्पन्न होने लगी हैं और स्वार्थी लोग भी उन्हें बहकाने की चेष्टा कर रहे हैं। मैं आज अपने ईसाई भाई बहनों से नम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि हिन्दू संगठन का उद्देश्य हिन्दू समाज की कुरीतियों को दूर कर, हिन्दुओं को संगठित करना है ; इसका लक्ष्य हिन्दू नवयुवकों में स्वावलम्बन की शिक्षा भरना है और उन्हें स्वराज्य का दायित्व समझाना है। हिन्दू संगठन यह चाहता है कि हिन्दू सभ्यता, हिन्दू साहित्य और हिन्दू आदर्शों की रक्षा हो ताकि स्वराज्य की नींव भी दृढ़ बन सके।

हिन्दू संगठन धार्मिक स्वतन्त्रता का ज़बर्दस्त पक्षपाती है और ईसाइयों को उनके धार्मिक विचारों की पूरी आज़ादी देता है लेकिन वह यह अवश्य चाहता है कि ईसाई स्कूलों और पाठशालाओं में विदेशी मिशनरियों की प्रभुता न रहे और ईसाई बच्चे भारतीय इतिहास, साहित्य और भारतीय कविता पढ़ें। यहूदियों के पुराने इतिहास से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दुस्तानी ईसाई बच्चे कुछ विशेष लाभ नहीं उठा सकते, उन्हें रामायण और महाभारत पढ़कर भारतवर्ष के प्राचीन बज़ुर्गों की इज़्ज़त करना सीखना चाहिये। हिन्दू संगीत का बड़ा ऊँचा दर्जा है, हिन्दू-संगठन यह कहता है कि ईसाई बच्चे हिन्दुस्तानी संगीत के मुताबिक़ अपने गिरजों में भजन गावें और सूरदास, तुलसीदास तथा कबीरदास जैसे भारतीय कवियों की कवितायें पढ़ें। वे हज़रत ईसा मसीह को अपना मुक्तिदाता मानकर उनके चरित्र के अनुसार अपना जीवन बना सकते हैं पर उनका बाक़ी रहन सहन तथा शिक्षा का ढंग सब भारतीय आदर्शों के अनुसार होना चाहिये ताकि देश में एक क़ौम बन सके और ईसाई भाई हिन्दुओं से जुदा मालूम न हों। जैसे यहूदी इंगलिस्तान में रहकर अँग्रेज़ों से मिल गये हैं और अँगरेज़ी सभ्यता तथा साहित्य के अभिमानी हैं, इसी प्रकार ईसाइयों को भी हिन्दुस्तान में बनना चाहिये। हिन्दू-संगठन का उद्देश्य भारतवर्ष के तीस करोड़ लोगों की बाहर की विभिन्नता मिटा कर उन्हें एक राष्ट्र के सूत्र में पिरोना है।

हाँ, एक बात हिन्दू संगठन साफ़ तौर से कहता है और वह यह है कि हिन्दू बच्चों और स्त्रियों की हीन आर्थिक दशा का अनुचित लाभ लेकर धनसम्पन्न अमरीकन मिशनरी जिन ढंगों से उन्हें ईसाई बनाते हैं वह अत्यन्त निन्दनीय है। नाबालिग़ बच्चों और जाहिल स्त्रियों की दुरावस्था का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाजायज़ फ़ायदा उठाकर उन्हें बपतिस्मा देना धर्म प्रचार का न्याय-संगत मार्ग नहीं, हिन्दू-संगठन इसका घोर विरोधी है। सेवा धर्म से, प्रेम द्वारा वशीभूत कर, बालिग़ उम्र के लोगों को ईसाई बनाने का अधिकार बेशक आप को है पर अपनी संख्या बढ़ाने के ख़्याल से, समुद्र पार बैठे हुए अमरीकन और यूरोपियन ईसाई धनकुबेरों को नये ईसाई लोगों की अधिक संख्या दिखलाकर, उन से पैसा लेना अधर्म का मार्ग है, हिन्दू-संगठन इस प्रकार भेड़ें बढ़ाकर धर्म के नाम पर दुकानदारी करने के ख़याल को नफ़रत की निगाह से देखता है। सारांश यह है कि हिन्दू-संगठन सत्य, न्याय, और सदाचार का पक्षपाती है इस-लिये मैं अपने ईसाई भाइयों को कहता हूं कि वे हिन्दू संगठन की पुनीत प्रगति के साथ पूरी सहानुभूति करें, और जो सुधार हिन्दू-समाज में हिन्दू-संगठन के नेता करना चाहते हैं उसकी सफलता के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें। हिन्दू समाज का सुधार, हिन्दुओं का बलशाली होना तथा बाइस करोड़ हिन्दुओं का संगठन भारत के बाक़ी सम्प्रदायों के लिये अभयदान का कारण होगा और इसके द्वारा भारत की तीस करोड़ जनता सुखपूर्वक स्वराज्य का आनन्द ले सकेगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बाइसवाँ अध्याय

हिन्दू संगठन में सिक्खों का स्थान

मेरे बहादुर सिक्ख भाइयो !

दशवें गुरु वीर श्रेष्ठ गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपना सर्वस्व होमकर हिन्दू संगठन की पुनीत प्रगति को जन्म दिया था। उनकी यह इच्छा थी कि उनका प्यारा पंजाब भारतवर्ष का सच्चा द्वारपाल बने और बहादुर अकाली दल भारतवर्ष की स्वतन्त्रता का रक्षक हो। उन्होंने अपनी जाति के सब दोषों को भली प्रकार देख लिया था और भारतवर्ष के ख़तरे के कारणों को अच्छी तरह समझ लिया था। अफ़ग़ानिस्तान तथा मध्य एशिया की बर्बर जातियों के हाथों से भारतवर्ष की पवित्र भूमि को कितनी हानि पहुंची है, उसकी यथार्थ कथा उनके सामने थी। विदेशियों द्वारा पददलित जाति कैसी पतित हो जाती है, उसका इख़लाक़ कैसा गिर जाता है, उसकी आदतें कैसी कमीनी हो जाती हैं, इन सब बातों को वे भली प्रकार जानते थे, इसीलिये उन्हों ने सैकड़ों वर्षों के रस्म रिवाज पर लात मार कर, पुराने ढर्रे के ब्राह्मणों की कुछ परवा न कर हिन्दू समाज में अद्भुत क्रान्ति की, और जन्म के ढकोसले को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया। वे इस बात से भली प्रकार भिज्ञ थे— "The claim of the race is the

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

claim of religion." जब जाति ही खतम हो जायगी तो मज़हब क्या काम आएगा, अतएव जाति की रक्षा, उसका उत्थान ही धर्म की पुकार है। देश और काल के समझनेवाले उस राजनीतिज्ञ महापुरुष ने जब वह देखा कि शास्त्रज्ञ ब्राह्मण जाति की रक्षा नहीं कर सकते तो उन्होंने समयानुकूल अपने ग्रन्थ साहिब का निर्माण किया।

आप यह जानते हैं कि सिक्ख धर्म के निर्माता नौ गुरु हिन्दू सभ्यता के अनन्य भक्त थे इसीलिये उन्होंने श्री ग्रन्थ साहिब के अन्दर प्रसिद्ध हिन्दी कवियों और भक्तों की उक्तियों का संग्रह किया और उन्हीं के ढंग पर कविता द्वारा उपदेश दिया है। सिक्ख धर्म हिन्दू सभ्यता की भित्ति पर क़ायम किया गया है और गुरु गोविन्दसिंह जी ने उस में क्षात्र-धर्म का समावेश कर उसे समयानुकूल और जाति की रक्षा करने का ज़बर्दस्त साधन बना दिया है। उसी साधन के बल से महाराजा रणजीतसिंह जी ने मुट्ठी भर सिक्खों की मदद से दुर्दमनीय पठानों के दांत खट्टे किये थे और पंजाब तथा सरहद के कठोर मुसलमानों को पालतू भेड़ें बना कर अपने राज्य में रक्खा था। गुरु गोविन्दसिंह जी के उस अद्भुत चमत्कार ही की बदौलत पंजाब के हिन्दुओं ने ख़ैबर घाटी के ख़तरे को सदा के लिये मिटा दिया और पंजाब सिक्खों का प्रान्त बन गया।

ईसा की इस बीसवीं शताब्दी में सिक्खों का भारतमाता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के प्रति क्या कर्त्तव्य है ? अकाली वीरों को पिछले इतिहास से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। उनकी स्वाधीनता क्यों नष्ट हुई ? महाराज रणजीतसिंह जी का किया हुआ पुरुषार्थ उनकी मृत्यु के बाद क्यों नष्ट हो गया ? इसका उत्तर स्पष्ट है। सिक्ख हिन्दुओं के आगे आगे चलनेवाला क्रान्तिकारी दल है, हिन्दू-समाज के यह लाड़ले सिपाही हैं, यदि सिक्ख लोग हिन्दुओं के साथ संगठित होकर, हिन्दू समाज की सेवा कर, हिन्दू जनता की सहानुभूति जीतकर चलते तो भारतवर्ष का इतिहास इस समय दूसरा होता और हज़ारों मील दूर रहने वाली गोरी जाति भारतवर्ष में पदार्पण न कर सकती। जो लोग सिक्खों को बहकाते हैं कि वे हिन्दू नहीं, वे सिक्ख बिरादरी के घोर शत्रु हैं। वे चाहते हैं कि सिक्ख मिट जांय और अकालियों का बीज नष्ट हो जाय। जो युद्ध महाराजा रणजीतसिंह जी की मृत्यु के बाद अंगरेज़ों के साथ सिक्खों का हुआ वह हमारे लिये बड़ा शिक्षाप्रद है। यदि हिन्दू लोग सिक्खों के साथ होते तो पंजाब की स्वाधीनता कभी नष्ट न होती। इसलिये मैं अपने सिक्ख भाइयों से बड़ी नम्रता-पूर्वक निवेदन करता हूं कि वे हिन्दू समाज में अपना उचित स्थान ग्रहण करें। आज संगठन का युग है। हिन्दू संगठन यह चाहता है कि भारत के हिन्दुओं का भली प्रकार संगठन किया जाय। जिस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये गुरु गोविन्द सिंह जी को इतना भगीरथ प्रयत्न करना पड़ा था उसकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्त्ति का समय आ गया है। हिन्दू आज छुआ छूत को दूर करने पर उद्यत हुए हैं। जात पांत के क़िले की ईंट से ईंट बजाने का समय आ गया है। आज हिन्दू समाज को क्षात्रधर्म के मंत्र से दीक्षित करने की घड़ी उपस्थित हुई है। हमारे सिक्ख भाइयों को हर्षनाद कर "सत्य श्री अकाल" की ध्वनि कर हिन्दू समाज के आगे चलना चाहिये ताकि गुरु गोविन्दसिंह जी का मिशन पूरा हो और हिन्दू जाति सदा के लिये स्वाधीन हो जाय।

सचमुच हिन्दू संगठन में बहादुर सिक्खों का बड़े आदर का स्थान है। आज उन्हें अपने आप को हिन्दू कहलाने में गौरव मानना चाहिये और जिस प्रकार गुरुगोविन्दसिंह जी ने अपना सर्वस्व होमकर अकालियों को संगठित किया था उसी प्रकार अकालियों को अपना जी जान बलिदान कर हिन्दुओं का संगठन करना चाहिये, तभी वे अपने परम प्यारे गुरु गोविन्द सिंह जी के ऋण से मुक्त हो सकते हैं।

तेइसवाँ अध्याय

बुद्धिवाद

मज़हब के नाम पर संगठन का तरीक़ा बहुत पुराना है। जब जनता में शिक्षा का प्रचार नहीं था तो समाज के नेता लोग उन्हें अपने अपने समुदाय के नाम पर अपील कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संगठित किया करते थे। समाज का पोलिटिकल संगठन भी मज़हबी गुरुओं के हाथों में था और वे ही बड़े बड़े साम्राज्यों को अपनी इच्छानुसार बना या बिगाड़ सकते थे। संसार में सब से पहिले ऐसा संगठन भारतवर्ष में बौद्ध काल में हुआ। भगवान बुद्ध ने अपने भिक्षु संघ को धर्मप्रचार के लिये संगठित किया था। उनका आदर्श बड़ा शुद्ध और निर्मल था। वे मज़हबी मिथ्या विश्वासों को नहीं मानते थे और उन्होंने अपने धर्म को बुद्धियुक्त बनाने का प्रयत्न किया था। यही कारण हुआ कि बौद्ध सभ्यता ने संसार में बड़े बड़े अद्भुत चमत्कार किये और भारतवर्ष के आदर्शों का संसार में प्रचार कर हिन्दुओं की कीर्ति को उज्वल किया। एक हज़ार वर्ष तक वह संगठन क़ायम रहा, पर बाद में धीरे धीरे अन्दर की कम-ज़ोरियों के कारण वह संगठन नष्ट हो गया।

उसी बौद्ध संगठन का अनुकरण ईसाइयों ने किया और उसी संगठन के बल से रोमनकैथोलिक ईसाइयों की प्रभुता योरुप में क़ायम हुई। बौद्ध भिक्षुओं की तरह रोमन केथोलिक पादरी बड़े प्रतापशाली और प्रतिभावान हुए और उन्होंने योरुप में बड़े बड़े साम्राज्य स्थापित किए। धीरे धीरे उनका भी बल घटा और जनता की चैतन्यता के साथ साथ रोमन केथोलिक मज़हबी संगठन का ह्रास हुआ। आज जगत में सबसे अधिक प्रभुता सम्पन्न रोमन केथोलिक पोप लोगों का प्रतिनिधि इटली के रोम नगर में क़ैदी की तरह जीवन व्यतीत करता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और उसका राज्य वेटिकन (Vatican) के महल की दीवारों तक ही परिमित है।

ईसाइयों की नक़ल कर मुसलमानों ने भी मज़हबी ढंग का संगठन किया। मुहम्मद साहिब ने अरब के अशिक्षित लोगों को मज़हब के रँग में रँग कर पोलिटिकल दलबन्दी की और मज़हब को आड़ में राज्यशक्ति को केन्द्रीभूत किया। उसी आदर्श को लेकर मुसलमानों के ख़लीफ़ा लोग उठे और उन्होंने तलवार के ज़ोर से अपने संगठन को बढ़ाया। मुसलमानी-मज़हबी-संगठन ने भी बड़े बड़े साम्राज्य स्थापित किए; पुरानी सभ्यताओं को बर्बाद कर दिया और अपना खूनी काम समाप्त कर धीरे धीरे यह मज़हबी संगठन भी कमज़ोर होता गया, यहां तक कि आज उसका ख़ात्मा हो गया है और इसलाम के इतिहास में नये युग का प्रारम्भ होने लगा है।

आज बुद्धिवाद का युग है; आज जन साधारण को चैतन्यता का समय है; आज मानबी अधिकारों के प्रचार का वक्त है; आज विज्ञान का सूर्य अपनी रश्मियों से मज़हबी मिथ्या विश्वासों के अन्धकार को छिन्न भिन्न करने लगा है। समाज का संगठन बुद्धिवाद के सिद्धान्तों के अनुकूल होना चाहिये, यही ध्वनि आकाश में गूंज रही है। मज़हबी संगठन में स्वतंत्रता का अभाव है। उसमें अटकल पच्चू बातों के आधार पर जनता को नाजायज़ प्रलोभन देकर, अपना स्वार्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिद्ध करनेके लिए, लोगोंको संगठित करते हैं; उसका वह मज़हबीजोश बहुत थोड़े समय तक रहता है क्योंकि उसकी बुनियाद अंधविश्वास पर क़ायम है। योरुप, मज़हब के इस अन्ध विश्वास से बहुत दर्जे तक निकल चुका है और वहां के लोग बुद्धिवाद तथा राष्ट्र धर्म के अनुसार संगठित हो रहे हैं। इसी लिये उनका संगठन मज़हबी ऐक्य की अपेक्षा बहुत ज़्यादह सुदृढ़ और उपयोगी है। बुद्धिवाद के अनुसार समाज के संगठन में ज्ञान की वृद्धि जनसाधारण में बहुत जल्द होने लगती है और नये नये आविष्कार तथा नवीन चमत्कार होने लगते हैं। परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि में मनुष्य आंख कान खोल कर चलने लगता है और जगन्नियंता के असीम ख़ज़ाने में से उपयोगी पदार्थ समाज को मिलने लगते हैं। मज़हबी संगठन अज्ञान को बढ़ाता है और जनता को बिल्कुल गुलाम बना देता है। उसमें तर्क करने की जगह नहीं और सब बातों को आँखें बन्द कर मान लेना पड़ता है। ईसाई, मुसलिम, और बौद्धों के मज़हबी संगठनों में बौद्ध संगठन सब से श्रेष्ठतम था, ईसाई संगठन मध्यम दर्जे का उपयोगी सिद्ध हुआ, पर इसलामी संगठन सब से निकृष्ट और हानिकर निकला। बौद्धों के मज़हबी संगठन में कर्मयोग ही प्रधान माना गया है इसलिये उसमें मिथ्या विश्वासों की गुंजायश बहुत कम है; ईसाई-मज़हबी-संगठन में कई मिथ्या विश्वास हैं पर ईसा मसीह के निर्मल चरित्र के कारण तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रोमन और युनानी सभ्यता का आधार ईसाई मत को मिल जाने से, ईसाई संगठन को बहुत लाभ पहुंचा और ईसाइयों ने बौद्ध संघ की शैली का अनुकरण कर योरुप का उत्थान किया। इसलामी संगठन ने यहूदी और ईसाइयों का इतिहास तो ले लिया पर उनके नैतिक गुणों की ओर बहुत कम ध्यान दिया। इसलाम ने ज़ियादा ज़ोर अपनी संख्या बढ़ाने और उस संख्या को बलपूर्वक क़ायम रखने की ओर अधिक ध्यान दिया, और मज़हब के सब नियम इसी आदर्श को सामने रख कर गढ़े गये; लक्ष्य यह था कि जिस तरह से हो सके, उचित अथवा अनुचित उपाय से, मुसलमानों की संख्या बढ़ाई जाय और उनको इकट्ठा कर एक जमाअत में रखा जाय; संसार के सब मुसलमानों का संगठन करने के लिये हज्ज का हुक्म लगा दिया गया। सारांश यह कि जहाँ बौद्ध और ईसाई धर्म ने चरित्रसंगठन पर बड़ा ज़ोर दिया और उसी के आधार पर संघ के नियम बनाये, वहाँ इसलाम ने सचरित्रता की बहुत कम परवाह की और अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाने और उनमें एकता रखने पर अधिक ध्यान दिया, यही कारण है कि इसलाम छोड़नेवाले मुर्तिद को क़तल का हुक्म इसलामी क़ानून में दिया गया है ताकि, इस डर से कोई आदमी इस-लाम के दायरे से न निकल सके। हम इसी कारण से इस-लाम को पोलीटिकल दलबन्दी का मज़हब कहते हैं, जिसमें यहूदी और ईसाई मज़हबों के इतिहास का आश्रय लेकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बहिश्त और नजात की बातें बतलाकर दलबन्दी की गई है। आज इस प्रकार का संगठन बिल्कुल बलहीन और निकम्मा है। जब संसार में हुल्लड़बाज़ी और लूट खसूट का बाज़ार गरम था, जब जातियों में राष्ट्रधर्म की ज्योति का प्रकाश नहीं हुआ था, उस समय इसलाम का ऐसा संगठन भयानक रूप धारण करसकता था और उसके संगठन से दूसरे निर्बल देश विजय किए जा सकते थे। मज़हब की भित्ति पर समाज के संगठन का युग अब ख़तम हो गया है।

आज व्यक्तित्वके विकास का युग है; आज समाज में सत्य और न्याय के अनुसार उन्नति करने का युग है, आज विचार स्वातंत्र्य के सूर्य का उदय हुआ है। मौलवी, मुल्लाओं, पंडितों और पादरियों पर अन्धविश्वास करने के दिन ख़तम हो गये। यदि समाज को इन मज़हबी पेशवाओं के कहने के मुताबिक़ चलाया जायगा तो जनता कभी भी आज़ादी से सोचना सीख न सकेगी। इल्हामी किताबों के आधार पर समाज का संगठन करना जहालत के गढ़े में गिरना है क्योंकि हर एक आदमी इल्हामी किताबों का पंडित नहीं हो सकता और जनता को लाचार होकर मौलवी मुल्लाओं का गुलाम बनना पड़ता है। इल्हामी किताब ईश्वर का वाक्य मान लेने के कारण उसके विरुद्ध जाना गुनाह समझा जाता है। इसलिये बेचारे अनपढ़ लोग आंखें बन्द करके भेड़ों की तरह मौलवी मुल्लाओं का कहा मानते हैं। अपने स्वार्थ के लिए, मज़हबी लीडर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जनता को कभी चैतन्य नहीं होने देते और मज़हबी किताबों का उलटा सुलटा तर्जुमा कर जनता को हमेशा अन्धेरे में रखते हैं। गुलाम देश में तो ऐसे मज़हबी लीडरों की ताक़त बड़ी खौफ़नाक होती है क्योंकि ये मौलवी मुल्ला विदेशी गवर्नमेंट से पैसा लेकर मूर्ख जनता को सदा आपस में लड़वाते रहते हैं। भारतवर्ष में यह दुखांत तमाशा वर्षों से हो रहा है, हालांकि, किसी सभ्य देश में पबलिक बाज़ारों और गलियों में किसी प्रकार के जलूस अथवा बाजे की मनाही नहीं की जा सकती, पर हिन्दुस्तान में मसजिदों के सामने जलूस निकलने अथवा बाजा बजने से दंगे फसाद हो जाते हैं। बहाना यह किया जाता है कि मुसलमानों की नमाज़ में बाधा पड़ती है। क्या मोटरों की पूंपूं का शोर अथवा बिजली की गाड़ियों का धांधां का शब्द नमाज़ में ख़लल नहीं डालता? क्या मुसलमानों की ख़ातिर शहरों में बिजली की गाड़ियां न चलें? क्या मोटरवाले उन बाज़ारों और गलियों में से न गुज़रें जहाँ मसजिदें बनी हुई हैं? यह कैसी उपहासजनक बात है, जिसे सुनकर योरुप के लोग मौलवी मुल्लाओं की जहालत पर हँसेंगे। यदि मुसलमानों को शांति से नमाज़ पढ़नी है तो उन्हें चाहियें कि वे शहर से बाहर मसजिदें बनावें, शहर में रहकर वे दूसरे नागरिकों के अधिकारों को इस प्रकार दबा नहीं सकते। दूसरे लोग मुसलमानों की नक़ल कर कह सकते हैं कि मसजिदों में अज़ां देने से बड़ा हल्ला होता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिस के मारे प्रातःकाल के समय इर्द गिर्द के मकानों में रहनेवालों को नींद नहीं आती। इल्हामी किताब का सहारा लेने से इस प्रकार के बखेड़े हिन्दू मुसलमानों में खड़े होते हैं और यह झगड़े हमेशा जारी रहेंगे जब तक कि समाज का संगठन मज़हबी ढंग पर रहेगा।

तो करना क्या चाहिये ? हमारी सम्मति में मुसलमानों में ज़बर्दस्त मज़हबी क्रान्ति (इन्क़लाब) करने की ज़रूरत है। बेचारी ग़रीब मुसलमान जनता को मौलवी मुल्लाओं के जाल से बचाना चाहिये और वह तभी हो सकता है जब कि कुरान के इल्हामी मानने के मिथ्या विश्वास को मुसलमानों के दिल से निकाल दिया जाय। क्रान्ति के सैनिको, हमारी आवाज़ ध्यान से सुनो। तुम्हें अत्यन्त ख़तरनाक पागलपन का इलाज करना है, और इल्हाम के मिथ्या विश्वास को भारतीय जनता के दिल से निकाल देना है। इसके लिये एक रेशनलिस्ट प्रेस एसोसिएशन (Rationalist Press Association) की स्थापना करो। आप में से जो योग्य व्यक्ति हैं, जिन के पास हमारा यह बिगुल जावे, जो क्रान्ति का कार्य्य कर सकते हों, वे बुद्धिवाद का प्रचार करनेवाली ऐसी संस्था स्थापित करें, और इल्हाम के ख़याल के विरुद्ध छोटे छोटे ट्रेक्ट प्रकाशित करें ; मुहम्मद साहिब की पैग़म्बरी के मिथ्या विश्वास के सम्बन्ध में भी जनता को चैतन्य करें, और भारतवर्ष के जन साधारण को स्वार्थी मौलवी, मुल्लाओं, पंडितों के जालसे बचावें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिस प्रकार लन्दन (England) में स्थापित बुद्धिवाद की सोसाइटी ने इंगलिस्तान की जनता को मज़हबी मूर्खता से निकालकर राष्ट्रधर्म की शिक्षा दी है, इसी प्रकार हिन्दुस्तान के हिन्दू, मुसलमानों को भी बुद्धिवाद की शिक्षा मिलनी चाहिये ताकि, भारत के जनसाधारण अपना पैसा फ़िजूल बातों में न गंवावें। हर साल देश का लाखों रुपया मुहर्रम के त्योहार में बर्बाद होता है और मूर्ख जनता को जोश दिला-कर गुण्डे लोग लड़ाइयां करवा देते हैं, जब बुद्धिवाद का प्रचार होगा तो जनता अपना भला बुरा समझने लगेगी और लड़ाई झगड़ा करानेवाले अराष्ट्रीय त्योहारों का सर्वथा परित्याग करेंगे।

बुद्धिवाद और भी काम करेगा। क्रान्ति के सैनिको, कान खोलकर सुनो! तुम्हें भारत की मूर्ख जनता को चैतन्य करने का पुण्यकार्य करना है। हिन्दू जनता को क़बरों की पूजा, मियां मदारों, कुआ वाला, सैयद सालार, अजमेर शरीफ, ताज़ियादारी, मसजिदों में झांड़ फूक आदि जितने कुकृत्य हैं, उन सबको मार भगाना है; हिन्दू जनता पागल बन कर अरब, और फ़ारिस के विदेशी मिथ्या विश्वासों की गुलाम बनी हुई है। तुमने हिन्दू जनता को, सब अराष्ट्रीय त्योहारों और मेलों से अलग कर उसकी कीचड़ को धो डालना है। अतएव मुस्तैद होकर हिन्दू संगठन के पुनीत कार्य में लग जाओ और गाँव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गाँव, क़स्बे क़स्बे में घूम कर हमारे इस बिगुल का पवित्र संदेश जनता को सुनाओ और कह दो कि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र और भगवान कृष्णचन्द्र के माननेवालों के लिए यह अत्यंत लज्जा की बात है कि वे अपनी सभ्यता को कलंकित कर क़बरों और मज़ारों पर दौड़ते फिरते हैं। स्त्रियों में ख़ास तौर से ऐसे बुरे स्थानों में जाने के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न करना चाहिये ताकि वे अबलाएं लुच्चे और लफंगों के हथकंडों से बचें और देश की जनता को आंखें खोल कर चलने की आदत पड़े।

बुद्धिवाद एक नियामत है। जहालत के नाश करने के लिये यह बम के गोले का काम करता है; स्वतंत्रता का यह प्रचण्ड प्रचारक है, और समाज के निकम्मे, निखट्टू तथा जोंकों की तरह जीवन व्यतीत करनेवालों के लिये तो यह साक्षात यमराज है। जहां इसकी सवारी जाती है; वहां सब प्रकार के भ्रमों तथा अन्ध विश्वासों का ख़ातमा हो जाता है। जनता का धन लूटनेवाले मुफ़्तखोरों को यह चेतावनी देता है, और समाज में सहनशीलता, संगठनशक्ति लाने के लिये यह रामबाण का काम देता है। अतएव बुद्धिवाद का प्रचार करना प्रत्येक सैनिक का कर्त्तव्य है। यदि भारतवर्ष की जनता का करोड़ों रुपया बचाना चाहते हो और उसे भलीप्रकार संगठित करने की इच्छा रखते हो तो उसका संगठन बुद्धिवाद के सिद्धांतों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर करो। हिन्दू संगठन भारतवर्ष की स्वतंत्रता और स्वराज्य प्राप्ति के लिये होना चाहिए। शास्त्र के नाम पर हिन्दुओं के भिन्न भिन्न सम्प्रदायों को संगठित करना असम्भव है। भारतवर्ष के गौरव की रक्षा का भाव प्रत्येक हिन्दू के हृदय में जागृत करना चाहिये और स्वराज्य प्राप्ति का आदर्श प्रत्येक नवयुवक को अपने सामने रखना आवश्यक है। यही रास्ता हिन्दू संगठन का है। जब हम राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करने की आदत डालेंगे, जब हम बुद्धिवाद के अनुसार धर्म को समझेंगे, जब हम मिथ्या विश्वासों से निकलकर भारत के हित के लिये पैसा ख़र्च करना सीखेंगे तो हिन्दू जाति का हृदय शुद्ध और पवित्र होगा, तभी हम स्वराज्य की लड़ाई लड़ने के लिये तैय्यार होंगे और तभी हमारा संगठन भारत के तीस करोड़ लोगों को अभयदान देगा। हिन्दू संगठन की बुनियाद आज देश की स्वतंत्रता तथा मानवी अधिकारों की रक्षा के आधार पर करने का समय आगया है और हमें एक तन, एक मन और एक प्राण होकर अपने लक्ष्य के पीछे लग जाना उचित है ताकि हम आनेवाली संतान के लिये, अपने प्यारे देश को स्वर्ग-धाम बनादें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चौबीसवाँ अध्याय

हिन्दू संगठन का प्रोग्राम

अब हम क्रान्ति के सैनिकों के लाभार्थ हिन्दू-संगठन के प्रोग्राम के भिन्न भिन्न अंगों को संक्षेप में लिखते हैं ताकि साधारण जनता भी संगठन के मिशन को आसानी से समझ सके। संगठन के प्रोग्राम के निम्न-लिखित अंग हैं —

(१) सब से पहिली चीज़ सैनिक का अपना स्वरूप है। संगठन के उपासक हिन्दू सैनिक को स्वदेशी का व्रत लेना परमावश्यक है। विदेशी कपड़े पहिन कर कोई क्रान्ति नहीं कर सकता। जो हाथ से कता और हाथ से बुना खद्दर पहिने उसका तो कहना ही क्या है लेकिन जो देशी कल कारख़ानों से बने हुए कपड़े पहिनने का व्रत लें वे भी क्रान्ति की सेना में भर्ती हो सकते हैं।

(२) क्रान्तिके सैनिक का दूसरा काम छूत छातको मिटाना है। अपने नित्य के व्यवहार में, रेल में घूमते समय, बड़ी आसानी से हम इसका प्रचार कर सकते हैं। पवित्रता के नियमों का पालन करते हुए, अपने अनपढ़ भाइयों को सफ़ाई की महिमा बतलाते हुए हमें सब हिन्दुओं के साथ बिना किसी रोक टोक के खान पान करना चाहिए, इससे हिन्दू समाज का जीवन उदार हो जायेगा।

(३) मांस से घृणा करनेवाले लोग यदि मांस खाने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वालों के घर का भोजन करते हुए कोई हार्दिक कष्ट अनुभव करते हों तो वे साफ़ तौर से कह दिया करें ताकि उनका भोजन अधिक सावधानी से बने परन्तु मांस खानेवाले हिन्दू के हाथ का जल पीने से परहेज़ नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसमें किसी प्रकार की हानि नहीं ।

(४) जात पांत और बिरादरियों के बन्धन तोड़ने के लिए जवान स्त्री और पुरुष प्रतिज्ञायें लें । यदि लड़कों के मां बाप उनका विवाह छोटी उम्र में करना चाहें तो उन लड़के और लड़कियों को सब कष्ट सहन कर मां बाप के अन्याय का विरोध करना चाहिए, अपना निश्चय यही है कि हिन्दू समाज में शीघ्र सामाजिक क्रान्ति हो और हर उचित उपाय से क्रान्ति लाने की चेष्टा करना सैनिकों का मुख्य कर्तव्य है ।

(५) क्षात्रधर्म की दीक्षा लिए बिना कोई सैनिक नहीं बन सकता । प्रत्येक क्रान्तिकारी को नित्य प्रति व्यायाम कर शरीर को सुडौल बनाना, लड़ना भिड़ना सीखना बड़ा ज़रूरी है । ग्रामें, क़स्बों और नगरों में व्यायाम शालायें खुलें और राष्ट्रीय त्योहारों पर दंगलों का प्रबन्ध किया जाय । नक़ली लड़ाई भिन्न भिन्न पार्टियों में कराई जाय ताकि हिन्दू नवयुवक लड़ाई से कभी न झिझकें और ख़तरे में कूदने के अभ्यासी हो जायं ।

(६) सिक्ख औरतों की तरह सभी हिन्दू स्त्रियां अपने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पास कटार रक्खें और उनका इस्तेमाल करने का अभ्यास करें, स्त्रियों की व्यायामशालाएं भी बननी चाहियें, जहां उन्हें हाथ चलाने का अभ्यास कराया जाय।

(७) बुद्धिवाद का प्रचार प्रत्येक सैनिक को करना चाहिए। समाज में सारे झगड़े इल्हाम के मिथ्या विश्वास से पैदा होते हैं और उसी से मज़हबी दीवानापन का जन्म होता है। भारतवर्ष के हित और अहित का विचार, उसको सभ्य जातियों में ऊंचा दर्जा दिलाने की चेष्टा, बस यही हमारा इल्हाम है। मुसलमानों में ख़ासतौर से मज़हबी क्रान्ति करनी चाहिए और उन्हें शुद्ध कर सच्चे भारतीय बनाना चाहिए। मुसलमान की शुद्धि यही है कि वह दो बुद्धि विरुद्ध बातों को छोड़ दे—पहिली कुरान को इल्हामी मानना और दूसरी मुहम्मद साहब को पैग़म्बर। इन दो बातों को हटाकर मुसलमानों के दिलों में हिन्दुस्तान की मुहब्बत और हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये कुर्बानी का भाव पैदा करना चाहिए। बुद्धिवाद का प्रचार ही मुसलमानों को सभ्य, सहनशील और उदार बना सकता है।

(८) भारतवर्ष के जितने हिन्दू मन्दिर हैं उन सब पर अखिल भारतवर्षीय हिन्दू महा सभा का अधिकार होना चाहिए और महासभा की तरफ़ से मन्दिरों के पुजारी और महन्त नियत किये जायं। सिक्खों की शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी की तरह एक मन्दिर प्रबन्धक कमेटी हिन्दु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महासभा की तरफ़ से क़ायम हो और वह मन्दिरों पर क़ब्ज़ा करे। क्रान्ति के सैनिकों को चाहिये कि हिन्दू महासभा को अत्यन्त लोकप्रिय बनाकर मन्दिरों के सुधार की योजना खड़ी करें ताकि हिन्दुओं का करोड़ों रुपया हिन्दू-संगठन के काम आवे।

(९) देश में जो लाखों साधू सन्यासी हैं वे यदि हिन्दू संगठन के काम में लग जावें तो हिन्दुओं का बेड़ा पार हो जाय। आलसी, चरसी, गंजेड़ी और अनपढ़ ख़ाली कपड़ा रंग कर साधू बननेवाले गँवारों को साधू नहीं मानना चाहिए; ऐसों को भोजन वस्त्र देना पाप है। साधुओं के सुधार का सीधा रास्ता यह है कि विद्वान और देश की सेवा करनेवाले साधू सन्यासियों का आदर किया जाय और लफंगों को मेहनत मज़दूरी करने की आदत डलवाई जाय।

(१०) बिधवा बिवाह के पुण्यकार्य को इस समय जल्दी उठाना चाहिए। अच्छे सच्चरित्र योग्य वर तलाश कर उनका बिवाह कर देना आवश्यक है। इसके लिये बिधवा विवाह सहायक सभायें जगह जगह स्थापित होनी चाहियें जिनका संचालन वृद्ध अनुभवी गृहस्थ करें।

(११) हिन्दू बालक, बालिकाओं और विधवाओं को उड़ा ले जानेवाले गुण्डों को दण्ड देने का भार प्रत्येक हिन्दू अपने सिर पर लेले और जहाँ कहीं ऐसा अत्याचार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देखने में आवे वहां निर्भय होकर अपने कर्तव्य का पालन करे। इस पवित्र काम में प्रत्येक हिन्दू को योग देना चाहिये और किसी भी प्रकार की बाधा की परवाह न कर समाज के शत्रु इन गुण्डों को दंड देना फ़र्ज़ है। सच्चा शहीद वही है जो अत्याचार को रोकने के लिये बलिदान होता है।

(१२) हिन्दू समाज द्वारा पीड़ित सात करोड़ अछूत ही अधिकतर हम लोगों के हाथ से दुख पाते हैं, उन्हीं पर जिमीदार घोर अन्याय करते हैं; उन्हीं को हिन्दू समाज ने सामाजिक अधिकार नहीं दिए; उन्हीं के साथ पशुओं से भी बदतर व्यवहार होता है। क्रान्ति के सैनिकों को बहुत शीघ्र छूत छात को दूर कर अपने इन कर्मकार भाई बहिनों को गले लगाना चाहिए। गांव गांव और नगर नगर में मंडलियां बना कर अछूतों की सब शिकायतों को दूर करने का प्रयत्न करें।

(१३) हिन्दू मेलों में मंडलियों के स्वयंसेवक सैनिक रूप धारण कर जनता की सेवा करें और इस बात का ध्यान रक्खें कि कोई गुण्डा औरतों और बच्चों को न सतावे।

(१४) मुसलमानों के जो मेले पीरों, शहीदों और क़बरों के नाम पर होते हैं उनका सर्वथा त्याग करना हिन्दू सन्तान का परम धर्म है। क्रान्ति के सैनिकों को गांव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गांव और क़स्बे क़स्बे में हिन्दू जनता को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वे इन मेलों में कदापि सम्मिलित न हों।

(१५) मुहर्रम के दिनों मे ख़ास तौर से हिन्दुओं को मुसलमानों के इस त्योहार का बहिष्कार करना कर्तव्य है। ऐसे त्योहार विदेशी हैं। भारतवर्ष में इनके प्रचार को रोकना और उनमें सम्मिलित न होना प्रत्येक राष्ट्रीय हिन्दू का कर्तव्य है। बस यह हिन्दू-संगठन का पोग्राम है।

हमारा यह संगठन का बिगुल हिन्दू समाज में क्रान्ति करने के लिए है। हमारा अटल विश्वास है कि हिन्दू समाज में क्रान्ति किये बिना क्षात्र-धर्म पुनर्जीवित नहीं हो सकता। मायावादी और प्रारब्ध के गहरे गढ़े में गिरी हुई हिन्दू जनता को क्रान्ति ही जीवन संग्राम के लिए तय्यार करेगी और उसी के द्वारा, बड़ी रगड़ खाकर, सैकड़ों वर्षों के सड़े गले रिवाजों को मिटाकर, जात बिरादरियों की दीवारों को तोड़कर जो वीर हिन्दू मैदान में निकलेंगे वही भारतवर्ष की स्वाधीनता प्राप्त करनेवाला ज़बर्दस्त दल होगा, जिसके पीछे बाक़ी सब जनता भेड़ों की तरह चलेगी।

उस क्रान्ति के करने के दो उपाय हैं, पहिला व्यक्तिगत उद्योग और दूसरा संग्रबद्ध पुरुषार्थ। प्रत्येक मनुष्य या स्त्री, जिसके हाथ में यह पुस्तक आवे और जिसके हृदय में क्रान्ति की शुभ कामना उत्पन्न हो, उसे एक सप्ताह तक नित्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने प्रभु से प्रार्थना कर बल मांगना चाहिए और साथ ही हमारे बतलाये हुए प्रोग्राम में से स्वतन्त्रता से करने लायक़ बातों को चुन लेना चाहिए। एक काग़ज़ पर उन बातों को नोट कर, उनके पूरा करनेवाले साधनों को इकट्ठा करना चाहिए, फिर ईश्वर का नाम लेकर उन क्रान्तिकारी बातों का आन्दोलन आरम्भ कर देना उचित है। अपने जितने प्रेमी, मित्र और परिचित हों उन सब में जो जिस अंग में क्रान्ति करने लायक़ हो उस से उसके लिये शपथ लेना और उसकी पूर्ति के हेतु निरंतर उत्साहित करना होगा। जहां घरवालों अथवा बिरादरी का विरोध खड़ा होने की सम्भावना हो और वह अवश्य होगा, वहां एक दूसरे की मदद के लिये बराबर डटजाना पड़ेगा और क्रान्ति-कारियों के छोटे छोटे दलों की स्थापना करनी होगी। इस प्रकार भिन्न भिन्न ग्रामों और नगरों में स्थिति के अनुसार हिन्दू समाज के अन्दर पहिले व्यक्तिगत ढंग से क्रान्ति का काम आरम्भ करना चाहिए और हमारे बतलाये हुए मार्गों में से किसी एक को भी लेलेना उचित है। इस प्रकार व्यक्ति गत क्रान्ति करनेवाले वीरों की संख्या आप ही आप बहुत शीघ्र बढ़ जायेगी और उनके उद्योग से देश के चारों तरफ़, प्रत्येक प्रान्त में, क्रान्ति की लहरें उठने लगेंगी। जहां अबलाओं की रक्षा और भगाये हुए हिन्दू बालक बालिकाओं के बचाव का अवसर आजावे वहां निर्भय होकर अपने होश-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हवास ठिकाने रख वीरता से काम लेना होगा। ऐसे अवसरों पर दीर्घसूत्रता बड़ो हानिकारक है। यह प्रत्येक नागरिक का व्यक्तिगत धर्म है कि वह स्त्रियों और बालकों पर होते हुए अत्याचार को रोकने और स्वयं आततायी को दंड देने की शक्ति रक्खे। इसके बिना कोई समाज संगठित नहीं हो सकता। हिन्दुओं में जो झूठी इज़्ज़त का भाव है, जो इन्हें अवसर पर कायर बना देता है, दूर हो जाना चाहिए और ख़तरे में तत्काल कूदने की आदत आनी चाहिए।

दूसरा उपाय है समष्टीगत पुरुषार्थ का। बड़े बड़े शहरों और क़स्बों में, जहां हिन्दू सभायें स्थापित हैं या क्रान्ति का विचार रखनेवाले लोग मौजूद हैं, वहां मंडलियां स्थापित होनो चाहिएँ। वे हिन्दू सभा अथवा आर्यसमाज के साथ मिलकर काम करें। यदि मंडली बिधवा बिवाह के लिये है अथवा जात पांत तोड़क मंडल है तो उसे उसी काम में अपनी सारी शक्तियां लगाकर क्रान्ति करनी चाहिए। इस प्रकार देश की वर्तमान परिस्थिति के अनुसार काम करना ज़रूरी है। यदि इस सारे प्रोग्राम को हाथ में लेकर एक ज़बर्दस्त हिन्दू-संघ खड़ा हो जाय तो फिर कहना ही क्या है। हिन्दू सभा वाले शायद हमारे बतलाये हुए मार्ग का अवलम्बन न कर सकें क्योंकि हिन्दू महासभा सबको साथ लेकर चलना चाहती है, ऐसी अवस्था में क्रान्तिकारी हिन्दू सैनिक अपना संघ स्वतंत्र स्थापित करलें और काम शुरू कर दें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्रान्ति तो करने से होगी, उसके लिए प्रस्ताव पास करने वालों की ज़रूरत नहीं, अतएव यह काम हिन्दू समाज के युवा स्त्री और पुरुषों के करने का है और इसे वही करेंगे जिन्हें भारतवर्ष के गौरव, उसकी सभ्यता और उसके साहित्य की रक्षा करनी है। हिन्दू समाज में क्रान्ति का काम चारों तरफ से शुरू हो सकता है। अपनी अपनी स्थिति और शक्ति देखकर प्रत्येक हिन्दू को संगठन की सेवा में लग जाना चाहिए।

जो भाई अथवा बहिन इस विषय में हमसे सम्मति लेना चाहते हैं वे सहर्ष हमसे पत्रव्यवहार कर पूछ ताछ कर सकते हैं। हमने हिन्दू समाज में ज़बर्दस्त क्रान्ति करने के लिये ही यह बिगुल बजाया है। हम हिन्दू जाति के उज्वल भविष्य पर दृढ़ विश्वास रखते हैं और यह मानते हैं कि स्वराज्य की लड़ाई के लिए हिन्दू-संगठन की नितान्त आवश्यकता है। इस पवित्र उद्देश्य की सिद्धि के लिए हम हिन्दू समाज को भट्टी में डालकर उसे कुन्दन बनाना चाहते हैं, कूड़ा-कचरा भस्म हुए बिना भला कुन्दन मिल सकता है ? कदापि नहीं। हिन्दू लोग भट्टी में जाने से घबराते हैं, वे विरोधों का सामना नहीं करना चाहते, सब प्रकार के भय ने उन्हें कायर बना रक्खा है, वे सब प्रकार के ख़तरों को बचाकर मुहूर्त देखकर, दिशाशूल बचाकर चलना चाहते हैं। क्या ऐसे लोग स्वराज्य ले सकते हैं ? कभी नहीं। यदि भारतवर्ष में हिन्दू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सभ्यता के आदर्शों के अनुसार स्वराज्य की स्थापना करनी है तो हमें सब प्रकार के भय छोड़कर हिन्दू समाज में क्रान्ति करनी ही पड़ेगी। इस युगमें भारतवर्ष के मोक्ष का केवलमात्र एक यही उपाय है।

पच्चीसवाँ अध्याय

उपसंहार

भारतवर्ष की स्वतंत्रता के लिये सर्वस्व कुर्बान करने वालो, अब मैं आप से दो दो बातें करना चाहता हूं। आप जानते हैं कि मैं राष्ट्र-धर्म के सिवाय अपने लिये दूसरा धर्म नहीं मानता। चौदह वर्ष निरन्तर राष्ट्र-धर्म का प्रचार करने के बाद मैंने हिन्दू-संगठन की पुनीत प्रगति में प्रवेश किया है; धार्मिक स्वतन्त्रता और सहनशीलता का ज़बर्दस्त पक्षपाती होकर भी मैं आज मुसलमानों और ईसाइयों की शुद्धी में योग देने लगा हूं। मैं चाहता हूं कि इसमें जो मेरी राष्ट्रीय दृष्टि है उसे आप लोग भली प्रकार समझ जाएँ और उसी दृष्टि-बिन्दु के अनुसार देश में शुद्धी का कार्य हो।

हिन्दू समाज पहिले ईसाई और मुसलमानों को अपने धर्ममें सम्मिलित नहीं करता था, इसलिये लाखों हिन्दू चुपचाप हिन्दू धर्म छोड़ते जा रहे थे। परन्तु जब हिन्दुओं ने अपने से अलग हुए हिन्दुओं का प्रायश्चित करवा अपने में शामिल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करना शुरू किया तो ईसाइयों और मुसलमानोंमें खलबली मच गई। मुसलमानी मज़हब के अनुसार कोई आदमी एक बार मुसलमान होकर फिर इस्लाम छोड़ नहीं सकता, जिसके अर्थ यह हैं कि हिन्दू तो भले ही मुसलमान हो जाय पर मुसलमान हिन्दू न हो सके। मैं चाहता हूं कि इस स्थिति की गम्भीरता को आप लोग भली प्रकार अनुभव करें। इस्लामी सिद्धान्त का यह ऐसा अन्याय और अत्याचार देश और समाज के लिए कितनी ख़ौफ़नाक वस्तु है, उस का चित्र मेरे सामने आते ही मुझे शुद्धी की प्रगति में प्रवेश करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। इस्लाम का यह असूल सरासर बे-इंसाफ़ी और जुल्म की बुनियाद है और यह धार्मिक स्वतन्त्रता का दुश्मन है। यदि हम आज इसका इलाज न कर लेंगे तो हम आनेवाली संतान के लिए ख़ौफ़नाक कांटे बो जायेंगे। जब तक हिन्दुस्तानी मुसलमानों की बड़ी संख्या इस प्रकार के देशद्रोही और समाजद्रोही सिद्धान्तों को मानती रहेगी तब तक उनके साथ स्वराज्यवादियों का कभी भी मेल नहीं हो सकता। दो परस्पर विरोधात्मक शक्तियां एक स्थान पर नहीं रह सकतीं; या तो हम लोग सदा गुलाम रहना ही पसन्द करें, या इस्लाम का सुधार कर देश में बुद्धिवाद फैलाकर अपने आपको आज़ाद बनावें; इस्लाम का वर्तमान स्वरूप आज़ादी, एकता और शान्ति का दुश्मन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। हमें भारतवर्ष की तीस करोड़ जनता के कल्याणार्थ मौलवी मुल्लाओं द्वारा फैलनेवाले इस्लाम के इस विष को दूर करना ही होगा। मुसलमान भारतवर्ष छोड़कर कहीं बाहर तो जा नहीं सकते, इन्हें यहीं रहना है, इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम इन्हें यहां रहने लायक़ बनावें और इनमें जो कुछ विदेशीपन है उसे मिटाकर इन्हें शुद्ध स्वदेशी बनावें। ईसाई मिशनरी भी पहिले भारतीयों को देशद्रोह की शिक्षा दिया करते थे, लेकिन पिछले राष्ट्रीय आन्दोलन ने भारतीय ईसाइयों को बहुत चैतन्य कर दिया है और वे अब अपना विदेशीपन दूर कर रहे हैं। उनके कुछ नेता यह समझने लगे हैं कि भारतवर्ष की सभ्यता और उसके साहित्य को अपनाये बिना वे सच्चे भारतीय नहीं हो सकते; उनमें राष्ट्र-धर्म की ज्योति का प्रकाश होने लगा है।

इसलिये हिन्दुस्तान के सब सम्प्रदायों में राष्ट्र-शक्ति लाने का एकमात्र साधन हिन्दू-संगठन ही है। जब भारतवर्ष की सभ्यता के रक्षक हिन्दू लोग भली प्रकार संगठित होकर राष्ट्रीयता का झंडा फहराते हुए आगे बढ़ेंगे तब मुसलमान और ईसाई अपना विदेशीपन त्याग उनके अनुगामी होंगे। हिन्दुओं को पहिले अपना अधिकार संगठन द्वारा दृढ़तापूर्वक स्थापित कर देना चाहिये ताकि विदेशी धर्मों को माननेवाले भारतीयों के सब भ्रम दूर हो जायें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और वे भली प्रकार समझ लें कि भारतवर्ष के बाहर की किसी विदेशी जाति को हिन्दू लोग अपने देश पर हकूमत करने नहीं देंगे और न वे किसी प्रकार के विदेशी दबाव को ही सहन करेंगे। मुसलमान यदि अफ़ग़ानिस्तान से मिल कर भारतवर्ष का कोई टुकड़ा काटना चाहेंगे तो उन्हें देशद्रोही क़रार देकर वह सज़ा दी जायेगी कि जो सभ्य संसार देशद्रोहियों को देता है। दूरदर्शी राजनीतिज्ञ गुरु गोविन्दसिंह जी ने भारतवर्ष की उत्तर पश्चिमीय सीमा सदा के लिए निश्चित कर दी है और महाराजा रणजीतसिंह ने उसी आदेशानुसार कार्य कर भारतवर्ष को सुरक्षित किया था। उत्तर पश्चिमीय सीमा प्रान्त के मुसलमान यदि भारतवर्ष के इस टुकड़े को अलग कर अफ़ग़ानिस्तान से मिलना चाहेंगे तब हम उनको हमारा देश छोड़ने पर बाध्य करेंगे। जब तक तेईस करोड़ हिन्दू जीवित हैं माता भारत के कोई टुकड़े नहीं कर सकता। जब युनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिका की कुछ दक्षिणी रियासतों ने अमरीका से अलग होना चाहा था तो राष्ट्रपति एब्राहम लिंकन ने यह स्पष्ट तौर से कहा था कि अमरीका के टुकड़े नहीं हो सकते और जो लोग ऐसा करना चाहते हैं वे अमरीकन नहीं बल्कि देशद्रोही हैं। ठीक यही हमारा उत्तर उन मुसलमान लीडरों को है जो सीमा प्रान्त को भारतवर्ष से अलग करना चाहते हैं। भारतवर्ष संयुक्त और अविछिन्न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहेगा इसके टुकड़े करने का विचार रखनेवाला पुरुष देश-द्रोही है और वह हमारे देश का शत्रु है। प्रत्येक देशभक्त हिन्दू को यह सिद्धान्त सदा के लिये अपने हृदयपट पर लिख लेना चाहिये।

हिन्दू-संगठन के लिये जात पांत के वर्त्तमान स्वरूप को मिटाकर उसे गुण, कर्मों की कसौटी पर लाना पड़ेगा। जो लोग वर्णों के छोटे २ भेदों उपभेदों को मिटा कर पहिले सब ब्राह्मणों को एक करना चाहते हैं, जो क्षत्री और वैश्यों की छोटी छोटी टुकड़ियों को तोड़कर पहिले क्षात्री और वैश्यों को एक करना चाहते हैं अर्थात् जो ब्राह्मण, क्षात्री, वैश्य और कर्मकार इन चार वर्णों की स्थापना करने के पक्ष में हैं मेरा उनसे कुछ भी विरोध नहीं। वे ब्राह्मण ब्राह्मण, क्षात्री क्षात्री, वैश्य वैश्य और कर्मकार कर्मकारों को एक कर वर्णव्यवस्था का सुधार करें, क्योंकि इतना सुधार भी हमारी क्रान्ति के आदर्श में बड़ा सहायक होगा। अपनी अपनी सामर्थ्यानुसार स्वार्थ त्याग कर हिन्दू-संगठन में लग जाना चाहिए। आपस के वादा-विवाद में व्यर्थ की शक्ति नष्ट करना अनुचित है।

शुद्धी के सम्बन्ध में जो मैंने लिखा है उसका सम्बन्ध ज़्यादातर मुसलमान जनता के साथ है। आजकल मुसल-मानों और ईसाइयों द्वारा जो बच्चे भगाये जाते हैं, मुसल-मान गुण्डे जिन औरतों और बच्चों को बहका ले जाते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उनके शुद्ध करने का आसान से आसान उपाय हिन्दू समाज को करना चाहिये ताकि मुसलमानी मज़हब का ख़तरा सदा के लिए निकल जाय। जब मुसलमान या ईसाई के हाथ का पानी पी लेने अथवा भोजन करनेवाला हिन्दू केवल जल का छींटा डाल देने अथवा गायत्री मंत्र पढ़ लेने से शुद्ध हो जाया करेगा तो ईसाई और मुसलमान अबोध हिन्दू बालक बालिकाओं को बहकाना छोड़ देंगे और वे समझ जायंगे कि उनका धन और परिश्रम ऐसे कामों में केवल व्यर्थ ही जाता है। जब तक हिन्दू लोग विधर्मियों की छूत छात, उन के खान पान को बड़ा हौआ बनाये हुये हैं तभी तक इन विदेशी मज़हबों का हिन्दुस्तान में प्रभुत्व क़ायम है। हमारी अपनी ग़लती से हमने इन मज़हबों को ऐसी महत्ता दे दी है। अतएव हमें शुद्धी का आसान से आसान तरीक़ा काम में ला विधर्मी गुण्डों के दांत खट्टे करने चाहिये।

धर्म का सम्बन्ध मनुष्य के अन्तःकरण के साथ है। उसकी शिक्षा सदा ऐसी अवस्था में होनी चाहिए जब मनुष्य में उसे स्वयं सोचने की बुद्धि आ जाय। आर्थिक दुर्दशा का फ़ायदा उठाकर, अकाल पीड़ित अवस्था में सुन्दर स्त्री की मूर्ति दिखला कर अथवा डराने और धम-काने से यदि कोई मुसलमान अथवा ईसाई किसी हिन्दू को अपने मज़हब में लाने का यत्न करता है तो यह केवल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कमीनापन है। मैं इस प्रकार की साम्प्रदायिकता का घोर शत्रु हूं। अपनी प्रसन्नता से कोई पुरुष या स्त्री किसी मज़हब को स्वीकार कर ले मुझे उसमें कुछ भी आपत्ति नहीं, लेकिन धर्मप्रचार का वह स्वरूप जिसमें मज़हबी दीवानापन आ जाय, जिसमें इन्सानियत को जवाब देना पड़े, जो समाज को धार्मिक स्वतन्त्रता का विघातक हो, सर्वथा त्याज्य समझना चाहिए। ईसाई मिशनरी आगे से बहुत सुधर गये हैं इसीलिए उनके साथ हिन्दुओं का बैर विरोध कम होता जाता है। भगवान बुद्ध ने हिन्दू धर्म में उदारता और सहनशीलता भर दी है इसी कारण हिन्दुओं में धार्मिक स्वतंत्रता की मात्रा सब धर्मों से अधिक है। यदि हिन्दू समाज अपनी सामाजिक कुरीतियों को दूर कर, सामाजिक पवित्रता के सहारे अपना संगठन कर ले तो संसार की सभी जातियां हिन्दू धर्म को सादर प्रणाम करें।

अतएव संगठन का मेरा यह बिगुल हिन्दुओं की सोई हुई आत्मा को चैतन्य करेगा। छत्रपति शिवा जी महाराज ने जो भगीरथ प्रयत्न हिन्दू संगठन के लिए किया था, गुरु गोविन्दसिंह जी ने जिस हिन्दू संगठन का नक़शा तय्यार किया था, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने जिस संगठन का दिव्य स्वप्न देखा था और लोकमान्य तिलक जी ने जिसे राष्ट्र-धर्म से दीक्षित किया था, उस हिन्दू संगठन के पवित्र आदर्श को पूरा करने के लिए यह मेरा बिगुल है। आज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस राष्ट्र-धर्म के युग में हिन्दू स्त्री और पुरुषों को रणक्षेत्र में जूझने का समय आ गया है ; आज निर्भय होकर भगवद्गीता के उपदेशानुसार मौत का मुक़ाबिला करने का समय आगया है। इस बिगुल के राष्ट्रीय नाद को सुनकर सब हिन्दुओं को क्षात्र-धर्म की दीक्षा लेनी चाहिए और अपनी सभ्यता के आदर्शों का सुन्दर चित्र संसार को दिखलाना चाहिए। पृथ्वी का भोग सदा वीर और बलवान किया करते हैं ; निर्बलों के लिए संसार में कोई स्थान नहीं। इस बिगुल की आवाज़ को सुनकर अपने प्राचीन ऋषि मुनियों की कीर्ति का स्मरण कर हिन्दू संगठन में लग जाओ; इस बिगुल की ध्वनि को सुनकर शुद्धी का काम ज़ोर शोर से शुरू कर दो। इस्लाम की धर्मान्धता को दूर करने के बराबर कोई पुण्य कार्य नहीं; अविद्या अन्धकार में डूबे हुए सात करोड़ मुसलमानों को दीवाने मौलवी और मुल्लाओं के जाल से छुड़ाओ। ये बेचारे सात करोड़ हिन्दुस्तानी आज मज़हबी गुलामी में बुरी तरह जकड़े हुए हैं ; इन्हें कुरान के इलहाम और अरब के पैग़म्बर के अन्ध विश्वाससे मुक्त करो। मेरा बुद्धिवाद (Rationalism) का बिगुल है। यह धनलोलुप, स्वार्थी, झूठी व्यवस्था देने वाले पंडितों के जाल से निकलने का बिगुल है; यह बिधवाओं और अबोध बालक बालिकाओंके सतानेवाले गुण्डों को दंड देने का बिगुल है। हिन्दू संगठन का यह मेरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बिगुल भारतवर्ष के गौरव, उसकी सभ्यता और उसके साहित्य पर कुर्बान होनेवाले पांच करोड़ नवयुवकों को आह्वन करता है और उन्हें कर्मक्षेत्र में बुलाता है। अपने प्राणों को हथेली पर रखकर हिन्दू संगठन के कर्मक्षेत्र में आ जाओ; हिन्दू समाज में क्रान्ति कर छूत छात की दीवारें को तोड़ दो और हिन्दू जाति को गीता के दूसरे अध्याय का अमृत पान करा दो। यह बिगुल तेईस करोड़ हिन्दुओं को संगठित करने के लिये है ; यह बिगुल राष्ट्रधर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिये है ; यह बिगुल अछूतों का उद्धार करने के लिए है ; यह बिगुल स्वराज्य की लड़ाई लड़ने वाले निर्भय हिन्दू नवयुवकों का संघ स्थापित करने के लिए है।

इसलिये आओ, जननी जन्मभूमि को प्रणाम कर हिन्दू संगठन की पुनीत प्रगति को सफल बनावें और अपना सर्वस्व होमकर हिन्दू समाज का कूड़ा कचरा भस्म कर दें। इल्हाम के झूठे ढकोसले का राज्य भारतीय जनता के दिलों से हटा भारत माता को उनके हृदय-मन्दिरों में स्थापित करें। हिन्दू संगठन के मेरे बिगुल की आवाज़ को भारतवर्ष के कोने कोने में गुंजा दो। भारतवर्ष की स्वाधीनता का सीधा मार्ग हिन्दू संगठन ही है।

* ओइम् शम *

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नम्र निवेदन

'मेरी जर्मन-यात्रा' को मेरे प्रेमियों ने खूब पसन्द किया है। छः महीने के अन्दर ही उसकी चौदह सौ प्रतियां बिना किसी विज्ञापन के दूर दूर पहुंच गई हैं इसके लिये मैं अपने प्रेमियों का कृतज्ञ हूं। मेरा विचार 'जर्मन यात्रा' के बाद 'संजीवनी-बूटी' के दूसरे भाग को निकालने का था, परन्तु हिन्दू संगठन के निर्मल विचारों के प्रचार की परमावश्यकता देखकर मैंने 'संगठन का बिगुल' पहिले निकालने का निश्चय किया। ईश्वर की कृपा से मैं इस 'बिगुल' को अपने प्रेमी पाठकों के सन्मुख रखता हूं और आशा करता हूं कि भारतवर्ष के कोने काने में इस बिगुल की ध्वनि गूंजेगी, और इसकी हज़ारों कापिएँ, हिन्दू संगठन की पुनीत प्रगति का प्रचार करेंगी।

'अमरीका भ्रमण' का दूसरा भाग भी मैंने लिख डाला है। हो सका तो कांग्रेस के समय वह भी पाठकों के हाथ में पहुंच जायगा। मैं यत्न कर रहा हूं कि, 'संजीवनी-बूटी' के दूसरे भाग को भी मैं तब तक निकाल दूंगा। यदि मुझे प्रचारकार्य में अधिक न लगजाना पड़ा तो मैं अवश्य ही 'बूटी' के दूसरे भाग को प्रकाशित करा दूंगा। आगे जो हरि इच्छा !
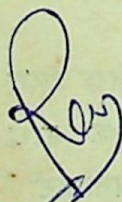
अलमोड़ा,
जौलाई १९२५

विनीत—
सत्यदेव परिव्राजक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरी जर्मन यात्रा

यह पुस्तक बर्लिन-प्रवासी देशभक्त भारतीयों की रोचक कथा सुनाती है; जर्मनी के क्रान्तिकारी सिक्के 'मार्क' की मनोरंजक बातें बताती है; मनमोहक रंगीले पेरिस के नज़ारे दिखाती है; जगद्विख्यात रोम नगर की सैर कराती है; लाला हरदयाल जी के हृदयोद्गार सुनाती है; बर्लिन के सुन्दर भव्य दृश्य, जर्मनों की परम प्यारी राहिन नदी की नैसर्गिक छटा, स्टाक होलम (स्वीडन) और वीएना (आस्ट्रिया) के प्राकृतिक सौन्दर्य का जीवित चित्र यदि देखना हो तो, एक रुपया खर्च कर हज़ारों रुपयों का आनन्द लाभ कीजिए।

मिलने का पता—

मैनेजर सत्य ग्रंथमाला, आफिस,

अलमोड़ा।

9381

पं० आचार्य प्रियव्रत वेद वाच स्पति स्मृति संग्रह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA